आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 02 ★ मूल्य : 10 रु.
10 फरवरी, 2011 ★ माघ, 2067

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी

अध्यात्म-चेतना वर्ष

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

धोवन पानी आरोग्य के लिये हितकर है।

भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ

महकते
सपनोंके लिये
खास
अपनोंके लिये

✦ सर्टिफाईड डायमंड ज्वेलरी और राशीरत्न

✦ फॅन्सी शुद्ध सोने के अलंकार
✦ शुद्ध चांदी के बरतन

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

आकाशवाणी चौक, औरंगाबाद 0240-2244520
सुभाष चौक, जलगाँव 0257-2223903
उंटेवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक 0253-2315644

Visit us at : rcbafnajewellers.com

जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

ग्राहक सेवेची पंचसुत्री १। प्रामाणिकता २। वाजिबता ३। विविधता ४। हजर स्टॉक ५। सदाचार

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail: jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2011-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

एयं अकाममरणं,
बालाणं तु पवेइयं।
इत्तो सकाममरणं,
पंडियाणं सुणेह मे।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.17

अकाममरण यह बालजनों का,
था वीरप्रभु ने बतलाया।
अब मुझ से सुनो सकाममरण,
ज्ञानी ने जिसको अपनाया।

फरवरी, 2011
वीर निर्वाण संवत्, 2537
माघ, 2067

वर्ष 68 अंक 2

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 5000 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 11000/-
संरक्षक सदस्यता : 5000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	5
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	6
प्रवचन-	स्वतन्त्र बनें, स्वच्छन्द नहीं	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	7
	क्रियोद्धार की महत्ता	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	12
अध्यात्म -	आत्मविशुद्धि का साधन : भावनायोग	-श्री दुलीचन्द जैन 'साहित्यरत्न'	17
साधना -	एकलविहार कब?	-श्रीमती रीना बैद	22
साक्षात्कार -	कत्लखानों पर अंकुश और नैतिक शिक्षा पर बल	-डॉ. दिलीप धींग	25
अंग्रेजी-स्तम्भ-	HAPPINESS IS WITHIN	-*Sh. Ranjit Singh Kumat*	28
कविता/गीत-	संत की तलाश	-सुश्री नैना गोलेच्छा	11
	श्री हस्ती गुरु वरदायी	-डॉ. (श्रीमती) मीनाक्षी डागा	24
प्रेरक-प्रसंग -	तिनके का महाभारत	-श्री नवरतन डागा	30
संवाद -	संवाद (29)	-संकलित	31
संकलन -	आजीवन शीलव्रत सूची		34
	वर्षीतप पारणक सूची		40
समाचार विविधा-	विचरण-विहार एवं विहार दिशाएं		42
	गुणी-अभिनन्दन एवं समापन-समारोह		43
	स्वाध्याय दिवस एवं स्वाध्यायी अधिवेशन		50
	आचार्य हस्ती जन्म-दिवस पर साधना-आराधना		54
	12 मार्च को दो दीक्षाएं		59
	अक्षयतृतीया की स्वीकृति जोधपुर संघ को		60
	भोपालगढ में दीक्षा सम्पन्न		60
	उपाध्यायप्रवर के 77वें जन्म-दिवस पर गुणानुवाद		67
	पीपाड़ में स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर		72
	जोधपुर में 18 दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न		74
	पाली में राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी		76
	स्वाध्याय प्रतियोगिता का परिणाम		81
	संक्षिप्त समाचार		90
	बधाई/चुनाव		97
	श्रद्धाञ्जलि		100
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		113

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

से किं तं इंदियपडिसंलीणया?

इंदियपडिसंलीणया पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा-सोइंदियविसयपयारणिरोहो वा, सोतिंदिय-विसयप्पत्तेसु वा अत्थेसु राग-दोसविणिग्गहो; चक्खिंदियविसय0, एवं जाव फासिंदियविसय-पयारणिरोहो वा, फासिंदियविसयप्पत्तेसु वा अत्थेसु राग-दोसविणिग्गहो। से त्तं इंदियपडिसंलीणया।

अर्थः- भगवन्! इन्द्रियप्रतिसंलीनता कितने प्रकार की है?

गौतम! इन्द्रियप्रतिसंलीनता पाँच प्रकार की कही है, यथा- (1) श्रोत्रेन्द्रिय-विषय-प्रचारनिरोध अथवा श्रोत्रेन्द्रियविषयप्राप्त अर्थों में रागद्वेषविनिग्रह, (2) चक्षुरिन्द्रिय-विषयप्रचारनिरोध अथवा चक्षुरिन्द्रियविषयप्राप्त अर्थों में रागद्वेषविनिग्रह, इसी प्रकार यावत् स्पर्शनेन्द्रियविषयप्रचारनिरोध अथवा स्पर्शनेन्द्रियविषयप्राप्त अर्थों में रागद्वेषविनिग्रह।

से किं तं कसायपडिसंलीणया?

कसायपडिसंलीणया चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा-कोहोदयनिरोहो वा, उदयप्पत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरणं; एवं जाव लोभोदयनिरोहो वा उदयपत्तस्स वा लोभस्स विफलीकरणं। से त्तं कसायपडिसंलीणया।

अर्थः- भगवन्! कषायप्रतिसंलीनता कितने प्रकार की है?

गौतम! कषायप्रतिसंलीनता चार प्रकार की कही है, यथा- (1) क्रोधोदय- निरोध अथवा उदयप्राप्त क्रोध का विफलीकरण, यावत् (4) लोभोदयनिरोध अथवा उदयप्राप्त लोभ का विफलीकरण।

-व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र, पच्चीसवां शतक, उद्देशक 7, सूत्र- 212-213

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

स्वाध्याय

- जीवन-निर्माण एवं आत्मोद्धार के लिए, समाज-निर्माण और राष्ट्र-निर्माण के लिए स्वाध्याय परमावश्यक है। वस्तुतः स्वाध्याय भौतिक एवं आध्यात्मिक दुःखों को समूल नष्ट करने का एक अमोघ अस्त्र है। अतः सब भाई-बहनों और स्वाध्यायियों को प्रतिदिन नियमित रूप से स्वाध्याय करना चाहिए।

  चित्त बड़ा चंचल है। 'चित्त चितौड़े, मन मालवे, हियो हाड़ोती जाय' इस लोकोक्ति के अनुसार चित्त की चंचलता घट-घट के अनुभव की बात है। यदि चित्त की चंचलता का निरोध करके साधना करनी है तो शास्त्रों का अध्ययन करें, स्वाध्याय करें।

- स्वाध्याय के बिना त्यागी-विरागी उच्चकोटि के साधु और श्रावक नहीं मिल सकते। स्वाध्याय से ही चतुर्विध संघ में ज्योति आ सकती है।

- स्वाध्याय करने से एक बड़ा फल तो यह होगा कि उससे बुद्धि निर्मल हो जाएगी। घर-घर में जो लड़ाई-झगड़े, कलह-क्लेश और वैर-विरोध चल रहे हैं, उनकी दवा स्वाध्याय से ही मिलने वाली है। बुद्धि निर्मल होने से पाप नष्ट होंगे, पुण्य का बंध होगा, दया-कोमलता का उद्गम होगा एवं निर्दोष दान देने की भावना जगेगी।

- स्वाध्याय केवल दूसरों के ही कल्याण हेतु, दूसरों के निर्माण हेतु या दूसरों को ही सुख प्रदान करने हेतु नहीं है, अपितु पहले वह स्व-अनुशासन, स्व-कल्याण और स्व-निर्माण में गति लाकर परहित में, समाजहित में, विश्वहित में साधन बनने वाली एक आंतरिक प्रबल शक्ति है। स्वाध्याय 'स्व' में निहित अमोघ शक्ति है।

- स्वाध्याय से ही आप आत्म-निर्माण और समाज-निर्माण के साथ जिनशासन को समुन्नत करने में समर्थ होंगे।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

स्वतन्त्र बनें, स्वच्छन्द नहीं

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा दिनाँक 15 अगस्त, 2011 को सामायिक स्वाध्याय भवन, सुराना मार्केट, पाली-मारवाड़ (राज.) में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है।-सम्पादक

सकल कर्मों की पराधीनता हटाकर आत्मज्ञान प्रकट करने वाले सिद्ध भगवन्त, अटकाने-भटकाने वाले घाती कर्मों का क्षयकर अनन्त ज्ञान-अनन्त दर्शन मिलाने वाले अरिहन्त भगवन्त और इन्हीं कर्मों की पराधीनता हटाने के लिए महाव्रत-समिति-गुप्ति की आराधना करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी के अनुसार भीतर की पराधीनता हटाने के लिए आस्रव त्याग के साथ विषय-कषायों को घटाने का सन्देश और संवर तथा समता का प्रतिदिन उपदेश दिया जा रहा है।

आज भारत में स्वाधीनता दिवस मनाया जा रहा है। यह बाहरी स्वतन्त्रता का दिवस है। स्वतंत्रता अर्थात् सिद्धान्त, नियम, प्रतिज्ञा, अभिव्यक्ति, लौकिक धर्म की आराधना की स्वाधीनता। यह बाहर की स्वतंत्रता है। स्वतन्त्रता एवं स्वछन्दता में भेद है। अपनी लज्जा, इज्जत, प्रतिष्ठा इन सबको धूल में मिलाकर स्वच्छन्द आचरण करना अपने लिए भी दुःखदायी है एवं दूसरों के लिए भी कष्टप्रद है। आज चाहे पहनने की बात कही जाय, खाने की बात कही जाय जीवन के हर व्यवहार की बात कही जाय हम उसमें स्वच्छन्द बनते जा रहे हैं। आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) के सूत्र सामने रखूँ- जहाँ बाहर में दुरुपयोग नहीं था, भीतर में भी शांति थी, ऐसे सारे काम आज हम पुरुषार्थहीन होकर छोड़ रहे हैं। पहले अपना पेट भरने के लिए अनाज भी घर-घर चक्कियों के द्वारा पीसा जाता था। चक्की चलाने की कसरत से करोड़पति-लखपति सेठानियों को कोई रोग नहीं था। शरीर का व्यायाम हो जाता, कसरत की कमी नहीं रहती और शरीर की हलचल से शरीर स्वस्थ रहता ऐसा प्रतिदिन होता तो बीमारी की नौबत नहीं आती थी। आज क्या स्थिति है?

आज चक्की नहीं है, सेठानी जी भारी हो गई। सेठानी जी स्वयं उठ नहीं सकती। अब सेठानी जी को उठाने के लिए दासी चाहिये, नौकरानी चाहिये। मैं रिंया के सेठ की बात कहूँ वे नगर सेठ थे, दरबार से सम्मानित थे, फिर भी कुएँ से पानी खींचकर घड़ा लेकर आते।

आज सहूलियतें बढ़ी हैं। जितनी-जितनी सुविधाएँ बढ़ीं उतने-उतने कर्म बन्धन बढ़ रहे हैं, कह दूँ तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। आप स्वयं देखें कि साधनों का आज सदुपयोग हो रहा है या दुरुपयोग? मैंने कुछ दिनों पूर्व सुनी-सुनाई नहीं, किन्तु आँखों से देखी बात कही- दादी माँ घड़ा भरकर स्वयं पानी लाती और पानी का उपयोग कैसे करती? रोज नहाना नहीं, पन्द्रह दिन-बीस दिन में कभी नहाना भी होता तो लोटे भर पानी में परात में बैठकर स्नान करती और परात में इकट्ठे हुए पानी से पहना हुआ घाघरा निचोड़कर शेष रहे पानी से घर का पोंचा लगा लेती।

आपने शायद कहावत सुनी होगी- घी सस्ता, पानी महंगा। घी के बिना जीवन चल सकता है, लेकिन पानी के बिना जीवन नहीं चलता। आपने शास्त्रों के उदाहरण सुने हैं- राजरानियों ने वर्द्धमान आयंबिल तप किये। कैसे? एक आयंबिल पारणे में उपवास, दो आयंबिल पारणे में उपवास। उन राजरानियों ने तपाराधन करते पन्द्रह साल- सत्रह साल घी नहीं खाया, उनका जीवन कैसे चला? आज आप तप-त्याग करते कितना हैं, कहते और दिखाते कितना हैं? आप धर्मी कहलाते हैं, मैं ताज्जुब करता हूँ जब सुनता हूँ कि धर्मी कहलाने वाले ने प्राप्त साधन का सदुपयोग करने के बजाय दुरुपयोग किया, रात को फ्लश का नल खुला छोड़ दिया, टूंटी से टंकी का सारा पानी व्यर्थ में बह गया। क्या है यह? क्या इसे स्वतंत्रता कहना? आपको अच्छी सुविधा मिले, संघ इसकी व्यवस्था करता है, लेकिन व्यवस्था का दुरुपयोग करते हुए भी यदि आप विचार नहीं करें तो सामने वालों में स्वधर्मी वात्सल्य सेवा की श्रद्धा कैसे रहेगी? आज लोग खाते कम, जूठन ज्यादा छोड़ते हैं। क्या यह स्वतंत्रता है?

साधनों का दुरुपयोग धर्म नहीं, पाप है, पाप बंध का कारण है। ऐसा आचरण जो भी करता है उससे समाज में स्वधर्मी भाई के प्रति श्रद्धा नहीं बढ़ती। आज कई हैं जो किसी के यहाँ मेहमान बनकर जाते हैं। उन्हें जितनी सुविधा दी

जा रही है उतना दुरुपयोग किया जा रहा है। पहले जब घरों में नल नहीं थे तब पानी का कैसे उपयोग किया जाता था, आज नल हैं तो उसका कैसा उपयोग हो रहा है, मैं नहीं कहूँ, आप स्वयं कलेजे पर हाथ रखकर जानिए।

आज लोग गाँव छोड़कर शहरों में आते हैं। वे शहरों में किसलिए रहना चाहते हैं? क्यों आज गाँव खाली हो रहे हैं? गाँव में रहने वाले धन सम्पन्न हैं, करोड़पति हैं तो भी उनको कोई लड़की देने को तैयार नहीं। लड़की गाँव से लेकर आ जायेंगे, पर गाँव में लड़की देने की किसी की तैयारी नहीं है। महाराष्ट्र में विचरण करते सुना- महाराज! गाँव में सैकड़ों बीघा जमीन है, लड़का पढ़ा-लिखा है, पर लड़का गाँव में रहता है, शादी-सम्बन्ध के लिए कोई तैयार नहीं हुआ तो हमें गाँव छोड़कर शहर में बसना पड़ा। मारवाड़ के गाँव क्यों खाली हुए हैं, आप जानते हैं।

आप गाँवों के बजाय शहरों में रहना चाहते हैं, क्योंकि शहरों में सुविधाएँ हैं, शहर में जितनी-जितनी सुविधा है, पाप-कर्म का बंध भी गाँवों की अपेक्षा अधिक होता है। शास्त्र के शब्दों का अर्थ कहूँ तो जहाँ छूट है वहाँ लूट है। आप व्रत-नियमों में भी जितनी-जितनी छूट रखते हैं, आत्मगुणों की उतनी-उतनी हानि ही है। शरीर का परिश्रम छूट गया तो शरीर में वह स्फूर्ति नहीं रही और काम भी वैसा नहीं हो पाता।

मैं स्वतंत्रता की बात कह रहा हूँ। स्वतंत्रता क्या? स्वतंत्र व्यक्ति का सम्मान होता है, स्वच्छन्द व्यक्ति अपमान झेलता है। घर में बहू घर के नियमों के अनुसार सबको अपनी सेवा देती है, सबके कार्यों का ध्यान रखती है, सबके साथ स्नेह रखकर कर्त्तव्यपरायणता का खयाल करती है तो शायद बड़े-बूढ़े बैठे रह जाते हैं और घर की चाबियाँ बहू को संभला दी जाती हैं। बहू का सम्मान क्यों बढ़ा? अगर वह अपनी सहूलियत का खयाल रखती तो घर-परिवार में सम्मान नहीं बढ़ता। कुछ बहूएँ होती हैं जो काम नहीं करती, काम से जी चुराती हैं और अपनी सुख-सुविधाओं के अलावा किसी और का उसे कोई ध्यान नहीं रहता, वैसी बहू के लिए सासू यही कहेगी कि बहूजी महलां में पौढ़िया है। कुछ बहूएँ करोड़पति-अरबपति घर की हैं, पर रोटी बनाना नहीं आता, वे घर के सदस्यों का क्या खयाल रखेंगी?

आप जानते हैं- काम प्यारा है, चाम प्यारा नहीं। आप चाहे जितनी गोरी हैं, सुकुमाल हैं उसका तब तक कोई अर्थ नहीं, जब तक कि बहू घर के सदस्यों का खयाल नहीं रखती।

हर जीव जीना चाहता है, सुख और शांति से रहना चाहता है। साता सबको प्रिय है। आप कहते भी हैं 'अप्पा सो परमप्पा'। 'आयतुले पयासु।' जो अपने समान दूसरों को समझते हैं तो वे किसी जीव को कष्ट पहुँचे ऐसा काम नहीं करते। जैसे मुझे सुख प्यारा है, वैसे ही दूसरे जीव भी सुख चाहते हैं। आपको जैसे दुःख इष्ट नहीं वैसे कोई भी जीव दुःखी होना नहीं चाहता। आपको झूठ पसन्द नहीं तो दूसरों को झूठ कैसे अच्छा लगेगा ? आप चाहते हैं आपकी वस्तु कोई न चुराये, क्योंकि चोरी आपको पसन्द नहीं तो यही बात प्रत्येक जीव के साथ लागू होती है। आपका इस तरह चिन्तन चलेगा तो आप स्वतंत्रता के रास्ते पर आगे बढ़ सकेंगे। यह धर्म का ही नहीं, राज्य का, समाज का और घर का भी यही नियम है। भगवान महावीर के सिद्धान्त हर जीव के लिए उपयोगी हैं। आप दूसरों के प्रति जितनी दया करेंगे उतना दूसरों का विश्वास प्राप्त करेंगे। आप ये सारी बातें सुनते आ रहे हैं, समझते भी हैं, फिर भी आपके बच्चे-बच्चियाँ जीन्स पहनते हैं। जीन्स पसीना नहीं सोखती, वह चमड़ी को कमजोर बनाती है, क्योंकि उसमें हवा पास नहीं होती। पहनने, खाने में ही नहीं आज तो सोच-विचार में भी बदलाव आया है। आपके बच्चों को संत-ऋषि-मुनि प्यारे लगें या नहीं, एक्टर प्यारे लगते हैं। आज आपके कपड़े कौन धोता है? अनाज कहाँ पीसा जाता है? कई घरों में तो खाना बनाने वाली बहन, बर्तन-पौंचे वाली बहिन रखी जाती है। मैं तो सुनता हूँ कि अशुचि साफ करने वाली भी मशीन आ गई है।

आप स्वतंत्र बनना चाहते हैं तो अहिंसा, सत्य शील का पालन करें, ममता-मूर्च्छा का त्याग करें। ओसवाल समाज के लोग क्या खाते हैं उसका पता नहीं। कई हैं जो रोटी भले ही एक खायेंगे, गुटखे की पुड़ियाँ दस खाते हैं। पेट यदि गुटखे से भरता है तो फिर रोटी खाते ही क्यों हो? आप एक बार गुटखा छोड़ने का नियम लेकर देखें तो सही, आपका काम चलता है या नहीं? स्वामीजी श्री चौथमल जी महाराज सत्य बोलने की प्रेरणा करते तब भी कुछ

लोग नियम लेने से कतराते। जो नियम लेने से कतराते उनको स्वामी जी कहते- ठीक है आपको सांच नहीं बोलना, मत बोलो, इतना नियम कर लो कि हम सत्य नहीं बोलेंगे तो आपका जीवन कितने दिन चलता है? किसी को पाली से जोधपुर जाना हो, जोधपुर का टिकट लेने के बजाय सांच नहीं बोलने का नियम है इसलिये वह दिल्ली का टिकट ले तो क्या वह जोधपुर पहुँच सकेगा? आपको भूख लगी है, खाने का पूछा भी जा रहा है, पर आपको सत्य नहीं बोलना इसलिये कहा जाता है कि मेरा पेट भरा है, मुझे नहीं खाना तो कितने दिन काम चलेगा? आप पूरे एक दिन झूठ बोलकर तो देखो।

जीवन स्वतंत्रता से चलेगा, स्वच्छन्दता से नहीं। आप-सब सुज्ञ हैं इसलिये ज्यादा कहने की जरूरत नहीं। आप बाहर की पराधीनता जितनी कम कर सकते हैं, कम करें। शरीर को जितना पुरुषार्थ में लगा सकते हैं, शरीर का श्रम करें। बंधन काटने के लिए जितने आस्रवद्वार को छोड़ सकते हैं उतना छोड़ें और संवर में लगें। आप आत्मा के तंत्र के साथ चलकर परमात्म पद प्राप्त करने की ओर बढ़ सकें तो आपका सुनना सार्थक हो सकेगा। ■

संत की तलाश

मैं सरल थी, बुरी संगत ने मुझे दम्भी बनाया
मैं दयालु थी, धन ने मुझे लोभी बनाया
मैं पवित्र थी, व्यसनों ने मुझे अपवित्र बनाया
मैं ईमानदार थी, राजनेताओं ने मुझे स्वार्थी बनाया
मैं परिश्रमी थी, मशीनों ने मुझे आलसी बनाया
मैं संतोषी थी, विज्ञापनों की भरमार ने मुझे अतृप्त बनाया
मैं सभ्य थी, टी.वी. सीरियलों ने मुझे असभ्य बनाया
मेरी धर्म में आस्था थी, ज्योतिषियों और तांत्रिकों ने मुझे अन्धविश्वासी बनाया
मैं अबोध निर्विकार शिशु थी, आधुनिकता की चकाचौंध ने मुझे विकारी वयस्क बनाया

मैं ऐसी संत की तलाश में हूँ, जो मुझे कुमार्ग से सन्मार्ग की ओर ले जाये, मेरे भीतर समाहित दोषों को मिटा मुझमें उदात्त गुणों का संचार करे।

-नैना गोलेच्छा, बालोतरा

प्रवचन

क्रियोद्धार की महत्ता

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा दिनाङ्क 28 जून, 2010 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है।-**सम्पादक**

सुने हुए में आस्था, जाने हुए का आदर और मिले हुए का सदुपयोग कर मिलने-मिलाने के चक्र से मुक्त होने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और वीतराग भगवन्तों द्वारा प्ररूपित इस वीतराग वाणी के अवलम्बन से उसी सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र के मार्ग पर चरण बढ़ाते हुए मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करने वाले आचार्य भगवन्तों के चरणों में वन्दन के पश्चात्-

बन्धुओं!

क्रिया स्वयं उद्धार करने वाली है, परन्तु क्रिया का भी जब उद्धार किया जाता है तब उसे क्रिया+उद्धार क्रियोद्धार शब्द के द्वारा पुकारा जाता है। तपागच्छ की पट्टावली में वर्णन आता है कि इस पंचम काल में तेबीस बार क्रियोद्धार होने वाले हैं। गिरावट निरन्तर बढ़ती जाती है तब उसे रोकने का सद्प्रयास होता है। भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् दो हजार वर्षों तक भस्मग्रह के प्रभाव का उल्लेख कल्पसूत्र, इतिहास आदि ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। उसके पश्चात् लोंकाशाह की क्रान्ति का बिगुल बजता है।

क्रान्ति एक जगह नहीं आती है। धर्मक्रान्ति के समय सारे देश के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक परिदृश्य में परिवर्तन होता है, गिरावट में रुकावट का दौर चलता है। कुछ उत्थान के चरण उठते हैं। अवसर्पिणी काल में निरन्तर नीचे की ओर प्रवाह रहता है, गिरावट होती है पर उस गिरावट में थोड़े समय में रोकथाम भी होती है। वह युग था जब भक्ति आन्दोलन में, गुरुनानक, तुलसी, कबीर-रहीम आदि भक्त कवियों ने समाज में आई गिरावट रोकने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। जब देश में इस्लाम की आंधी आई, कट्टरवाद के

उन्माद ने 'त्राहि माम्-त्राहि माम्' की ध्वनि गुंजा दी, तब अकबर के दरबार में उदारवादी नीतियों का पालन किया जाने लगा। पर्युषण आदि धार्मिक पर्वों, विशिष्ट तिथियों पर अगता पालन के लिए शाही फरमान जारी हुए। उसी युग में लोंकाशाह की क्रांति का बिगुल बजा। जैन धर्म के मौलिक इतिहास भाग चार में वृत्तान्त देखा जा सकता है। वहाँ भस्मक ग्रह का प्रभाव 2000 वर्ष तक रहने का उल्लेख है। विक्रम 1531 में जब ईस्वी 1474 चल रहा था, वीर निर्वाण के 2000 वर्ष पूर्ण हुए। 'ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः' ज्ञान और क्रिया से मोक्ष होता है, पर 'नादंसिणस्स नाणं, नाणेण विणा न होंति चरणगुणा' सम्यक् दर्शन के अभाव में ज्ञान नहीं एवं ज्ञान के अभाव में कठोर क्रिया भी सम्यक् क्रिया नहीं, फिर जहाँ क्रिया से स्पष्टतः हिंसादि आस्रव का बोलबाला हो, उस प्रचलित सदोष क्रिया को ज्ञान के प्रकाश में दोषमुक्त बना सम्यक् क्रिया पालन की तैयारी ही तो क्रियोद्धार है। वही सम्यक् क्रिया मुक्तिदायिनी हो सकती है। लोंकाशाह से क्रांति की शुरुआत हुई, पर 8 पाट बाद, लगभग 100-125 साल में वह पुनः शिथिलता में परिणत हो गई। तब 17वीं विक्रम शती के अन्त से पुनः 5 क्रियोद्धार हुए। पूज्य जीवराज जी महाराज, पूज्य लवजीऋषि जी, पूज्य धर्मसिंह जी, पूज्य धर्मदास जी और पूज्य हरजी महाराज ने पुनः सत्पथ पर प्रयाण का बीड़ा उठाया। आज की पूरी स्थानकवासी परम्परा इन्हीं के क्रियोद्धार की देन है। पहला क्रियोद्धार लोंकाशाह का दूसरा इन पाँच क्रियोद्धारकों का।

स्थानकवासी परम्परा प्रारम्भ से पाँच धाराओं में रही। भेद-प्रभेद बढने पर बाहर की एकरूपता की संभावना नज़र नहीं आती। हम अपने गुरु भगवन्तों द्वारा दिखाये गये मार्ग पर पूरे विश्वास के साथ, दृढ़ आस्था के साथ साधना-आराधना में गतिमान रहें। हमारा आत्मिक भाव, हमारी आराधना तभी सुरक्षित है जब हम गुरु भगवन्तों के द्वारा दिखाये मार्ग पर चलते हुए संवर-निर्जरा की करणी में गतिमान रहें। हम आगे बढ़ते हुए विकास कर सकते हैं। अनुस्रोत में बहना बहुत सरल है, प्रतिस्रोत में लगना है-

अनुस्रोत की लहर में, दिन-रात बह रहा हूँ,
दे दिव्य दृष्टि भगवन्! प्रतिस्रोत में लगा दो।
वरदान मांगता हूँ, आगे मुझे बढ़ा दो॥

देखा-देखी गिरावट आना बहुत सरल है। यह जीव इन्द्रियों के प्रवाह

में अनादि काल से प्रवहित होता आ रहा है। इन्द्रियाँ मन को खींचकर बाहर भटकाव की ओर ले जाती हैं। उस समय विवेक के प्रकाश में श्रुत रस्सी की लगाम से मन रूपी घोड़े को गिरावट के इसी दौर में पूज्य श्री कुशलचन्द जी महाराज ने वि.सं. 1840 की ज्येष्ठ कृष्णा छट्ठ को अपने गुरु-भाई आचार्य श्री जयमल जी महाराज के चरणों में संथारा करके अपने जीवन को सफल किया। पूज्य श्री कुशलचन्द्र जी महाराज ने पूज्य श्री गुमानचन्द्र जी महाराज को हिदायत दी थी कि तुम पूज्य श्री जयमल जी महाराज की आज्ञा में चलते रहना। वि.सं. 1847 का पूज्य श्री गुमानचन्द्र जी महाराज का चौमासा पूज्य श्री जयमल जी महाराज की सेवा में हुआ। 1840 में लघु गुरु-भ्राता कुशलो जी के संथारे के पश्चात् चौमासा पूर्ण कर बीकानेर फरसने गये। वि.सं. 1841 से लेकर 1853 वैशाख चतुर्दशी तक नागौर स्थिरवास रहा। आचार्य श्री जयमल जी महाराज का भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी संवत् 1765 का जन्म है, 1853 में वे अट्ठासी साल की उम्र के थे। उस महापुरुष ने 49 साल तक आडा आसन नहीं किया। पूज्य श्री कुशलचंद जी महाराज ने छत्तीस साल तक और पूज्य आचार्य श्री जयमल जी महाराज ने 49 साल तक आडा आसन नहीं किया। हम हैं तो बहुत छोटी उम्र के, कभी आधा घंटे तक नींद नहीं आये तो माथा भारी हो जाता है, पर उन महापुरुषों ने साता की आसक्ति से अलग रहकर धर्म की जाहोजलाली की। साता की लोलुपता असाता के भय को पैदा करती है। उन्हीं दृढ़ प्रतिज्ञ जयमल जी की सेवा में गुमानचन्द्र जी का 1847 का चौमासा था, वहाँ बालक रत्नचन्द्र, जो कुड़ग्राम से नागौर में गोद आया था, वैरागी बन गया। जन्म 1834 का है, दीक्षा 1848 की। जन्म और दीक्षा की तिथि वैशाख शुक्ला पंचमी है। चौदह साल की उम्र में दीक्षा हुई। पूज्य जयमल जी के स्वर्गगमन के अनन्तर तपस्वी श्री ताराचन्द्र जी महाराज देवलोक पधारे। उन्होंने आचार्य श्री गुमानचन्द्र जी महाराज को स्वप्न में जागृत किया कि आप जैसे समर्थ महापुरुष के रहते हुए मोक्ष-मार्ग में भटकन लग जाय यह कहाँ तक उचित है?

जाए सद्धाए निक्खंतो तमेव अणुपालिय।

जिस श्रद्धा से, उत्साह से साधना शुरु की जाती है क्या वह उसी रूप में चल रही है? कभी-कभी भावुक भक्त व्याख्यान सुनता है, व्याख्यान सुनते-सुनते उत्साह जगा और तुरन्त उसने नियम ले लिया। दो-चार महीने नियम

पाला, फिर संसार के मोह में नियम का ध्यान नहीं रहा और नियम पलता नहीं, कहकर नियम से हट गया। कमजोर मानस का व्यक्ति इधर-उधर की कोई न कोई गली खोज लेता है। घर को छोड़कर आने वाले संत आपसे जुड़े रहते हैं, आपके घरों से लाई हुई गोचरी करते हैं, संत सामाजिक व्यवहार से यों भी अछूते नहीं रह पाते। कई बार तो बचाव करना मुश्किल हो जाता है। सामान्य व्यक्ति भी कभी-कभी ऐसे प्रश्न करते हैं कि संत तक साधना से डिग जाते हैं।

पूज्य श्री ताराचन्द्र जी महाराज की प्रेरणा से आचार्य श्री गुमानचन्द्र जी महाराज ने पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज की मुख्य भूमिका के साथ क्रियोद्धार किया। पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज का संतों में आठवां नम्बर है। सात बड़े हैं छः छोटे संत हैं, लेकिन क्रियोद्धार में पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज की प्रमुख भूमिका रही। उनकी दृढ़ता गजब की थी, पूज्य आचार्य श्री गुमानचन्द्र जी महाराज कहते थे कि रत्न! हम तो तेरे नाम से जाने जाते हैं।

वि.सं. 1854 में बड़लू जिसे आज भोपालगढ़ कहते हैं वहाँ के बाग में 14 संतों ने 21 बोल की मर्यादा की। संत-जीवन में आने वाली शिथिलता को रोकने का प्रयास हुआ। रत्नसंघ में 1854 की आषाढ़ कृष्णा द्वितीया को क्रियोद्धार हुआ। वि.सं. 1907 में पूज्य श्री हुक्मीचन्द जी महाराज के सान्निध्य में पूज्य श्री शिवलाल जी महाराज ने क्रियोद्धार किया। उसके बाद पूज्य श्री ज्ञानचन्द जी महाराज जिनकी सम्प्रदाय ज्ञानगच्छ के नाम से चलती है, क्रियोद्धार किया गया। पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज के क्रियोद्धार के तिरेपन वर्ष बाद हुक्मगच्छ में बीकानेर में क्रियोद्धार हुआ।

साधक का लक्षण है-वैराग्य। साधक का ही क्या जैन का अनिवार्य लक्षण वैराग्य है। शम, संवेग निर्वेद क्या है? जिसमें संवेग नहीं तो उसमें मोक्ष की लालसा नहीं है। संवेग का गुण नहीं तो सम्यक्त्व नहीं, वह सम्यक्दृष्टि नहीं। संवेग नहीं वह भाव से जैन नहीं। हाँ द्रव्य से जैन भले ही हो।

वैराग्य जैनत्व के साथ जुड़ा अनिवार्य लक्षण है। विषयों से उदासीनता, संसार से अरुचि और मुक्ति पथ पर बढ़ने की भावना जैनत्व की पहचान है।

पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज की दीक्षा के बाद एक चौमासा मारवाड़

में, फिर तीन चौमासे मेवाड़ में हुए। पाली के चौमासे में माँ के द्वारा अधिकारियों को भेजकर वापस घर लाने का प्रयास चला, किन्तु पूज्य श्री के वैराग्यगर्भित व्याख्यान से जो उनको पकड़ने गये थे, वे भी उनसे प्रभावित होकर कुछ न कर सके।

वि.सं. 1858 की कार्तिक कृष्णा अष्टमी को पूज्य आचार्य श्री गुमानचन्द्र जी महाराज का मेड़ता में स्वर्गारोहण हुआ। पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज की उम्र उस समय चौबीस साल की थी। चाचा गुरु दुर्गादास जी विद्यमान थे, इसलिये चौबीस साल आचार्य पद नहीं लिया। आप भजन की कड़ियों में बोलते हैं–

चार बीस संवत्सर लाग्यो रखने को सन्मान।
रत्नचंदगणिपद, नहीं लीना पूज्य दुर्ग को मान।।

पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज ने चौबीस साल तक पद नहीं लिया। फिर वि.सं. 1882 से 1902 तक बीस साल उस महापुरुष ने आचार्य पद सुशोभित किया। अड़सठ साल की उम्र में वे स्वर्गस्थ हो गये। उस महापुरुष की तेजस्विता शासन को दीप्त करने वाली बनी। ज्ञान और क्रिया के संगम से उस महापुरुष ने अपनी साधना को यशस्वी किया।

आज पुनः वही वातावरण हमारे सामने उपस्थित है। भौतिकता की चकाचौंध बढ़ती जा रही है। त्यागी वर्ग भी पतन की ओर जाने को उन्मुख हो सकता है। पाँचवें आरे के अन्तिम दिन तक चलने वाला यह शासन एक साधु, एक साध्वी, एक श्रावक और एक श्राविका से शासन की तेजस्विता–वर्चस्विता में हम आगे बढ़ते रह सकें, इसके लिए हमें सावधान बने रहना है। पुद्गल की आसक्ति से हटकर त्याग–वैराग्य के संस्कार दृढ़ करने हैं।

'खंतो दंतो निरारम्भो' की चर्चा आपने श्री यशवंत मुनि जी से सुनी। शान्त–दान्त और निरारंभीपने को सुरक्षित रखते हुए साधना पथ पर बढ़ने के लिए प्रयास करेंगे तो वह न केवल हमारे लिए बल्कि सबके लिए सार्थक होगा। क्रिया से उद्धार के लिए क्रिया में आई शिथिलता का उद्धार आवश्यक होता है। 213 वर्ष से चली आ रही तेजस्वी परम्परा में हम क्रिया पालन में दृढ़ता रखें तो अपना उद्धार अवश्य होगा। ■

अध्यात्म

आत्मविशुद्धि का साधन : भावनायोग

श्री दुलीचन्द जैन 'साहित्यरत्न'

धर्म की साधना में भावना का सबसे अधिक महत्त्व है। कहा भी है-

जैसा सांचा दीजिए, वैसा ही आकार।
मानव वैसा ही बने, जैसा रहे विचार।।

दान, शील, तप, स्वाध्याय, ध्यान- इनका फल तभी मिलता है, जब व्यक्ति भाव से जुड़ा हुआ हो। हम सामायिक करते हैं और उस समय मन के भाव अन्यत्र हों तो सामायिक का लाभ नहीं मिलता। भावना को 'अनुप्रेक्षा' भी कहते हैं अर्थात् गहराई से बारीकी से किया हुआ चिन्तन।

भगवान् महावीर ने कहा है कि जिस व्यक्ति की अंतरात्मा भावना-योग से शुद्ध हो गई है, वह जल में नौका के समान है। जिस प्रकार नौका अथाह जल को पार कर जाती है, उसी प्रकार साधक, भावना-योग के आलम्बन से संसार-सागर को पार कर जाता है।

मन, वचन और कर्म- ये तीन प्रवृत्ति के स्रोत हैं। प्रवृत्ति के स्रोत को अशुभ से शुभ की ओर मोड़ती है- भावना। 'योग दर्शन' में चित्त को 'नदी की धार' से उपमित किया गया है-

'चित्तनदी नाम उभयतो वाहिनी।'

अर्थात् चित्त रूपी नदी दोनों ओर बहती है, शुभ में भी अशुभ में भी। यदि भावना का प्रवाह शुभ चित्त-वृत्तियों से प्रेरित रहा तो जीवन सुख-शान्ति से परिपूर्ण हो जाता है और यदि अशुभ चित्त-वृत्तियों से प्रेरित रहा तो जीवन दुःखपूर्ण हो जाता है।

इसीलिए जैन धर्म में भावनाओं को बहुत महत्त्व दिया गया। एक जैनाचार्य ने कहा-

जं जं समयं जीवो, आविसइ जेण जेण भावेण।
सो तम्मि तम्मि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं।।

-उपदेशमाला, 24

अर्थात् जिस-जिस समय जीव जैसे-जैसे भाव रखता है, वह उस समय वैसे-वैसे ही शुभ-अशुभ कर्मों का बंध करता है। गीता में भी सुविचार रखने को महत्त्व दिया गया-

विचारो हि मनुष्याणां, प्रतिमानः परन्तप।
विचारो यादृशो यस्य, मर्त्यो भवति तादृशः॥

अर्थात् हे अर्जुन! विचार ही मनुष्य के प्रतिनिधि हैं। जिस व्यक्ति के जैसे विचार होते हैं, वैसा ही उसका जीवन हो जाता है।

मन ही बंध एवं मोक्ष का कारण

कहा है-'मनः एव मनुष्याणां, कारणं बन्ध-मोक्षयोः।' अर्थात् मन ही मनुष्य के बंधन एवं मोक्ष का कारण है। रामायण में एक सुंदर प्रसंग आता है। श्री राम को वनवास हो गया था। एक दिन की घटना है कि सीता जी भोजनादि के बाद थक गई थी। वे एक पत्थर की शिला पर सो गई। उनकी साड़ी अस्त-व्यस्त हवा में उड़ रही थी। थोड़ी ही दूर पर श्री लक्ष्मण बाण हाथ में लिए पहरा दे रहे थे, क्योंकि हिंसक पशुओं का डर था। वृक्ष के ऊपर एक चकवा और एक चकवी- दो पक्षी बात कर रहे थे।

चकवी ने पूछा-''अभूतपूर्व यौवन एवं कान्ति से सम्पन्न, यह कैसा पुरुष है, जिसका मन चलायमान नहीं होता?''

चकवा बोला-

पिता यस्य शुचिर्भूतो, माता यस्य पतिव्रता।
उभयाभ्यां च सम्भूतो, तस्य नो चलते मनः॥

अर्थात् जिस के पिता का जीवन पवित्र होता है और माता पतिव्रता होती है, उन दोनों के संयोग से जो संतान जन्म लेती है, उसका मन चंचल नहीं होता।

भावना मन को संस्कारित करने का कार्य करती है। गीता में भी कहा है-

ध्यायतो विषयान् पुंसः, संगस्तेषूपजायते।
संगात्संजायते कामः, कामात्क्रोधोऽभिजायते॥
(गीता 2.62)

क्रोधात्भवति सम्मोहः, सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभंशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।
(गीता 2.63)

अर्थात् विषयों का चिंतन करने से उन विषयों में आसक्ति हो जाती है, आसक्ति से विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामना से क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध से अत्यंत मूढ़भाव उत्पन्न होता है, मूढ़भाव से स्मृति-विभ्रम हो जाता है, स्मृति-विभ्रम से ज्ञान-शक्ति विनष्ट हो जाती है और बुद्धि-विनाश से मनुष्य पतन के गर्त में गिर जाता है।

भावनाएँ दो प्रकार की कही गई हैं- असंक्लिष्ट अर्थात् शुभ भावना एवं संक्लिष्ट अर्थात् अशुभ भावना। जीवन को उन्नत बनाने के लिए शुभ भावना की आवश्यकता है। शुभ भावना से जीवन में आनंद एवं प्रसन्नता आ जाती है।

मन का सत्संकल्प

शुभ भावना मन को कल्याण के मार्ग की ओर ले जाती है। हम प्रभु से प्रार्थना करें कि हम कल्याण के मार्ग की ओर बढ़ें। कहा भी है-

असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।।

अर्थात् ''हे प्रभु! हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो।'' - इसके लिए हमारे मन का संकल्प दृढ़ होना चाहिए।

'श्रमणसूत्र' में मन के आठ प्रकार के संकल्प का वर्णन आता है-

असंजमं परियाणामि, संजमं उवसंपज्जामि।
अबंभं परियाणामि, बंभं उवसंपज्जामि।
अकप्पं परियाणामि, कप्पं उवसंपज्जामि।
अणाण्णं परियाणामि, णाणं उवसंपज्जामि।
अकिरियं परियाणामि, किरियं उवसंपज्जामि।
मिच्छत्तं परियाणामि, सम्मत्तं उवसंपज्जामि।
अबोहिं परियाणामि, बोहिं उवसंपज्जामि।

अमग्गं परियाणामि, मग्गं उवसंपज्जामि।

अर्थात्

मैं असंयम को छोड़ता हूँ, संयम को स्वीकार करता हूँ।
मैं अब्रह्मचर्य को छोड़ता हूँ, ब्रह्मचर्य को स्वीकार करता हूँ।
मैं अकल्पनीय को छोड़ता हूँ, कल्पनीय को स्वीकार करता हूँ।
मैं अज्ञान को छोड़ता हूँ, ज्ञान को स्वीकार करता हूँ।
मैं अक्रिया को छोड़ता हूँ, क्रिया को स्वीकार करता हूँ।
मैं मिथ्यात्व को छोड़ता हूँ, सम्यक्त्व को स्वीकार करता हूँ।
मैं अबोधि को छोड़ता हूँ, बोधि को स्वीकार करता हूँ।
मैं अमार्ग को छोड़ता हूँ, मार्ग को स्वीकार करता हूँ।

इस प्रकार के संकल्प से मन की शुद्धि होती है। हमें मन को मारना नहीं है, मन को बदलना है। एक नवयुवक प्रतिदिन एक आचार्य जी का व्याख्यान सुनने जाता था, लेकिन फिर भी उसके मन में विषय-वासना के भाव आते रहते थे। एक दिन उसने आचार्य जी को आकर कहा- "मेरे पड़ौस में एक नवयुवती रहती है, मैं जब भी उसको देखता हूँ तो मेरे मन में विकृति आ जाती है। मैं सोचता हूँ- मैं अपनी आँखे फोड़ लूँ।" आचार्य जी ने कहा-"इससे तुम्हारी समस्या हल नहीं होगी, आँखें बंद होने पर भी वह लड़की तुम्हारे चिंतन में आ जायेगी। तुमको मन का परिवर्तन करना चाहिए। मन में सोचो- वह लड़की तुम्हारी बहन है। मन के भावों को बदलो, धीरे-धीरे तुम्हारा मन परिवर्तित हो जायेगा।"

उत्तराध्ययन सूत्र में प्रसन्नचंद राजर्षि की मार्मिक कथा आती है। उन्होंने युवावस्था में ही दीक्षा ले ली। दीक्षा-ग्रहण से पूर्व कम उम्र के पुत्र और अपनी पत्नी को राज्य का भार सौंप दिया। दीक्षोपरान्त वे हमेशा ध्यान में तल्लीन रहते थे। श्रेणिक राजा उनके ध्यान से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने एकदा भगवान् से पूछा-"प्रसन्नचंद राजर्षि अगर अभी शरीर छोड़ दें तो कहाँ जायेंगे?" भगवान् ने कहा-"नरक में!" इसका कारण यह था कि उस समय राजर्षि के मन में अपने परिवार का चिन्तन आ रहा था। वे सोचने लगे कि मेरा पुत्र अल्पायु है, क्या पता उसे मार कर मेरे मंत्री ने मेरी पत्नी से

राज्य हड़प कर लिया हो। इसी प्रकार का चिन्तन करते हुए उनका हाथ उनके माथे पर गया और चिन्तन आया- मैं तो मुण्डित श्रमण हूँ। उन्होंने पश्चात्ताप किया। उनकी भावना शुद्ध हो गई। पुनः विशुद्ध ध्यान करते करते, शुभ भावना भाते-भाते ही वे देवलोक पहुँच गए।

वैसे तो भावनाएँ असंख्य होती हैं, पर आचार्यों ने उनको बारह भागों में विभक्त किया है- 1. अनित्य, 2. अशरण, 3. संसार, 4. एकत्व, 5. अन्यत्व, 6. अशुचि, 7. आस्रव, 8. संवर, 9. निर्जरा, 10. लोक, 11. बोधिदुर्लभ और 12. धर्म। इनमें से प्रथम 6 भावनाएँ वैराग्योत्पादक और अंत की 6 भावनाएँ तत्त्वपरक हैं।

आचार्य अमितगति ने चार भावनाओं का प्रतिपादन किया है। वे हैं-

सत्त्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वं।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव॥

अर्थात् प्राणिमात्र के प्रति मैत्री, गुणज्ञों के प्रति प्रमोद, व्यथितों के प्रति करुणा एवं अपने से विपरीत भाव रखने वालों के प्रति तटस्थ वृत्ति- हे प्रभो! मेरी आत्मा में ये विचार सदैव सुस्थिर हों।

आचार्य श्री भूधरदास एवं अन्य अनेक कवियों, साधकों ने बारह भावनाओं को श्रेष्ठ पद्य में लिखा है, जो ज्ञेय हैं तथा हजारों लोग जिनको मधुर कण्ठ से गाते हैं। आचार्य अमितगति का उपर्युक्त श्लोक भी बहुत लोकप्रिय है। इन भावनाओं में आध्यात्मिकता एवं वैराग्य के भाव कूट-कूट कर भरे हुए हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति को इन भावनाओं का निरन्तर पाठ, अनुशीलन करना चाहिए तथा इन्हें जीवन में आचरित करना चाहिए।

-70, टी.टी.के. रोड़, अल्वारपेट, चेन्नई-600018

पाठक अभिमत

कविता मेहता

मैं पिछले पन्द्रह वर्षों से 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका की नियमित पाठिका हूँ, जिनवाणी पत्रिका मेरे जीवन की एक अमूल्य निधि बन गई, इसके बिना मुझे मेरे जीवन में अधूरापन लगता है, यह अपने आप में एक बेमिसाल धार्मिक मासिक पत्रिका है, इसका हर एक स्तम्भ चाहे नारी, युवा, बाल या लेख सम्बन्धी हो, बड़े ही प्रभावशाली तथा शिक्षाप्रद हैं। *-श्री शाह निलय, रवीन्द्र नगर, शिमोगा (कर्नाटक)*

साधना

एकलविहार कब?

श्रीमती रीना बैद

आज के युग में साधु एकलविहार करते हैं, जिससे कुछ लोगों में शंका होती है कि वे समूह में क्यों नहीं रहते? यदि समूह में उनकी दूसरे साधुओं के साथ अनबन है, तो वे साधु कैसे? या उन्हें समूह के साथ रहने में अन्य कोई असुविधा है? कारण बहुत से हो सकते हैं। उनका चिन्तन एक दृष्टि से सही भी है, आगमों में उल्लेख है कि साधु एकल विहार भी कर सकता है। एकलविहार प्रतिमा का अर्थ है अकेला रहकर साधना करने का संकल्प। जैन परम्परा के अनुसार साधक तीन स्थितियों में अकेला रह सकता है-1. एकाकीविहार प्रतिमा स्वीकार करने पर, 2. जिनकल्प प्रतिमा स्वीकार करने पर, 3. मासिक आदि भिक्षु प्रतिमाएँ स्वीकार करने पर। यह स्थानांगवृत्ति पत्र 395 पर उल्लिखित है। प्रस्तुत सूत्र में एकाकीविहार प्रतिमा स्वीकार करने की योग्यता के आठ अंग बताए गए हैं-

1. **श्रद्धावान**- अपने अनुष्ठानों के प्रति पूर्ण आस्थावान ऐसा साधु सम्यक्त्व और चारित्र में मेरु की भांति अडोल होता है।
2. **सत्य पुरुष**- सत्यवादी ऐसा साधक अपनी प्रतिज्ञा के पालन में निडर होता है, सत्याग्रही होता है।
3. **मेधावी**- श्रुतग्रहण की मेधा से सम्पन्न होता है।
4. **बहुश्रुत**- जघन्यतः नौवें पूर्व की तीसरी वस्तु को तथा उत्कृष्टतः असम्पूर्ण दस पूर्वों को जानने वाला होता है।
5. **शक्तिमान**- तपस्या, सत्त्व, सूत्र, एकत्व और बल इन पाँच तुलाओं से जो अपने आप को तोल लेता है उसे शक्तिमान कहा जाता है। छः मास तक भोजन न मिलने पर भी जो भूख से पराजित न हो, ऐसा अभ्यास

तपस्यातुला है। भय और निद्रा को जीतने का अभ्यास सत्त्वतुला है। उन्हें जीतने के लिए वह पहली रात को सब साधुओं के सो जाने पर उपाश्रय में ही कायोत्सर्ग करता है, दूसरी बार उपाश्रय से बाहर तीसरे चरण में किसी चौक में, चौथे चरण में शून्यघर में और पाँचवें क्रम में श्मशान में रात में कायोत्सर्ग करता है। तीसरी तुला है सूत्रभावना। वह सूत्र के परावर्तन से उच्छ्वास आदि काल के भेद को जानने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। एकत्वतुला के द्वारा आत्मा को शरीर से भिन्न जानने का अभ्यास कर लेता है। बलतुला के द्वारा वह मानसिक बल को इतना विकसित कर लेता है कि जिससे भयंकर उपसर्ग उपस्थित होने पर भी उनसे विचलित नहीं होता। जो साधक जिनकल्प प्रतिमा स्वीकार करता है उसके लिए ये पाँच तुलाएँ हैं। इनमें उत्तीर्ण होने पर भी वह जिनकल्प प्रतिमा स्वीकार कर सकता है।

6. **अल्पाधिकरण**– उपशान्त कलह की उदीरणा कर नये कलहों का उद्भावन नहीं करने वाला होता है।
7. **धृतिमान**– अरति और रति में समभाव रखने वाला तथा अनुलोम एवं प्रतिलोम उपसर्गों को सहने में समर्थ होता है।
8. **वीर्यसम्पन्नता**– स्वीकृत साधना में सतत उत्साह रखने वाला होता है।

ये योग्यताएँ संघबद्धता में भी अपेक्षित हैं। किन्तु एकाकी साधना में इनकी अनिवार्यता है। संघबद्धता योग्यता के विकास के लिए है। उसका विकास हो जाए और साधक अकेले में साधना की अपेक्षा का अनुभव करे तो वह एकाकीविहार भी कर सकता है। इस प्रकार संघबद्धता और एकाकी विहार दोनों को स्वीकृति देकर सूत्रकार ने यह प्रमाणित कर दिया कि आचार और व्यवस्था को अनेकान्त की कसौटी पर कसकर ही उनकी वास्तविकता को समझा जा सकता है।

जैन दर्शन ने तत्त्व विवाद के क्षेत्र में ही अनेकान्त का प्रयोग नहीं किया है। आचार और व्यवस्था के क्षेत्र में भी उसका प्रयोग किया है। साधना

अकेले में भी हो सकती है और संघसमूह में भी। इस प्रश्न पर जैन आचार्यों ने सर्वाङ्गीण दृष्टि से विचार किया है। उन्होंने संघ को बहुत महत्त्व दिया। साधना करने वाला संघ में दीक्षित होकर ही विकास करता है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं कि वह अकेला रहकर साधना के उच्च शिखर पर पहुँच सके। अकेला रहकर वही साधना कर सकता है जिसे विशिष्ट योग्यता उपलब्ध हो।

-प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, मेन मालवीय नगर, गुरुनानक पथ, जयपुर (राज.)

श्री हस्ती गुरु वरदायी

डॉ. श्रीमती मीनाक्षी डागा

अप्रतिम ज्ञानमय, करुणाशील हैं, वो वरदायी।
श्रद्धेय श्री हस्ती गुरु, हमारे प्रेरणादायी।।
वे अप्रमत्त, अनवरत क्रियाशील थे,
जैसे अविरल प्रवाहमान नदियां।
उनमें सागर सी थी, गहराई,
अचला सी सहनशीलता अपनाई।
जिनके मुख पर थी, शशि सी सौम्यता छाई,
भास्कर सा ओज भी था भाई।
आचार में चट्टानों सी,वज्रता अपनायी,
जो पावे दरस, मंत्रमुग्ध होकर रह जायी।
गुरु हीरा व मान में, अपनी छवि झलकायी,
छोड़ गये प्रेरक बनाकर, अपने उत्तरदायी।
महेन्द्र गौतम प्रमोद मुनि ने सौरभ फैलायी,
धर्म की ये मीठी वाणी, हर मन को भायी।
शत-शत वन्दन करते, प्रतिमा उनकी हृदय में बसायी,
कभी जा न सकेंगे, लेकर हमसे विदाई।

-202, वीर दुर्गादास नगर, पाली (राज.)

साक्षात्कार

आचार्य श्री हीराचन्द्र जी की मुख्यमंत्री को प्रेरणा

कत्लखानों पर अंकुश और नैतिक शिक्षा पर बल आवश्यक

आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी वर्ष के समापन समारोह के उपलक्ष्य में उनकी जन्मभूमि पीपाड़शहर में 16 से 18 जनवरी 2011 तक त्रिदिवसीय कार्यक्रम आयोजित हुए। पहले दिन 16 जनवरी दोपहर में गुणी-अभिनन्दन और पुस्तक लोकार्पण समारोह में भाग लेने के लिए राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत हेलीकॉप्टर से पीपाड़शहर पहुँचे। उसी दिन तथा उसी समयावधि में मुख्यमंत्री को एकाधिक अलग-अलग स्थानों पर हो रहे कार्यक्रमों में भाग लेना था। लेकिन मुख्यमंत्री ने उस दिन शताब्दी-पुरुष आचार्य हस्ती के जन्म-शताब्दी समारोह में भाग लेने को प्राथमिकता दी। समारोह से पूर्व एक बजे वे वहाँ विराजित आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज के दर्शनार्थ पहुँचे। आचार्यश्री और उपाध्याय श्री पाट पर विराजमान थे। उनके एक ओर नीचे साध्वीवृन्द और दूसरी ओर नीचे मुनिवृन्द विराजित थे। संघसेवा शिरोमणि श्री मोफतराज मुणोत, संघ संरक्षक पद्मभूषण श्री डी.आर.मेहता तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

आचार्य श्री और उपाध्यायश्री को वन्दन करके मुख्यमंत्री उनके समक्ष नीचे फर्श पर बिछाई एक दरी पर बड़ी शालीनता से बैठ गये। बातों का सिलसिला शुरू हुआ। करीब पौन घण्टे तक मुख्यमंत्री और आचार्यप्रवर के बीच अनेक विषयों पर चर्चा हुई। मुख्यमंत्री ने बताया कि उन्होंने आचार्य हस्ती के कई बार दर्शन किये, लेकिन कब-कब किये, यह उन्हें ठीक से याद नहीं है। हाँ, एक बार केन्द्र में मंत्री बनने पर कार्यभार संभालने से पूर्व उन्होंने आचार्य हस्ती के दर्शन किये थे और उनका मंगल-पाठ ग्रहण किया था। उन्होंने कहा कि आचार्य हस्ती एक सच्चे सन्त और निस्पृह योगी थे। समीप ही श्री प्रमोदमुनि जी विराजित थे। उन्होंने यह भी बता दिया कि गहलोत साहब ने कब-कब और कहाँ-कहाँ युगमनीषी आचार्य हस्ती के

दर्शन किये थे। मुनिश्री की स्मरणशक्ति से मुख्यमंत्री को आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता हुई।

सुना है कि मुख्यमंत्री सम्मान-सत्कार, हार-उपहार और प्रदर्शन से बचने का प्रयास करते हैं। राजनीति में होते हुए वे अहिंसा, नैतिकता, अपरिग्रह आदि जीवन मूल्यों के प्रति सजग रहते हैं। उनके जीवन के इस उजले पक्ष पर आचार्यश्री ने प्रमोद व्यक्त किया। आचार्यश्री ने देश/प्रदेश की प्रमुख समस्या बूचड़खाने और मांसाहार पर गहरी चिन्ता व्यक्त की। आचार्यश्री ने कहा कि बढ़ते बूचड़खाने देश की संस्कृति और प्रकृति को भयंकर नुकसान पहुँचा रहे हैं। कुछ लोगों की मर्जी पर जनस्वास्थ्य और पर्यावरण से खिलवाड़ करना कतई उचित नहीं है। ऐसे में शासन का यह दायित्व है कि वह इन पर अंकुश लगाए। अचार्यश्री ने कहा कि उनके शासन में बूचड़खानों को वित्तीय और गैर-वित्तीय किसी भी प्रकार से राजकीय संरक्षण और प्रोत्साहन नहीं मिलना चाहिये। बूचड़खाने हिंसा-हत्या और खून-खच्चर के अड्डे होते हैं। शासन को विचार करना चाहिये कि इन्हें कैसे कम किया जाए। मुख्यमंत्री ने ध्यानपूर्वक आचार्यश्री की बातें सुनीं और पूरा भरोसा दिलाया कि उनके शासन में राज्य में मांस-व्यवसाय को राजकीय प्रोत्साहन नहीं मिलेगा।

आचार्यश्री ने देश/समाज की दूसरी बड़ी समस्या 'मूल्य-विहीन शिक्षा-प्रणाली' की ओर मुख्यमंत्री का ध्यान आकर्षित किया और कहा कि हर विद्यालय में 'पंथ-निरपेक्ष' नैतिक शिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिये। इस व्यवस्था के अन्तर्गत नैतिक शिक्षा का नियोजित पाठयक्रम हो तथा प्रतिदिन दूसरे विषयों की कक्षाओं की भाँति नैतिक कक्षा का कालांश होना चाहिये। जैसे विद्यालयों में शारीरिक शिक्षक, खेल शिक्षक होते हैं, वैसे ही नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाले शिक्षक होने चाहिये। हमारे विद्यालय देश के चरित्र और राष्ट्रीयता के आधार-संस्थान हैं। उनके माध्यम से रोजगारोन्मुखी शिक्षा के साथ ही नैतिकता की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिये। मुख्यमंत्री ने आचार्य श्री के विचारों से अपनी सहमति व्यक्त की और कहा कि इस दिशा में वे कुछ ठोस कदम उठाने का प्रयास करेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भगवान महावीर के अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह आदि सिद्धान्त इतने जबर्दस्त हैं कि इनमें संसार की सारी समस्याओं का हल सन्निहित है। इन सिद्धान्तों का सारी दुनिया में प्रचार-प्रसार होना चाहिये। महात्मा गाँधी के जीवन पर जैन धर्म की गहरी छाप थी। जैन मनीषियों और मुनियों का उनके जीवन पर काफी प्रभाव रहा, जिनकी चर्चा उन्होंने अपनी आत्मकथा में भी की। गांधीजी ने भगवान महावीर के सिद्धान्तों को समझकर उन्हें व्यावहारिक रूप दिया और जिया। आज महात्मा गाँधी के सिद्धान्तों से पूरा संसार प्रेरणा लेता है। उनके जन्म दिवस 2 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र ने विश्व अहिंसा दिवस घोषित किया है। मुख्यमंत्री ने पूछा कि आप इतने महान जैन सिद्धान्तों का देश-विदेश में व्यापक प्रचार-प्रसार क्यों नहीं करते हैं? आचार्यश्री ने कहा कि जैन मुनियों की कुछ मर्यादाएँ होती हैं। जैन श्रमणाचार में आचार, प्रचार का आधार है, लेकिन व्यापक प्रचार-प्रसार का कार्य गृहस्थ वर्ग आगे बढ़ा सकता है।

संघीय मर्यादा के अनुसार मुख्यमंत्री और आचार्यश्री की इस शिखर वार्ता के दौरान फोटोग्राफी तथा इलेक्ट्रोनिक संचार उपकरणों का उपयोग वर्जित रहा। आचार्यश्री, उपाध्यायश्री और साधु-साध्वियों की सादगी और मर्यादा से मुख्यमंत्री काफी प्रभावित लग रहे थे। उनके पावन सान्निध्य में कुछ खास विषयों पर सारभूत विचार-विमर्श करके मुख्यमंत्री आचार्यश्री से मंगलपाठ सुनंकर आचार्य हस्ती शताब्दी समारोह स्थल के लिए रवाना हो गये।

शब्दांकन-डॉ. दिलीप धींग

-61-63, डॉ. राधाकृष्णन मार्ग, मैलापुर, चेन्नई-600004

सूचना

जिनवाणी पत्रिका का दिसम्बर 2010 एवं जनवरी 2011 का संयुक्तांक 'गुरु-गरिमा एवं श्रमण-जीवन' विशेषाङ्क के रूप में प्रकाशित हुआ, जिसमें समाचारों को स्थान नहीं दिया गया था। अतः इस अंक में तीन माह के समाचारों को स्थान दिए जाने से यह अंक नियमित पाठ्य सामग्री से युक्त नहीं हो सका है।-**सम्पादक**

English-Section

HAPPINESS IS WITHIN

Shri Ranjit Singh Kumat (Retd. I.A.S.)

All those who have acquired material things and even found their names in the Forbes 500 list should read and recall what Emperor Alexander, the Conqueror of the world, said in his last moments that his hands should dangle outside his coffin to show the world that the Conqueror of the world was going empty-handed. This is what all billionaires and multimillionaires are going to do.

Even after amassing uncountable wealth, acquiring properties and assets beyond measure, people are not happy and find certain amount of emptiness within. There is something lacking or missing. They are not happy. On the other hand, there are people who have not amassed wealth but are happy and make others happy too. One has to search the real source of happiness.

Author of New York Times Best Seller, "Happy for No Reason", Mrs. Marci Shimoff writes that a survey of some of the happiest people around shows that the happiest people are not the ones who "had it all". Further she says, "Some of the Happy 100 were simply born with happy dispositions. Most learnt to be happy by thinking and living in a particular way. They experience the underlying peace and well-being that is the essence of true happiness, where you bring happiness to your experiences rather than trying to extract happiness from them. I call this state Happy for No Reason."[1]

Possessing everything that matters does not bring happiness by itself. Happiness is a state of mind that one learns to create. Leading brain researcher Richard Davidson, Ph.D., of the University of wisconsin-Madison, said, "Based on what we know about the plasticity of the brain, we can think of happiness as a skill no different from learning to play

a musical instrument... it is possible to train our minds to be happy.[2] Abraham Lincoln once said, "Most folks are about as happy as they make up their minds to be."

Pursuit of material comforts and riches may not ensure happiness, but building a feeling of happiness will. Happiness is a state of mind and one has to believe in and strive for it.

What does it mean to be happy? Happiness is often identified with satisfactions, fulfillment, comfort, inner peace, joy, excitement and communion. When we are happy, we accept ourselves. When we are happy with others, we accept them.[3] Happiness brings us closer. Love and acceptance of ourselves as well as people and circumstances around us, without any judgment, brings happiness; and that is celebration of existence. Acceptance of everything around us with gratitude brings lasting happiness.

So long as we do not accept **'What is'**, we go in search of what is not and that creates tension, anxiety and worry. The feeling of 'lack' creates a feeling of emptiness and that is negation of happiness. The moment we accept what we have and feel fulfilled, happiness is just there; we need not seek it.

---

1. Marchi Shimoff with Carol Kline in article "Let the Joy Shine Through" published Ihd.com, May 2008, page 20.
2. Ibid, Quoted in the article referred to above.
3. Barry Neil Kaufman, "Happiness is a Choice" Fawcett Columbine, 1991, P. 67

-C 1703, Lack Cossal, Hiranandani Garden, Powai, Mumbai-400076 (Mah.)

अध्यक्ष महोदय का नया पता

सुमेरसिंह बोथरा

अध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,

'नायाब'

64-बी, जवाहरलाल नेहरू मार्ग,

जयपुर-302004 (राज.)

प्रेरक-प्रसंग

तिनके का महाभारत

संकलन- श्री नवरतन डागा

मूल सूक्ष्म होता है और फिर उसका विस्तार होता है। मूल छुपता जाता है और विस्तार दिखता जाता है। नन्ही-सी चिनगारी भयंकर दावानल बन जाती है, तो नन्हा सा तिनका बात-ही-बात में महाभारत बन जाता है।

पहाड़ की तलवटी में एक छोटा-सा गांव था। एक ओर भीलों की बस्ती थी तो दूसरी ओर राजपूतों की बस्ती थी।

एक भील शहद की मटकी लिए राजपूत के घर आया। राजपूत ने शहद को देखा तो उसमें एक तिनके का टुकड़ा तैर रहा था। उसने तुरन्त अपनी अंगुली से उसे निकाल फेंका। शहद से सने तिनके पर मक्खियां भिनभिनाने लगी। एक छिपकली उन्हें चट करने के लिए दौड़ी। राजपूत की पालतू बिल्ली ने छिपकली को देखा तो वह भी उस पर झपट पड़ी। भील के पालतू कुत्ते ने बिल्ली को देखा तो वह भी उस पर टूट पड़ा।

राजपूत अपनी बिल्ली को कुत्ते के पंजों में फंसा देख गुस्से के मारे कांप उठा। उसने दो-चार डंडे कुत्ते के मुंह पर जड़ दिये। कुत्ता पीड़ा के मारे चीख उठा। भील अपने प्राण-प्यारे स्वामिभक्त कुत्ते की यह दुर्दशा देख तिलमिला उठा। बात-ही-बात में लाठियां उठ गई।

मिनटों में भीलों की बस्ती में हवा फैल गयी कि राजपूतों ने भील को पीट दिया। इधर राजपूतों की बस्ती में भी बिजली की तरह खबर फैल गई कि भील, राजपूतों पर चढ़ आए हैं।

दोनों दल हाथों में शस्त्र लिए मरने-मारने आ धमके। घमासान युद्ध हुआ। खून की नदी बह चली। सैकड़ों व्यक्ति मारे गये, सैकड़ों घायल हुए। राज्यधिकारियों ने झगड़े के मूल को खोजा।

सब हैरान थे कि इतना बड़ा महाभारत केवल एक तिनके के कारण हुआ।

-संयोजक, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ,
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

संवाद (29)

माह अक्टूबर-2010 की जिनवाणी में पूछे गये निम्नांकित प्रश्न के दो उत्तर यहाँ प्रकाशित दिए जा रहे हैं-

प्रश्न-कर्म-सिद्धान्त के अनुसार पुण्य से सुख एवं पापोदय से दुःख प्राप्त होता है। भाग्य से अधिक और समय से पहले कुछ नहीं मिलता है। फिर पुरुषार्थ की क्या आवश्यकता है? - *अरविन्द कुमार सुमेरमल गाँधी, रत्नागिरी (महा.)*

उत्तर- श्रीमती अभिलाषा हीरावत, मुम्बई- कर्म-सिद्धान्त के अनुसार पुण्य से सुख एवं पापोदय से दुःख प्राप्त होता है, किन्तु पुण्य और पाप या सुख और दुःख किसी भी व्यक्ति को कितना मिलेगा, यह वह व्यक्ति स्वयं अपने कर्मों से ही निर्धारित करता है। कोई भी व्यक्ति स्वयं पुरुषार्थ कर के ही पूर्व में बाँधे कर्मों की स्थिति और अनुभाग का अपवर्तन या उद्वर्तन अर्थात् उन्हें कम या अधिक कर सकता है। निकाचित कर्म ही ऐसे कर्म हैं जिनमें परिवर्तन नहीं किया जा सकता।

व्यक्ति का यह सोचना कि ''भाग्य से अधिक और समय से पहले कुछ नहीं मिलता है फिर पुरुषार्थ की क्या आवश्यकता है'' यह नियतिवाद कहलाता है।

प्रश्नव्याकरण सूत्र में जिनवाणी हमें बता रही है कि 'वास्तव में नियति (भाग्य) कोई स्वतन्त्र शक्ति नहीं है, यह भी पुरुषार्थ का परिणाम है', वर्तमान में जो पुण्य से सुख एवं पाप से दुःख प्राप्त होता है वह पूर्व में किए हुए पुरुषार्थ का ही प्रतिफल है। पुरुषार्थ से नियति का निर्माण हुआ है। जीव के द्वारा बाँधे गए शुभ अशुभ निकाचित कर्म से ही नियति भवितव्यता बनती है। यह नियति (भाग्य) पुरुषार्थ की अपेक्षा रखती ही है और पुरुषार्थ के बिना नियति सफल भी नहीं हो सकती। जैसे- भाग्य से आपको भोजन मिल गया, खाने की इच्छा भी है किन्तु हाथ से उठाकर मुँह में रखने और चबाकर गले के नीचे उतारने रूप पुरुषार्थ किया जाएगा तभी भवितव्यता सफल होगी। यदि हाथ उठाकर मुँह में नहीं रखेंगे अर्थात् खाने का पुरुषार्थ नहीं करेंगे तो खाना भाग्य से पेट में नहीं पहुँच पाएगा।

उपासकदशा सूत्र में भी भगवान महावीर स्वामी ने नियतिवाद का खण्डन किया है।

उपासकदसा सूत्र के 7 वें अध्ययन में नियतिवादी गोशालक मत को स्वीकार करने वाले सद्दाल पुत्र से, स्वयं भगवान महावीर स्वामी का वाद हुआ था।

भगवान महावीर, कुंभकार सद्दाल पुत्र की कुंभकार शाला में ठहरे थे। कुंभकार अपने मिट्टी के बर्तन सुखाने के लिए धूप में रख रहा था, तब भगवान महावीर ने उससे पूछा- ''सद्दाल पुत्र! ये मिट्टी के बर्तन कैसे बने- किसने बनाए? ''भगवन! यह पहले मिट्टी थी, मिट्टी में पानी मिला, राख मिली, चाक पर चढ़ा और बर्तन बन गए'' सद्दाल ने अपने सिद्धान्त का निर्वाह करते हुए कहा। ''सद्दाल पुत्र! ये पात्र पुरुषार्थ से बनें हैं या यों ही बन गए?'' भगवान ने फिर पूछा। ''भगवन्! ये पात्र बिना पुरुषार्थ के यों ही बन गए,'' अपने मत का बचाव करते हुए कुम्भकार ने कहा। ''सद्दाल पुत्र! इन बर्तनों को कोई उठाकर ले जाए, चुरा ले या तोड़-फोड़ दे तो तुम चुपचाप रहोगे? इन्हें बचाने का प्रयत्न नहीं करोगे? उसे चुराने या तोड़-फोड़ करने वाले पर क्रोध नहीं करोगे? यदि कोई व्यक्ति तुम्हारी पत्नी अग्निमित्रा के साथ कुकर्म करने की चेष्टा करे, तो क्या तुम भवितव्यता को पकड़े रह कर चुप ही रहोगे?'' भगवान् महावीर ने प्रबल युक्ति उपस्थित की। ''भगवन्! मैं चुपचाप कैसे रहूँगा? मैं उस दुराचारी को मारूँगा, पीटूँगा और उसका प्राणान्त भी कर दूँगा।'' किंचित् आवेश के साथ सद्दालपुत्र ने कहा।''सद्दालपुत्र! ऐसा करना तो तुम्हारे मान्य नियतिवाद के विरुद्ध होगा। जब बरतनों का बनना बिगड़ना, चोरी जाना टूटना और तुम्हारी पत्नी के साथ कुकर्म करना ये सब नियति के अधीन हैं, इनमें किसी का कोई पुरुषार्थ नहीं है तो तुम किसी दूसरे को दण्ड कैसे दे सकते हो? तुम्हें तो अपने सिद्धान्त के अनुसार चुप ही रहना चाहिए। यदि तुम क्रुद्ध होकर दण्ड देते हो, तो तुम्हारा सिद्धान्त मिथ्या ठहरता है।'' भगवान ने नियतिवाद की एकांतता का खोखलापन सिद्ध किया। सद्दालपुत्र नियतिवाद में रहे हुए मिथ्यात्व को समझ गया और उसका त्याग कर के भगवान का उपासक बन गया।

यदि हम यह मान लें कि 'भाग्य से अधिक और समय से पहले कुछ नहीं मिलता है और पुरुषार्थ न करें' तो हमें नौकरी, व्यापार आदि करने की, धन कमाने की क्या आवश्यकता है? भाग्य में जितना धन-वैभव लिखा है हमारे घर की छत पर बरस जाएगा.....। बच्चों को गला काट प्रतियोगिता के अनुसार इतनी मेहनत करके पढ़ने की क्या आवश्यकता है? भाग्य में होगा तो पास हो ही जाऐगें, उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखने का पुरुषार्थ भी क्यों करें? भाग्य में होगें तो नम्बर मिल जायेंगे.....। गृहिणी खाना बनाने का पुरुषार्थ भी क्यों करें? भाग्य में होगा तो खाना अपने आप चलकर पेट में पहुँच जाएगा...।

इस तरह यदि हम सिर्फ भाग्य के भरोसे बैठे रहे तो सर्वत्र अकर्मण्यता पोषित होगी। भाग्य को सँवारने के लिए पुरुषार्थ करना नितान्त आवश्यक है।

संसार में अनेक वाद चले और चल रहे हैं। कोई काल को महत्त्व देता है तो कोई स्वभाव को, कोई पुरुषार्थ को, कोई नियति को, कोई प्रकृति को, कोई ईश्वर आदि को महत्त्व देता है।

जैन दर्शन काल आदि पाँचों समवायों को मानता है।

''कालो सहाव नियई पुव्वकयं पुरिसे कारणेगंता।
मिच्छत्तं ते चेव उ समासओ होंति सम्मत्तमिति।।''

काल, स्वभाव, नियति, पूर्व कर्म और पुरुषकार-पराक्रम, ये पृथक् निरपेक्ष हों तो मिथ्यात्व हैं, किन्तु वे ही सब मिलकर सम्यक्त्व हो जाते हैं।

अतः सिर्फ भाग्य के भरोसे बिना पुरुषार्थ के नहीं रहा जा सकता। अपने भाग्य को बनाने के लिए पुरुषार्थ करना अतिआवश्यक है।

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर- जीवन में पुण्य के उदय से सुख की परिस्थितियाँ और पाप के उदय से दुःख की परिस्थितियाँ आती हैं। ये परिस्थितियाँ काल की परिपक्वता के साथ प्रकट होती हैं। इन्हीं परिस्थितियों को 'भाग्य' नाम दिया गया है। अतः ठीक ही कहा गया है कि भाग्य से अधिक और समय से पहले सुख और दुःख की परिस्थितियाँ हमारे जीवन में नहीं आती हैं।

अब प्रश्न के तीसरे खण्ड पुरुषार्थ की आवश्यकता पर विचार किया जा रहा है। जो यह सोचता है कि प्राप्त सुख को आसक्ति पूर्वक और प्राप्त दुःख को व्यथापूर्वक भोगं लेना चाहिए, उस व्यक्ति के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार का आचरण कर वह भाग्य की महत्ता और प्रबलता को स्वीकार करता है। दूसरे पक्ष में जो यह सोचता है कि प्राप्त सुख को निरासक्त भाव से एवं प्राप्त दुःख को समता भाव से सहन करना चाहिए। ऐसा आचरण पुरुषार्थ है। वह भाग्य को पुरुषार्थ से परिवर्तित कर लेता है। अब उसे सुख-दुःख रूप भाग्य उसी रूप में भविष्य में प्राप्त नहीं होगा।

प्रस्तुत प्रश्न में भाग्य और पुरुषार्थ के सम्बन्ध को लेकर समस्या उत्पन्न हुई है। यदि भाग्य को शाश्वत स्वीकार किया जाए तो पुरुषार्थ की आवश्यकता नाम मात्र की नहीं है। वस्तुस्थिति यह है कि भाग्य परिवर्तनशील है अतः इसमें बदलाव सम्भव है। परिवर्तन की यह सम्भावना पुरुषार्थ की आवश्यकता को प्रमाणित करती है।

अध्यात्म चेतना वर्ष के अन्तर्गत

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज श्री के मुखारविन्द से सपत्नीक आजीवन शीलव्रत अंगीकार करने वालों की सूची

(दिनाँक 03 नवम्बर 2009 से 29 दिसम्बर 2009 तक)

श्री मफतलाल जी राजपुरोहित-मणीनगर, श्री राजीव जी हीरावत-मुम्बई(जयपुर), श्री मांगीलाल जी चौपड़ा-नारायणपुरा (अहमदाबाद), श्री भैरूलाल जी जीरावला-शाहीबाग (अहमदाबाद), श्री नरेन्द्रकुमार जी लोढ़ा-माणकबाग (अहमदाबाद), श्री किशोरमल जी छाजेड़-गांधीनगर, श्री मूलराज जी (मनुभाई)-जगाणा, श्री गौतमचन्द जी चोरडिया-चेन्नई।

(दिनाँक 30 दिसम्बर 2009 से 18 जनवरी 2011 तक)

416 दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत लिया

श्री माणकचन्द जी अन्याव-शाहीबाग (अहमदाबाद), श्री पुखराज जी बोकड़िया-सांचौर, श्री मिश्रीलाल जी बोथरा-साँचोर, श्री केवलमल जी गोलेछा-जोधपुर (बाड़मेर), श्री लूणकरण जी गोलेछा-बाड़मेर, श्री मगराज जी जैन 'पद्म श्री'-बाड़मेर, श्री मेवाराम जी संकलेचा-बाड़मेर, श्री मानमल जी मांडोत-बाड़मेर, श्री मोहनलाल जी कुंकुं चौपड़ा- बाड़मेर, श्री मीठालाल जी मांडोत-सूरत (जोधपुर), श्री पुखराज जी सोलंकी-बाड़मेर, श्री मोहनलाल जी जोगड़-पिलखेड़ (चालीसगाँव), श्री धनपतराज जी मुणोत-जोधपुर, श्री घेवरचन्द जी माण्डोत-जोधपुर (बाड़मेर), श्री सुरेन्द्र कुमार जी गांग-बाड़मेर, श्री शंकरलाल जी गाँधी मेहता-बाड़मेर, श्री केसरीमल जी बोथरा-बाड़मेर, श्री गणपतराज जी लूणिया-बाड़मेर, श्री नेमीचन्द जी बोथरा-बाड़मेर, श्री जसराज जी संखलेचा-आसाढ़, श्री भंवरलाल जी वर्मा-माडपुरा (कवास), श्री मासूलाल जी तापड़िया-बायतु, श्री घेवरचन्द जी गाँधी-बायतु, श्री भीकमचन्द जी बुरड़- बायतु, श्री लक्ष्मीचन्द जी प्रजापत-माजीवाला, श्री मांगीलाल जी प्रजापत-माजीवाला, श्री हीरालाल जी श्रीश्रीमाल-बालोतरा, श्री देवीचन्द जी कानूंगा-गढ़ सिवाना, श्री प्रकाशचन्द जी गोलेछा-चिकपेट,बैंगलोर, श्री जवाहरलाल जी चौपड़ा- गढ़ सिवाना, श्री मोहनलाल जी भोजाणी- गढ़ सिवाना, श्री नारायणचन्द जी राजपुरोहित-खाखरलाई, श्री सोहनराज जी श्रीश्रीमाल-कानाना, श्री हिम्मतलाल जी चोरडिया-कानाना, श्री सोहनराज जी चोरडिया-कानाना, श्री पारसमल जी बागरेचा-बालोतरा, श्री राजमल जी कवाड़-बालोतरा, श्री मोतीलाल जी श्रीश्रीमाल-बालोतरा, श्री भीकमचन्द जी गणधर चौपड़ा, श्री भँवरलाल जी सालेचा-बालोतरा, श्री

हरकचन्द जी सालेचा-बालोतरा, श्री मीठालाल जी वेदमूथा-बालोतरा, श्री पारसमल जी मदानी सालेचा-बालोतरा, श्री महावीर राज जी फूलफगर-पावटा,जोधपुर, श्री मदनलाल जी लोढ़ा-जयपुर, श्री छगलराज जी पालगोता-बालोतरा, श्री रवीन्द्रमल जी चोरडिया-चेन्नई, श्री जवरीलाल जी छाजेड़-सोइंतरा वाले, श्री मांगीलाल जी गोलेछा-बालोतरा, श्री बाबूलाल जी दाँती चौपड़ा-बालोतरा, विरक्ता कोमल के पिताजी वीर पिता श्री रमेशचन्द्र जी कोठारी-जलगाँव, श्री भूपत जी सालेचा-बालोतरा, श्री मदनराज जी मेहता-जोधपुर, श्री भँवरलाल जी माहेश्वरी-बालोतरा, श्री दामोदर जी जैन वीरपिता-सवाईमाधोपुर, श्री जवाहरलाल जी सालेचा'जागीरदार'- बालोतरा, श्री पोपटलाल जी ओस्तवाल-तलेगाँव (जलगाँव), श्री त्रिलोकचन्द जी श्रीमाल पादरू वाले-बालोतरा, श्री कांतिलाल जी सालेचा, श्री रोशनलाल जी सालेचा-बालोतरा, श्री नवलकिशोर जी माहेश्वरी-बालोतरा, श्री बाबूलाल जी गणधर चौपड़ा, श्री जेकचन्द जी बालड़, श्री भँवरलाल जी बाँठिया-बालोतरा, श्री सज्जनसिंह जी चारण-बालोतरा, श्री बाबूलाल जी बाघमार-बालोतरा, श्री बालकचन्द श्रीश्रीमाल-कानाना, श्री सुरेश जी तातेड़-समदड़ी, श्री जसराज जी बागरेचा (कल्याणपुर वाले)-चेन्नई, श्री हरीसिंह जी ठाकुर-मियाँ का बाड़ा, श्री अभयकुमार जी नाहर-जयपुर, श्री बस्तीमल जी श्रीश्रीमाल (नेनगोता)-दुन्दाड़ा, श्री महेन्द्रकुमार जी जैन (दिग.)-जोधपुर, श्री महारतनराज जी कांकरिया-जोधपुर, श्री शिवनाथमल जी मुणोत-सरदारपुरा,जोधपुर, श्री शान्तिलाल जी सिंघवी-जोधपुर, श्री गणपतराज जी मेहता-जोधपुर, श्री प्रकाशचंद जी संचेती-महामंदिर, जोधपुर, श्री दशरथमल जी बालड़-जोधपुर, श्री शुभराज जी मेहता-राईकाबाग,जोधपुर, श्री प्रकाशमल जी कुंभट-जोधपुर, श्री जतनराज जी मेहता-पीपाड़सिटी, श्री शुद्धराज जी लोढ़ा-मोगड़ा, श्री महावीरचंद जी डागा-जोधपुर, श्री ज्ञानचंद जी डागा-जोधपुर, श्री महावीरमल जी गाँधी-हैदराबाद, श्री प्रसन्नचन्द जी ओस्तवाल-जोधपुर, श्री धनपतमल जी सिंघवी-पाली, श्री लादूलाल जी कोठारी-दूदू, श्री मदनलाल जी मालाणी-पाली, श्री मोहनलाल जी सोलंकी-पाली, श्री कमलकिशोर जी भोमा सोनी-पाली, श्री राधेश्याम जी नाई-पाली, श्री केवलचन्द जी गोलेछा-पारलू, श्री सोहनलाल जी राकावत-पाली, श्री बद्रीलाल जी चेलाणी माहेश्वरी-पाली, श्री किशनदास जी वैष्णव-पाली, श्री शान्तिलाल जी मूथा-पाली, श्री मोहनलाल जी दर्जी-पाली, श्री सुरेशकुमारजी बरड़िया-जलगाँव, श्री डालचन्द जी पारख-पाली, श्री चम्पालाल जी गाछा-पाली, श्री राधाकिशन जी खत्री-पाली, डॉ.रमेशकुमार जी छाजेड़-ठाणे मुम्बई, श्री कानमल जी डोसी-पाली, श्री शान्तिलाल जी दुगड़-पाली, श्री नेमीचन्द जी नाहर-पाली, श्री पारसमल जी मुथा 'पीपाड़वाले'-मुम्बई, श्री जँवरीलाल जी पारख-पाली, श्री जयचन्द जी मरलेचा-अमरावती, श्री जसवंतराज जी मेहता-जोधपुर, श्री उत्तमचन्द जी डागा (कराड़ी)-तिरूपन्नामल्ले (चेन्नई), श्री महावीर

प्रसाद जी पोरवाल जैन-कोटा, श्री शांतिलाल जी साँड-बांरावाले, श्री बहादुरमल जी मेहता-भाँवरीबाले, श्री भीकमचंद जी पगारिया 'सोजतवाले'-पाली, श्री रवीन्द्रकुमार जी मेहता-भोपाल, श्री प्रेमबाबू जी जैन-बजरिया,सवाईमाधोपुर, श्री सुवालाल जी कर्णावट-तिंडीवनं (तमिलनाडू), श्री सुरेन्द्र कुमार जी कटारिया-भायंदर (मुम्बई), श्री धर्मचन्द जी जैन-कुशतला, श्री जगदीश प्रसाद जी जैन 'सुमेरगंजमंडी वाले'-कोटा, श्री मीठालाल जी लोढ़ा-जोधपुर, श्री शान्तिलाल जी जैन 'एण्डवा वाले'-बजरिया सवाईमाधोपुर, श्री तेजमल जी सालेचा-गुरलाई बाला, श्री जवरीलाल जी सुराणा-पाली, श्री राणमल जी मेहता-पाली, श्री सोहनलाल जी बरड़िया-पाली, श्री सायरचंद जी गाँधी-पाली, श्री दिनेशकुमार जी जैन-जयपुर, श्री लालचन्द जी जैन-जयपुर, श्री हेमन्तकुमार जी डागा-बून्दी, श्री बाबूलाल जी सेन-पाली, श्री सम्पतमल जी गाँधी-पाली, श्री शान्तिलाल जी चंडालिया मुंशी-पाली, श्री शान्तिलाल जी पोरवाल-पाली, श्री रामप्रकाश जी गुप्ता-पाली, श्री घीसूलाल जी पारख-पाली, श्री बस्तीराम जी सोनी-पाली, श्री श्रीकृष्ण जी वकील-पाली, श्री मोहनलाल जी कच्छावाह-पाली, श्री रामेश्वर जी अग्रवाल-पाली, श्री घीसूलाल जी कच्छवाह-पाली, श्री घनश्याम जी सेन-पाली, श्री शिवरतन जी सोनी-पाली, श्री कृष्णगोपाल जी बाड़मेरा-पाली, श्री राधाकिशन जी बोरा'वकील'-पाली, श्री हरिराम जी नेहरा 'वकील'-पाली, श्री तेजराज जी गोलेछा-पाली, श्री जयराम जी जाट-पाली, श्री धनराज जी माली-पाली, श्री भँवरसिंह जी राजपूत-पाली, श्री लक्ष्मीनारायण जी दिवाकर-पाली, श्री रामरतन जी बजाज-पाली, श्री मधुसूदन जी चक्रवर्ती-पाली, श्री माँगीलाल जी लुहार-पाली, श्री ओमप्रकाश जी लड्ढा-पाली, श्री रामचन्द्र जी माहेश्वरी-पाली, श्री भैंरूलाल जी लोढ़ा-पाली, श्री सोहनलाल जी चोपड़ा (चोटीलावाला)-पाली, श्री लीलमचंद जी ललवाणी-गोगेलाव वाले, विजयनगर,बैंगलूर, श्री भीमराज जी सुथार-पाली, श्री पुखराज जी मूथा-पाली, श्री अमरचन्द जी चण्डक-पाली, श्री पन्नालाल जी लुंकड़-कोयम्बटूर, श्री कोमलचंद जी मेहता-जोधपुर, श्री चम्पालाल जी ब्राह्मण-पाली, श्री प्रेमराज जी चौधरी-पाली, श्री भँवरलाल जी धारोलिया-पाली, श्री चेनाराम जी घाँची-पाली, श्री प्रसन्नकुमार जी मेहता'जोधपुर वाले'-पाली, श्री रामेश्वर जी गोयल अग्रवाल-पाली, श्री दाउलाल जी चंडक-पाली, श्री घेवरचन्द जी भोमा-पाली, श्री पुखराज जी पीतलिया-पाढरकवड़ा, श्री उगमचन्द जी पोरवाल-पाली, श्री जुगलकिशोर जी अरोड़ा-पाली, श्री मोहनलाल जी सोनी-पाली, श्री गौतमचन्द जी मेहता तलसेरा-पाली, श्री मगनीराम जी माली-पाली, श्री मीठालाल जी दर्जी-पाली, श्री जयकिशन जी केड़िया-पाली, श्री विष्णुकुमार जी लड्ढा-पाली, श्री चम्पालाल जी बोहरा-पाली, श्री भँवरलाल जी पारख-पाली, श्री सेवाराम जी राठी-पाली, श्री रामेश्वरलाल जी राठी-पाली, श्री माँगीलाल जी गोगड़-पाली, श्री श्यामप्रकाश जी

गुप्ता-पाली, श्री शंकरलाल जी अग्रवाल-पाली, श्री पुखराज जी खटीक-पाली, श्री जुगलकिशोरजी अग्रवाल-पाली, श्री ज्ञानचन्द जी गढ़ावत-पाली, श्री प्रेमराज जी दर्जी-पाली, श्री खेताराम जी प्रजापत-पाली, श्री भँवरलाल जी देवड़ा-पाली, श्री दयाराम जी साद-पाली, श्री झूमरलाल जी सोनी-पाली, श्री पुखराज जी चाय वाला-पाली, श्री किशनलाल जी केड़िया-पाली, श्री चम्पालाल जी अग्रवाल-पाली, श्री सत्यनारायण जी गोयंका अग्रवाल-पाली, श्री मिश्रीमल जी घाँची-पाली, श्री ताराचन्द जी घाँची-पाली, श्री घेवरचन्द जी रायसोनी बोहरा-पाली, श्री दाउलाल जी प्रजापत-पाली, श्री हीरालाल जी राठौड़-पाली, श्री नवलकिशोर जी श्रीमाली ब्राह्मण-पाली, श्री घनश्याम जी शर्मा-पाली, श्री रामलाल जी सुथार-पाली, श्री गोवर्धन सिंह जी राजपुरोहित-पाली, श्री उम्मेदजी माली-पाली, श्री भीमराज जी जोशी-पाली, श्री नत्थूराम जी चौहान-पाली, श्री ओखाराम जी माली-पाली, श्री बद्रीनारायण जी श्रीमाली-पाली, श्री भीमाराज जी जटिया-पाली, श्री प्रकाशचंद जी लुंकड़ 'पचपदरा'-पाली, श्री मदनमोहन जी राठी-पाली, श्री मोहनलाल जी तलेसरा-पाली, श्री मोतीलाल जी भंडारी-पाली, श्री मोतीलाल जी बलाई-पाली, श्री मगराज जी कर्णावट-पाली, श्री बाघमल जी सोनी-पाली, श्री जुगराज जी सुथार 'आर.ई.'-पाली, श्री सोहनराज जी रातड़िया मेहता-पाली, श्री चंपालाल जी संखलेचा-पाली, श्री सोहनराज जी सेवक-पाली, श्री मगराज जी प्रजापत-पाली, श्री रामचन्द्र जी ब्राह्मण-पाली, श्री नारायण प्रसाद जी आचार्य-पाली, श्री नथमल जी प्रजापत-पाली, श्री चंचलमल जी सिंघवी 'जोधपुर वाले'-पाली, श्री हनुमान दास जी वैष्णव-पाली, श्री गिरधारीलाल जी सिरवी-पाली, श्री भीकमचन्द जी राँका-पाली, श्री मोहनलाल जी माली-पाली, श्री लाभचन्द जी माली-पाली, श्री ठाकुरदास जी सिंघी-पाली, श्री गणपत लाल जी श्रीमाली-पाली, श्री भीकमचन्द जी घाँची-पाली, श्री राजेश्वर जी श्रीमाली ब्राह्मण-पाली, श्री देव भारती जी गोस्वामी-पाली, श्री अमोलकचन्द जी श्रीमाली ब्राह्मण-पाली, श्री सत्यनारायण जी सोनी-पाली, श्री संपतराज जी सेवक-पाली, श्री बद्रीप्रसाद जी ब्राह्मण-पाली, श्री भगवती लाल जी व्यास-पाली, श्री जगदीश जी जोशी-पाली, श्री जगदीश प्रसाद जी श्रीमाली-पाली, श्री मदनलाल जी श्रीमाली ब्राह्मण-पाली, श्री जुगराज जी श्रीमाली ब्राह्मण-पाली, श्री गिरधारीलाल जी तोसनीवाल-पाली, श्री भँवरलाल जी माली-पाली, श्री सूर्यप्रकाश जी दवे-पाली, श्री भँवरदास जी वैष्णव-पाली, श्री पेमाराम जी देवासी-पाली, श्री शान्तिलाल जी सुराणा-पाली, श्री खीमाराम जी चौकीदार-पाली, श्री पुखाराम जी चौकीदार-पाली, श्री चुन्नीलाल जी भाट-पाली, श्री नीरूलाल जी श्रीमाली ब्राह्मण-पाली, श्री भुंडाराम जी बावरी-पाली, श्री बाबूलाल जी बावरी-पाली, श्री रतनाराम जी लुहार-पाली, श्री मोतीलाल जी श्रीमाली ब्राह्मण-पाली, श्री चंपालाल जी सरावगी-पाली, श्रीमती बेबीबाई राजपुरोहित-पाली, श्री

राजेन्द्र सिंह जी पंजाबी-पाली, श्री रामलाल जी दर्जी-पाली, श्री रूपाराम जी चौधरी-पाली, श्री मोहनलाल जी-माली-पाली, श्री भँवरनाथ जी स्वामी-पाली, श्री आसूरामजी देवासी-पाली, श्री लक्ष्मीपतराज जी मेहता-पाली, श्री सुरेश जी संचेती-पाली, श्री हेमराज जी नाहर-पाली, श्री योगीन्द्र राज जी सिंघवी-पाली, श्री रामचन्द्र जी सोनी-पाली, श्री लाल मोहम्मद जी घोसी-पाली, श्री गंगाबिशन जी तोषनीवाल-पाली, श्री मोहनसिंह जी चौहान-पाली, श्री दीनदयाल जी श्रीमाली-पाली, श्री लिखमाराम जी लुहार-पाली, श्री आशाराम जी धोबी-पाली, श्री उत्तमचन्द जी नावरिया-पाली, श्री उगमराज जी गुगलिया-पाली, श्री घेवरचंद जी जोशी-पाली, श्री गोपीप्रसाद जी श्रीमाली-पाली, श्री घीसूलाल जी भाट-पाली, श्री सोहनलाल जी भाट-पाली, श्री मिश्रीलाल जी दवे-पाली, श्री हिन्दूराम जी जटिया-पाली, श्री मीठालाल जी जटिया-पाली, श्री गणपतलाल जी कुमावत-पाली, श्री रामचन्द्र जी पुजारी सेवक-पाली, श्री माधोलाल जी व्यास-पाली, श्री हस्तीमल जी शर्मा 'प्रिंसिपल'-पाली, श्री सत्यनारायण जी दवे-पाली, श्री दीपक कुमार जी कर्णावट-पाली, श्री बलवीर सिंह जी मारू जैन-पाली, श्री सहसमल जी घांची-पाली, श्री जुगराज जी कवाड़-पाली, श्री ताराचन्द जी सरगरा-पाली, श्री हेमराज जी प्रजापत-पाली, श्री चम्पालाल जी श्रीमाली-पाली, श्री नरेन्द्र कुमार जी विराणी 'विजय नगर वाले'-पाली, श्री गणेशमल जी सालेचा-पाली, श्री इन्दरचन्द जी बड़गूजर-पाली, श्री मोहनलाल जी गौड़-भाटियों की ढ़ाणी, बागड़िया, श्री बालूलाल जी गौड़-भाटियों की ढ़ाणी, बागड़िया, श्री माधव जी गौड़-भाटियों की ढ़ाणी, बागड़िया, श्री हरजी देवासी-दूदिया, श्री चम्पालाल जी दर्जी-भाकरी वाला, श्री वरधाराम जी चौकीदार-भाकरी वाला, श्री हीराराम जी चौकीदार-भाकरी वाला, श्री माधोसिंह जी राठौड़-सांवलता कलां, श्री हरीराम जी चौधरी-सांवलता कला, श्री चैनाराम जी जाट-सांवलता कलां, श्री नारायणराम जी जाट-सांवलता कला, श्री सांवलराम जी देवासी-सांवलता कलां, श्री गुणेशराम जी चौकीदार-सांवलता कला, श्री केवलचन्द जी आबड़-भटिण्डा, श्री जेठूसिंह जी राजपूत-भटिण्डा, श्री मोतीलाल जी मुणोत-भटिण्डा, श्री बुधाराम जी चौधरी-लोलावास, श्री हीराराम जी सरगरा-लोलावास, श्री मोहनसिंह जी राजपुरोहित-धुरासनी, श्री धन्नालाल जी मेघवाल-मोरटुका, श्री पन्नालाल जी मेघवाल-मोरटुका, श्री मोहनलाल जी अरोड़ा-पाली, श्री पुखराज जी देवासी-मोरटुका, श्री गिरधारी सिंह जी राजपूत-गोलिया, श्री भंवरसिंह जी राजपूत-गोलिया, श्री जेठसिंह जी राजपूत-गोलिया, श्री घीसूलाल जी चौधरी-चौड़ावास, श्री नारायणराम जी ब्राह्मण-कूड़, श्री राणाराम जी जाट-कूड़, श्री घेवरराम जी चौधरी-बाड़ाकलां, श्री कचरा राम जी चौधरी-बाड़ाकलां, श्री सुखाराम जी कटाणिया चौधरी-बाड़ाकला, श्री रतनलाल जी कर्णावट-अरटिया कलां, श्री गोविन्द सिंह जी राजपूत-अरटिया कलां,

श्री महावीर सिंह जी राजपूत-अरटिया कलां, श्री भीक जी चौधरी-कुड़ी, श्री राम जी चौधरी-कुड़ी, श्री हरजी चौधरी-कुड़ी, श्री गुमान जी डूडी-कुड़ी, श्री भंवर जी माली-कुड़ी, श्री चन्द्राराम जी सुथार-कुड़ी, श्री घेवरराम जी तांड़ी चौधरी-कुड़ी, श्री सुखेदव जी सुथार-हीरादेसर, श्री सीताराम जी ब्राह्मण-हीरादेसर, श्री नवल जी राजपूत-हीरादेसर, श्री महावीर जी लोढ़ा-हीरादेसर, श्री रामलाल जी तांड़ी-कुड़ी, श्री टीकमचन्द जी कोठारी-बैंगलोर,श्री चंदूलाल जी कुम्हार-भोपालगढ़, श्री मांगीलाल जी नाई-भोपालगढ़, श्री भक्तााराम जी जोशी-भोपालगढ़, श्री मुकनचंद जी दर्जी-भोपालगढ़, श्री रामपाल जी परिहार-भोपालगढ़, श्री नूर मोहम्मद-भोपालगढ़, श्री सुमेरसिंह जी बोथरा-जयपुर, श्री गौतमचन्द जी छाजेड़-भोपालगढ़, श्री धर्मीचन्द जी कांकरिया-भोपालगढ़, श्री पदमचन्द जी बाफणा-जोधपुर, श्री रतनलाल जी कोठारी-महामंदिर, जोधपुर, श्री कुशलचंद जी बाफणा-जोधपुर, श्री बादलचंद जी बोथरा-भोपालगढ़, श्री बस्तीमल जी बाफणा-कुड़ी, श्री सम्पतराज जी बोथरा-जोधपुर, श्री जसराज जी डूडी-रतकुड़िया, श्री तेजाराम जी डूडी-रतकुड़िया, श्री रामूराम जी डूडी-रतकुड़िया, श्री खेमाराम जी डूडी-रतकुड़िया, श्री लिछमन राम जी बेंदा-रतकुड़िया, श्री रामदास जी साद-रतकुड़िया, श्री चिमनाराम जी राव-रतकुड़िया, श्री पुरखाराम जी खोजा-रतकुड़िया, श्री हड़मानदास जी राव-रतकुड़िया, श्री छोटू जी तेली (इस्लामी)-रतकुड़िया, श्री बक्साराम जी बेंदा-रतकुड़िया, श्री पूसालाल जी कोठारी-खांगटा, श्री कालूराम जी उपाध्याय-कोसाणा, श्री शांतिप्रकाश जी सोनी-कोसाणा, श्री मदनलाल जी बाघमार-जबलपुर, श्री शिवराज जी नाहर-कोसाणा, श्री कोलजी विश्नोई-कोसाणा, श्री गोबरराम जी विश्नोई-कोसाणा, श्री भंवरलाल जी ओझा-कोसाणा, श्री सोहनलाल जी विश्नोई-कोसाणा, श्री रूपाराम जी माली-मालियों की ढ़ाणी, श्री सुमेरचन्द जी मेहता-कलकत्ता, श्री मांगीलाल जी मुथा-पीपाड़शहर, श्री प्यारालाल जी माली-पीपाड़शहर, श्री कल्याणसिंह जी राठौड़-पीपाड़शहर, श्री शंकर लाल जी वैष्णव-पीपाड़शहर, श्री शिखरचन्द जी भण्डारी-मकराणा, श्री राजकुमार जी नवलखा-कोटा, श्री शांतिलाल जी मुथा-पीपाड़ शहर, श्री प्यारेलाल जी कोठारी-पीपाड़शहर, श्री सुभाषचन्द जी बकरामुथा-पीपाड़शहर, श्री पदमचन्द जी बकरामुथा-पीपाड़शहर, श्री भंवरलाल जी दर्जी-पीपाड़शहर, श्री कमलकिशोर जी बोरा-पीपाड़ शहर, श्री शांतिलालजी जांगड़ा-पीपाड़शहर, श्री चम्पालाल जी कच्छवाहा-पीपाड़ शहर, श्री शांतिलाल जी कवाड़-पीपाड़शहर, श्री मोहनलाल जी भण्डारी-पीपाड़शहर, श्री धर्मचन्द जी धोका-पीपाड़शहर, श्री रतनलाल जी कवाड़-पीपाड़शहर, श्री मनमोहन राज जी मेहता-दिल्ली, श्री अमरचंद जी सांड-विजयनगर, श्री धर्मचन्द जी पालडेचा-धनोप, श्री रामदयाल जी जैन-आलनपुर।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर

(पीपाड़ शहर 18 जनवरी, 2011 वर्षीतप पारणक सूची)

बैंगलोर-श्री चेतनप्रकाशजी डूंगरवाल, श्रीमती कंचनबाई डूंगरवाल, श्रीमती सरोजाबाईजी मूथा, श्रीमती ताराबाईजी रेड, श्रीमती लताबाईजी रेड, श्रीमती लीलाबाईजी लुणावत, श्रीमती चन्द्रप्रभाजी मेहता, श्रीमती वंसताबाईजी सुराणा, श्रीमती इचरजबाईजी चोरड़िया, श्रीमती सुनीताजी दुधेड़िया, श्रीमती कनकाबाईजी मूथा, श्रीमती भंवरीबाईजी संकलेचा, श्रीमती उषाजी भण्डारी, श्रीमती मधुजी श्रीश्रीमाल, श्रीमती विमलाबाईजी भण्डारी, श्रीमती मोहिनीबाईजी कोठारी, श्रीमती धनवन्ती बाईजी धारीवाल, श्रीमती ताराबाईजी कोठारी, श्रीमती लीलाबाईजी कोठारी, श्रीमती गहरीबाईजी दक, श्रीमती लताबाईजी मकाणा, श्रीमती विमलाबाईजी मेहता, श्री बाबूलालजी भण्डारी, श्रीमती सम्पतबाईजी मूथा, श्रीमती कनकलताजी रेड, श्रीमती मंजूजी डागा, श्रीमती संतोषजी गुलेच्छा, श्रीमती ललिताजी सांखला, श्रीमती रेणुजी रांका।

पाली- श्रीमती नयनाजी ललितजी गोलेच्छा, श्री ललितजी गोलेच्छा, श्रीमती विनीताजी राजकुमारजी गोलेच्छा, श्री राजकुमारजी गोलेच्छा, श्रीमती भंवरीदेवीजी गोलेच्छा।

सवाईमाधोपुर- श्रीमती रजनीदेवीजी जैन (राजीबाईजी), श्रीमती संतोषजी जैन, श्रीमती प्रियदर्शनाजी जैन, श्रीमती रूपादेवीजी जैन, श्रीमती राजेशजी जैन, श्रीमती चमेलीदेवीजी जैन।

जोधपुर- श्रीमती सुधाजी लोढ़ा, श्रीमती पुष्पाजी भण्डारी, श्रीमती किरणजी सिंघवी, श्रीमती ज्ञानचन्दजी गुन्देचा, श्रीमती अकलकंवरजी सिंघवी, श्रीमती अमृतजी गिड़िया, श्रीमती छोटाबाईजी दुगड़, श्रीमती छत्रमलजी चोरड़िया, श्रीमती काजलजी अशोकजी चोरड़िया, श्री अशोकजी चोरड़िया, श्रीमती छोटाबाईजी कांकरिया, श्रीमती रेशमीबाईजी देसरला, श्रीमती कमलाजी मोहनोत, श्रीमती पदमबाईजी कांकरिया, श्रीमती प्रेमलताजी भण्डारी।

पीपाड़- श्रीमती कमलाजी उत्तमचन्दजी कोठारी, श्रीमती राजुलजी अशोकजी भण्डारी, श्रीमती रेखाजी लुणावत, श्रीमती चुकीबाईजी किस्तूरजी बागमार, श्री सुमतिचन्दजी मेहता, श्रीमती उगमाबाईजी अमरचन्दजी बोहरा, श्रीमती विमलाजी कमलजी बोहरा, श्रीमती सुमित्राजी धनेन्द्रजी चौधरी, श्रीमती बेबीबाईजी रमेशजी बागमार, श्रीमती शंकुतलाजी प्रकाशजी कोठारी, श्रीमती विमलाजी कमलजी बोहरा, श्रीमती सरलाजी लोढ़ा, श्रीमती कांतिलालजी बोहरा, श्रीमती पुष्पाजी राजेशजी मुणोत, श्रीमती

हेमराजजी मूथा, श्री हेमराजजी मूथा, श्रीमती बंसतीजी गुन्देचा, श्रीमती कंचनजी गुदड़मलजी मुणोत, श्रीमती बसन्तीदेवीजी नेमीचन्दजी कांकरिया, श्रीमती चंचलजी मूथा, श्रीमती विनीताजी, श्रीमती लाडदेवीजी मोहनलालजी बोहरा।

बंगारपेट- श्रीमती ताराबाईजी नाहटा, श्रीमती नाहटा।

चेन्नई- श्रीमती उषाजी श्रेणिकजी चोरड़िया, श्री श्रेणिकजी चोरड़िया, श्रीमती मनोहरबाईजी कोठारी, श्रीमती पदमाबाईजी लोढ़ा, श्रीमती माणकबाईजी बेताला, श्रीमती मनोहरबाईजी ललवाणी, श्रीमती इचरजबाईजी श्रीश्रीमाल, श्रीमती मोहिनीबाईजी बागरेचा, श्री मदनलालजी बोहरा, श्रीमती मैनादेवीजी मदनलालजी बोहरा, श्रीमती शर्मिलाजी मांगीलालजी चोरड़िया।

जयपुर- श्रीमती पारसजी हीरावत, श्रीमती बिमलाजी सुराणा, श्रीमती विजयाजी चोरड़िया, श्रीमती पूनमजी जैन, श्रीमती सुराणा, श्रीमती वीरबालाजी कोचर, श्रीमती कंचनजी कोठारी।

अलवर- श्रीमती मंजूजी पालावत, श्रीमती निर्मलाजी संचेती।

बीकानेर- श्रीमती मैनादेवीजी ढड्ढा, श्रीमती राजकुमारीजी सुराणा।

हैदराबाद- श्रीमती पदमाजी गौतमजी गुगलिया, श्रीमती भंवरलालजी बोहरा, श्रीमती सुनीताजी सज्जनजी मोहनोत, श्रीमती जयाजी रमेशजी जागीरदार, श्रीमती शांतिदेवीजी चुन्नीलालजी संकलेचा, श्रीमती पुखराजजी सुमेरमलजी संकलेचा, श्रीमती पुष्पाजी रसिकलालजी मरड़िया, श्रीमती गुणीदेवीजी किशोरजी हिरण, श्रीमती पुष्पाजी गणपतजी भण्डारी।

मेड़तासिटी- श्रीमती शांतिबाईजी ललवाणी, श्रीमती पारसकंवरजी डोसी।

कोलकाता- श्री हस्तीमलजी सुराणा, श्रीमती बसन्तीदेवीजी सुराणा।

भोपालगढ़- श्रीमती कंचनजी कांकरिया, श्रीमती प्रेमलताजी बोथरा, श्रीमती हेमलताजी बोथरा।

अन्य- श्रीमती मंजूजी नाहर-अजमेर, श्रीमती सतीश जी जैन-नदबई, श्रीमती रेखाजी जीवनलालजी रूणवाल-बीजापुर, श्रीमती लाडकंवर जी लोढ़ा-कानपुर, श्रीमती ललिताबाईजी धोका-मैसूर, श्रीमती सोहनदेवीजी, शिल्पाजी (वैरागन), श्रीमती नीताजी बेताला-खाटू, श्रीमती इचरजदेवीजी-खाटू, श्रीमती विजयाजी चोरड़िया-दिल्ली, श्रीमती सरलाजी छाजेड़-गांधीधाम, श्रीमती ताराबाईजी गोगड़-आगोलाई, श्रीमती इन्द्राजी नवरत्नजी-ब्यावर, श्रीमती विमलाजी जैन-धनोप, श्रीमती इन्दूजी कांतिलालजी बाफना-पालनपुर, श्रीमती शांतिदेवीजी गुलेच्छा-बालोतरा, श्रीमती रतनलालजी भण्डारी-मुम्बई।

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 फरवरी, 2011)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	पीपाड़ शहर से विहार कर कोसाणा, चौकड़ी, खवासपुरा,गोटन, लाम्बा होते हुए 2 फरवरी को मेड़ता पधारे हैं।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 10	:	धर्मनगरी पीपाड़ शहर में सुख शांतिपूर्वक विराजमान हैं।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा	:	सामायिक-स्वाध्याय भवन घोड़ों का चौक, जोधपुर में विराजमान हैं।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	:	मसूदा जिला-अजमेर में सुख साता पूर्वक विराजमान हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	:	मध्यप्रदेश क्षेत्र में विचरण करते हुए करेली पधारे हैं।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	:	सुराणा मार्केट, पाली में धर्मप्रभावना कर रहे हैं।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा	:	जयपुर के विभिन्न उपनगरों को फरसते हुए श्यामनगर विराज रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	:	पीपाड़ शहर से विहार कर कोसाणा, खवासपुरा होते हुए मेड़ता पधारे हैं।
सेवाभावी महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा	:	पीपाड़ शहर से विहार कर कोसाणा होते हुए गोटन पधारे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा	:	कर्नाटक के वज्रपाली, बेसमंगल आदि क्षेत्रों को फरसते हुए गुडियातम विराज रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा	:	रतलाम से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए उज्जैन पधारे हैं।

महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा	:	अजमेर में धर्मप्रभावना कर मदनगंज पधारे। यहाँ से शिवाजी नगर होते हुए किशनगढ़ पधारे हैं।
महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा	:	सुखसाता पूर्वक पीपाड़ शहर विराज रहे हैं।
महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा	:	सुखसाता पूर्वक जलगाँव विराज रहे हैं।

आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी समापन-समारोह पर विभिन्न कार्यक्रम

16 जनवरी को गुणी अभिनन्दन एवं सम्मान समारोह

राजस्थान के मुख्यमंत्री का उद्‌बोधन

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द जी म.सा. प्रभृति सन्तवृन्द एवं व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में अध्यात्मयोगी परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज के जन्म-शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष का समापन कार्यक्रम 16 से 19 जनवरी 2011 तक आचार्य हस्ती की जन्म-स्थली पीपाड़शहर में स्वाध्याय, सामायिक, तेले की तपस्या, वर्षीतप के पारणक एवं गुणी-अभिनन्दन आदि कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ। पीपाड़ में इस अवसर पर देश के विभिन्न ग्राम-नगरों से श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने उपस्थित होकर तप-त्याग एवं सामायिक-स्वाध्याय के साथ अपनी प्रगाढ़ आस्था एवं अविचल श्रद्धा की अभिव्यक्ति दी। पीपाड़ के जैन- जैनेतर लोग भी इस अवसर पर समुपस्थित थे। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी समिति के अनुसार 16 जनवरी को गुणी-अभिनन्दन एवं सम्मान-समारोह का कार्यक्रम निर्धारित किया गया। 17 जनवरी को स्वाध्याय संघ का अधिवेशन रखा गया। 18 जनवरी को पूज्य प्रवर की जन्म-शती की पूर्णता पर गुणानुवाद के साथ तप-त्याग के कार्यक्रम रखे गए। 16 से 18 जनवरी तक तेले की तपस्या हुई। 19 जनवरी को वर्षीतप पारणक का कार्यक्रम रखा गया।

16 जनवरी को पूज्य प्रवरों के प्रवचनों के अनन्तर गुणी-अभिनन्दन एवं सम्मान-समारोह में राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत को मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया। श्री आर.आर.भण्डारी (सेवानिवृत्त सदस्य, यान्त्रिक रेलवे बोर्ड) एवं श्री शान्तिलाल जी जांगडा (चेयरमेन, नगरपालिका पीपाड़ शहर) विशिष्ट अतिथि थे। अध्यक्षता संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने की।

प्रवचन पश्चात् मध्याह्न में 1 बजे आयोजित गुणी-अभिनन्दन एवं सम्मान-समारोह में मंच के सामने आमन्त्रित महानुभावों, संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों, पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों, प्रेस व प्रिण्ट मीडिया के बैठने का स्थान पूर्व से आरक्षित रखा गया। श्री ओसवाल लोड़े साजन विकास केन्द्र (कोट) के विशाल प्रांगण में श्वेत-धवल विशाल पाण्डाल को आकर्षक रूप से तैयार करवाया गया।

मुख्यमंत्री महोदय पीपाड़ आवागमन के साथ सबसे पहले परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि संत-मुनिराजों के दर्शनार्थ श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत स्वाध्याय भवन पहुँचे। **मुख्यमंत्री महोदय** ने आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-मुनिराजों के दर्शन-वन्दन के साथ आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के श्रीचरणों में निवेदन किया कि मैंने पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का समय-समय पर आशीर्वाद लिया एवं उनका मार्गदर्शन प्राप्त किया। आचार्यश्री हस्ती पीपाड़ के थे, आप भी पीपाड़ के हैं, आप मुझे आशीर्वाद दें। आचार्यश्री ने आज की प्रमुख समस्याओं का कारण व्यसन बताया और जोर देकर कहा कि अहिंसा-सत्य-सदाचार की भावना बच्चों में प्रारम्भ से भरने पर वे अच्छे नागरिक बन सकते हैं, अतः नैतिक शिक्षा के साथ संस्कार निर्माण हेतु आप ध्यान दें। अपराधों में बढ़ोतरी का कारण नशा है। नशा जीवन का नाश तो करता ही है, समाज और देश-प्रदेश में अशांति, आपाधापी और अन्याय-अत्याचार को बढ़ावा देने वाला है। मुख्यमंत्री महोदय ने एक-एक बात बहुत ध्यान से सुनी और पीपाड़ में आकर धर्माचार्य-धर्मगुरुओं की सन्निधि को बहुत लाभप्रद बताया।

आचार्यश्री-उपाध्यायश्री आदि संतों के समागम के तुरन्त पश्चात् मुख्यमंत्री महोदय सीधे **श्री ओसवाल लोड़े साजन विकास केन्द्र (कोट)** पहुँचे जहाँ पीपाड़ के एवं आगत ग्राम-नगरों के हजारों लोगों ने हर्ष-हर्ष, जय-जय के

गगनभेदी जयनाद कर मुख्यमंत्री का स्वागत किया। मुख्यमंत्री रत्नसंघ के संरक्षक मण्डल के चेयरपर्सन **श्री मोफतराजजी मुणोत**, रत्नसंघ के **राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा** के साथ मंच पर पधारे। कार्यक्रम संयोजक **श्री सुमतिचन्दजी मेहता** ने मुख्य अतिथि-विशिष्ट अतिथियों एवं समारोह की अध्यक्षता के लिए बोथरा साहब से आसन सुशोभित करने का अनुरोध किया।

संघ संरक्षक मण्डल के चेयरपर्सन श्री मोफतराजजी मुणोत, शासन सेवा समिति के संयोजक **श्री रतनलालजी बाफना**, संघ संरक्षक **श्री डी. आर. मेहता साहब**, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष **श्री पी. एस. सुराना साहब**, आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी समिति के संयोजक **श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना**, संघ महामंत्री **श्री पूरणराजजी अबानी**, स्थानीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष **श्री छगनमलजी मूथा** को मंच पर आसन सुशोभित करने का अनुरोध किया।

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी समिति के ऊर्जावान सह-संयोजक **डॉ. अशोक जी कवाड़** ने मंगलाचरण की सुन्दर प्रस्तुति दी। स्थानीय बालिका विद्यालय की छात्राओं ने सुमधुर स्वर में स्वागत-गीत के माध्यम से अतिथियों का स्वागत किया।

संघ-संरक्षक मण्डल के चेयरपर्सन, पीपाड़-विकास के महारथी **उदारमना श्री मोफतराजजी मुणोत** ने अपने स्वागत-भाषण में माननीय मुख्यमंत्री, अतिथियों, संघ व संघ के पदाधिकारियों, आगत मेहमानों, प्रशासन व पुलिस अधिकारियों, राजनेताओं , समाज-सेवियों, सकल जैन समाज के सुज्ञ श्रावकों के साथ पीपाड़शहर और पीपाड़शहर के आसपास के ग्राम-नगरों के भाई-बहिनों का आत्मीयता के साथ स्वागत किया। मुणोत साहब ने गुरु हस्ती की शताब्दी के समापन-समारोह पर आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द की सन्निधि के लिए अन्तर्मन से हर्ष व्यक्त करते कहा कि उस दिव्य-दिवाकर की शताब्दी हम अध्यात्म चेतना वर्ष के रूप में मना रहे हैं, इस पावन प्रसंग पर रत्नसंघ के सभी संतरत्नों का और महासती मण्डल की कई साध्वियों का पीपाड़वासी भावनापूर्वक लाभ ले रहे है, ऐसा अनमोल अवसर शायद अधिकांश लोगों ने पहली बार देखा है।

अध्यात्म चेतना वर्ष के समापन पर हमने राजस्थान के मुख्यमंत्री माननीय श्री अशोकजी गहलोत से निवेदन किया तो गुरु हस्ती-गुरु हीरा के प्रति श्रद्धा के

कारण और पीपाड़ को अपना दूसरा घर मानने के कारण हमारे निवेदन को अपनी व्यस्तता में मान्य किया, मैं मुख्यमंत्री महोदय का मेरी ओर से, रत्नसंघ की ओर से सकल जैन समाज की ओर से ओर पीपाड़ नगर की ओर से हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन करता हूँ।

मुणोत साहब ने मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री की ओर मुखातिब होकर कहा- आप राजस्थान के लोकप्रिय-यशस्वी मुख्यमंत्री हैं, आप गाँधीवादी हैं, नैतिक मूल्यों के प्रबल पोषक हैं गांव-गरीब के साथ राजस्थान के विकास के लिए कटिबद्ध हैं। गुरु हस्ती का आपके जीवन पर प्रभाव है। आचार्यश्री-उपाध्यायश्री से आज आपने कई विषयों पर सार्थक चर्चा की है, आपने राजस्थान में अमन-चैन बनाए रखा है, मैं आपके समक्ष पीपाड़ की कतिपय समस्याएँ रख रहा हूँ। आप पीपाड़ को अपना कर्म क्षेत्र और दूसरा घर मानते हैं, इसलिए पीपाड़ के विकास में आपका पूरा ध्यान अपेक्षित है। कॉलेज-स्कूल में वाणिज्य और विज्ञान विषय नहीं है, इसी प्रकार अस्पताल तो है, किन्तु पीपाड़ के साथ कई-कई गांव यहाँ के अस्पताल की सेवाएँ लेते हैं, इसलिए उसे क्रमोन्नत करें।

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी के प्रसंग को लेकर मुणोत साहब ने कहा कि आपने निमाज में गुरु हस्ती का संथारा देखा है। तेरह दिवसीय संथारे में वहाँ के मुस्लिम भाइयों ने स्वयं मांसाहार नहीं करने और पशुवध नहीं करने का संकल्प किया और निभाया भी। आपकी अहिंसा के प्रति सदा से शुभभावना रही है। हमारी मांग है कि **आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा के जन्म-दिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी पर स्थाई अगते की घोषणा करें।**

मुणोत साहब के शब्दों से स्वागत के पश्चात मुख्य अतिथि-विशिष्ट अतिथियों का माल्यार्पण से स्वागत, शॉल ओढ़ाकर सत्कार, साफा पहनाकर बहुमान और स्मृति-चिन्ह भेंटकर अभिनन्दन किया गया। स्वागत-सत्कार में संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों व विभिन्न स्थानों से पधारे संघ के गणमान्य श्रावकों को प्राथमिकता दी गई।

रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय **श्री सुमेरसिंह जी बोथरा** ने गुरु हस्ती-गुरु हीरा की जन्म-भूमि में आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी समारोह के इस कार्यक्रम में संघ-समाज की प्रतिभाओं का सम्मान करने को अनुपम आदर्श बताते कहा कि मुख्यमंत्री महोदय ने हमारे कार्यक्रम में भाग लेकर हमारी भावना का समादर किया है। विशिष्ट अतिथियों के साथ सकल जैन समाज के उत्साह पर प्रमोद

व्यक्त करते हुए बोथरा साहब ने उपस्थित विशाल जनमेदिनी को शान्तभाव से समारोह में भाग लेने पर बधाई दी।

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी के संयोजक **श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना** ने गुरु हस्ती के व्यक्तित्व-कृतित्व को रेखांकित करते उस दिव्य-दिवाकर के अनेकानेक कीर्तिमानों का, विशेषताओं का उल्लेख किया।

गुणी-अभिनन्दन एवं सम्मान-समारोह के अन्तर्गत सर्वप्रथम **आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान-2010** के लिए पीपाड़ गौरव काव्य-प्रतिभा के धनी, सरलता की प्रतिमूर्ति **श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली** का 'मुक्ति का राही' रचना हेतु समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान गौरव माननीय श्री अशोकजी गहलोत ने माल्यार्पण, शॉल, रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन एवं सम्मान राशि 51,000/- भेंट कर सम्मानित किया।

युवा प्रतिभा शोध-साधना-सेवा सम्मान-2010 के लिए दो युवारत्न बन्धुओं का सम्मान किया गया। **श्री निर्मलजी ओस्तवाल-गोटन** का सम्पूर्ण भारत में सी.ए. की परीक्षा में सर्वोच्च अंक अर्जित कर प्रथम वरीयता प्राप्त करने पर मुख्य अतिथि ने अपने कर-कमलों से माल्यार्पण, शॉल एवं रजत पट्टिका के साथ 21,000/- की राशि प्रदान कर सम्मानित किया। युवारत्न **वैज्ञानिक डॉ. महावीरजी गोलेच्छा मूल निवासी बालोतरा** ने श्वास, दमा एवं मस्तिष्कीय रोगों के अनुसंधान में महत्त्वपूर्ण योगदान देकर कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं। ऐसे होनहार युवारत्न डॉ.गोलेच्छा का मुख्यमंत्री महोदय द्वारा माल्यार्पण, शॉल एवं रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन व सम्मान राशि 21,000/- प्रदान कर सार्वजनिक सम्मान किया गया।

स्वाध्यायी सम्मान के अन्तर्गत प्रतिवर्ष तीन विशिष्ट स्वाध्यायियों जिनमें एक वरिष्ठ स्वाध्यायी, एक महिला स्वाध्यायी और एक युवा स्वाध्यायी को सम्मानित किया जाता है। स्वाध्यायी सम्मान में प्रत्येक को 21,000/- रूपये का प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जाता है। इस वर्ष **डॉ. पदमचन्दजी मुणोत-जयपुर, श्रीमती मोहनकौरजी जैन- जोधपुर** एवं **युवारत्न श्री राकेशकुमारजी जैन-सुमेरगंजमण्डी** को विशिष्ट अतिथि श्री आर. आर. भण्डारी ने सम्मानित किया।

इसके अनन्तर पीपाड़ की ओर से पीपाड़ के देदीप्यमान नक्षत्र, मुणोत कुलभूषण संघ-सेवा शिरोमणि माननीय **श्री मोफतराजजी मुणोत** को रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन पत्र मुख्यमंत्री एवं पीपाड़ के प्रबुद्धजनों ने समर्पित

किया। अभिनन्दन पट्टिका का वाचन संघ के अतिरिक्त महामंत्री **श्री नौरतनजी मेहता** ने किया।

विशिष्ट अतिथि **श्री शांतिलालजी जांगड़ा** ने स्वागत के दो बोल प्रस्तुत कर मुख्यमंत्री से पीपाड़ के सर्वाङ्गीण विकास में सहयोग करने की बात प्रमुखता से रखी। विशिष्ट अतिथि **श्री आर. आर. भण्डारी** ने गुरु हस्ती के विशिष्ट कीर्तिमानों आदि शंकराचार्य से तुलना करके उस महापुरूष के प्रति अपनी दृढ़ आस्था व्यक्त की एवं उस दिव्य दिवाकर के शताब्दी समारोह के सुन्दर एवं भव्य आयोजन के लिए आभार प्रदर्शित किया।

गुरु हस्ती के दर्शनों को अपना सौभाग्य बताते हुए **मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत** ने कहा उस महापुरुष ने जन्म से लेकर देवलोकगमन तक कई कीर्तिमान कायम किए। दस वर्ष की अवस्था में दीक्षा लेना, पन्द्रह वर्ष में आचार्य पद पर मनोनयन, बीस वर्ष में आचार्य पद प्राप्त होना कीर्तिमान से कम नहीं है। मैंने निमाज में संथारे के समय दर्शन किए। हजारों लोग रोज कतार में लगकर दर्शन करते। उस महापुरुष के श्रीचरणों में जब भी गया मुझे शांति मिली, साथ-ही-साथ उनके मार्गदर्शन से मुझे गांव-गरीब और प्रदेश की सेवा में ताकत मिली। वे सच्चे साधक थे। उनका जीवन बोलता था। मैं गुरु हस्ती ओर इस भूमि को प्रणाम करता हूँ।

पीपाड़ के प्रति मेरा शुरू से लगाव रहा है। मैंने सबसे पहले काम यहीं से शुरू किया। यह भूमि मेरी पहली कर्मस्थली है। इस माटी की सुगन्ध कहिये, आचार्यश्री की सद्शिक्षाएँ कहिये, मैं पीपाड़ को अपना घर मानता हूँ। मुणोत साहब ने स्कूल में वाणिज्य विषय खोलने, अस्पताल को क्रमोन्नत करने, पौष शुक्ला चतुर्दशी पर स्थाई अगता रखने की मांग की। पीपाड़ में कॉमर्स खोलने की घोषणा करता हूँ। पीपाड़ में अस्पताल है, लेकिन यहाँ सौ के लगभग आसपास के गांव लगते हैं। मैं पहले तीस बेड के अस्पताल को पचास बेड करने की घोषणा करता हूँ, अगले बजट में अस्पताल विस्तार की बात पर विचार करने का लक्ष्य रहेगा। पौष शुक्ला चतुर्दशी पर अगते की घोषणा करने के लिए मैं मंत्रीमण्डल में विचार करके कुछ कह पाऊँगा। मैं इस बारे में विचार करने का आश्वासन देता हूँ।

मुख्यमंत्री भाषण समाप्त कर सीधे कॉलेज प्रांगण जहाँ हेलीकॉप्टर लैण्ड किया हुआ था, पहुँचे और जयपुर के लिए प्रस्थान किया।

कार्यक्रम संयोजक ने पूर्व में सूचना कर दी थी कि मुख्यमंत्री महोदय के प्रस्थान पश्चात् भी कार्यक्रम गतिमान रहेगा, आप अपने स्थान पर विराजे रहें, अतः

जैन समाज सहित कई भाई-बहिन कार्यक्रम समाप्ति तक कार्यक्रम का आनन्द लेते रहे।

मुख्यमंत्री महोदय के जाने के पश्चात् संघ स्तर पर आयोज्य गुणी-अभिनन्दन के अन्तर्गत बहुविध संघ-सेवियों का माल्यार्पण, शॉल और रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन देकर उनकी सेवाओं के प्रति सम्मान किया गया। तप-साधना में जयपुर के तपस्वी श्रावक श्री पूनमचन्द जी दुग्गड़ जिन्होंने करीब दो दर्जन मासखमण किए हैं उनका अभिनन्दन किया गया। बालोतरा के **श्री हनुमानचन्दजी सालेचा जागीरदार** ने अपनी दो सुपौत्रियों को दीक्षा तो दी ही, स्वधर्मी वात्सल्य सेवा में पूरे परिवार का सहयोग रहा, अतः उनका स्वधर्मी वात्सल्य सेवा के लिए अभिनन्दन किया गया। संत-सतीवृन्द के श्रमणोचित औषधोपचार में सेवाभावना के कारण जोधपुर के प्रतिष्ठित चिकित्सक **डॉ. एस. सी. सिंघवी** का अभिनन्दन किया गया। सूरत के युवारत्न बन्धु **श्री राजीवजी नाहर** का संघ-सेवा के प्रति योगदान के उपलक्ष्य में अभिनन्दन किया गया। आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी पर कार्यक्रमों की प्रभावी क्रियान्विति और प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान के फलस्वरूप युवारत्न **श्री श्रीपालजी देशलहरा** का चयन किया गया, किन्तु हैदराबाद में आचार्य श्री जन्म-शताब्दी के समापन में व्यस्तता के कारण वे स्वयं उपस्थित नहीं हो सके।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के तत्त्वावधान में 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं खुली पुस्तक प्रतियोगिता' की लिखित परीक्षा में प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं को 1,00,000/- एवं 41,000-41,000/-रुपये के प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये गये।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित साहित्य जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1,2,3 व 4 का संक्षिप्तीकरण करके नई पुस्तकें प्रकाशित की गई, साथ ही 'अहोभाव के आंसू' व 'जीवन का संध्याकाल, आंखों देखा हाल' पुस्तकों का विमोचन मुख्यमंत्री के कर-कमलों से करवाया जा चुका था, अतः मण्डल की अन्य शेष पुस्तकों का विमोचन करवाया गया। पुस्तकों के प्रकाशन में मण्डल अध्यक्ष श्री पी. एस. सुराना साहब, कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराजजी चौधरी एवं प्रकाशन में उल्लेखनीय योगदान हेतु पीपाड़ गौरव डॉ. आर. पी. आर्य, डायरेक्टर राजस्थान मेप सर्विस, जोधपुर के सहयोग के लिए साधुवाद-धन्यवाद ज्ञापित करते हुए समारोह के अध्यक्ष आदरणीय **श्री सुमेरसिंहजी बोथरा** ने

पुस्तकों का विमोचन किया।

आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान से सम्मानित पीपाड़ गौरव **श्री सम्पतराजजी चौधरी** ने गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते कहा कि गुरुकृपा से मैंने काव्य में जो गुरु का जीवन-चरित्र संजोया है, यह सब गुरु हस्ती की अदृश्य कृपा का अनुपम उदाहरण है। संघ ने मेरा सम्मान किया, सम्मान की मेरी भावना नहीं थी, किन्तु संघ आदेश को मुझे शिरोधार्य करना पड़ा। युवा प्रतिभा-शोध-साधना सेवा सम्मान सें सम्मानित **युवा वैज्ञानिक डॉ. महावीरजी गोलेच्छा**, बालोतरा ने कहा कि मुझ पर गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा की कृपा है। गुरु हीरा की प्रेरणा से ही विदेशों में भी अपने जीवन को जहाँ डिगने के कई आकर्षण होते हैं, मैं धर्म व संस्कृति से विमुख नहीं हुआ। सम्मान प्राप्त करने से संघ के प्रति मेरी जिम्मेदारी बढ़ गई है जिसे मैं यथाशक्ति पूरी करने का प्रयास करूंगा। सम्मानित अन्य महानुभावों ने भी संक्षिप्त, किन्तु सारगर्भित शब्दों में अपने मनोभाव रखे।

संघ महामंत्री **श्री पूरणराजजी अबानी** ने धन्यवाद ज्ञापित किया। आवश्यक सूचनाओं के प्रसारण के साथ कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

17 जनवरी को स्वाध्याय दिवस एवं स्वाध्याय संघ का राष्ट्रीय अधिवेशन

आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी वर्ष के समापन समारोह के द्वितीय दिन 17 जनवरी को आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए **आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म. सा.** ने कहा कि साधक और साधना के दो बड़े आधार हैं - सामायिक और स्वाध्याय। स्वाध्याय एक दीपक है, जो हमें हेय और उपादेय का ज्ञान कराता है। दीपक राह बताता है, जीवन के उत्थान-पतन का मार्ग स्पष्ट करता है। स्वाध्याय जीवन की खुराक है। इसलिए स्वाध्याय रोज करना चाहिये, निरन्तर करना चाहिये। सतत स्वाध्याय से कषाय दूर होते हैं, मन के ताप और सन्ताप मिटते हैं। भव-भव का रोग मिटाने के लिए स्वाध्याय रामबाण औषधि है। यह मन के मैल को साफ करता है। यह रोगों का हरणं करने वाली संजीवनी है। इसलिए, दिन में आधा घण्टा ही सही, स्वाध्याय तो अवश्य करना चाहिये। कैसी भी स्थिति में, कहीं भी, किसी भी उम्र में; बुढ़ापा हो, रोग हो, तब भी सोये-सोये भी स्वाध्याय करो, लेकिन करो जरूर। साधक की तीन श्रेणियां हैं - सम्यक् दृष्टि श्रावक, व्रतधारी श्रावक और साधु। स्वाध्याय सबके जीवन में नई चेतना का संचार करता है।

स्वाध्याय मिथ्यादृष्टि जीव को भी सम्यक् दृष्टि प्रदान करने की क्षमता रखता है। स्वाध्याय करने-कराने का अर्थ है - अमृत को पीना-पिलाना।

मधुरव्याख्यानी श्री गौतम मुनि जी कहा कि आज विज्ञान का युग है। सर्वत्र विज्ञान का बोलबाला है। विज्ञान ने साधन तो दिये, लेकिन समाधान नहीं दिया। विज्ञान से सुविधा तो मिली, लेकिन समाधि नहीं मिली। देखने-सुनने में आता है कि सुविधा-सम्पन्न लोग भी आत्महत्या कर लेते हैं। इसका तात्पर्य है कि उनके जीवन में साधन तो रहे, लेकिन साधना नहीं थी, जीने की कला नहीं थी। आज जैनत्व का गौरव गिरता जा रहा है। गोटन के अन्तर्राष्ट्रीय विद्यालय और छात्रावास में विद्यार्थी चौबीस तीर्थंकरों के नाम भी नहीं जानते। आखिर, कहाँ कमजोरी है। घर-घर में स्वाध्याय होने लग जाए तो सारा परिदृश्य बदल सकता है। स्वाध्याय से संस्कृति का रक्षण होता है, सिद्धान्तों का रक्षण होता है। देव, गुरु और धर्म के प्रति निष्ठा भी गहरी होती है। सौ तालों की एक चाबी है - स्वाध्याय। सामायिक और स्वाध्याय में बत्तीस आगमों का निचोड़ आ जाता है। इसलिए हमें सामायिक और स्वाध्याय से निरन्तर जुड़े रहना है।

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी ने कहा कि सर्वज्ञ भगवान की वाणी पर भरोसा और तदनुरूप आचरण जीवन को नव आलोक से भर देता है। यह तन पराया है और चेतन अपना है, यह बोध ही सम्यग्दर्शन है। स्वाध्याय सम्यग्दर्शन को पुष्ट करता है। आज का दिन स्वाध्याय दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। श्रेष्ठ ग्रंथों का अध्ययन करना स्वाध्याय की पहली सीढ़ी है तथा अपने द्वारा अपना अध्ययन दूसरी सीढ़ी है। ग्रंथों का अध्ययन हो या स्वयं का, गुरु का योग उसे अधिक फलदायी और प्रभावी बना देता है। इसीलिए गुरु के प्रति आस्था और निष्ठा की बात कही जाती है। एक लोक प्रचलित दोहा है -

गुरु से कपट, मित्र से चोरी।
या हो निर्धन या हो कोढ़ी।

जैसे चिकित्सक से तन के रोग नहीं छिपाए जाते हैं, वैसे ही गुरु से मन की कमियाँ और कमजोरियाँ नहीं छिपानी चाहिये। गुरु की अधीनता से श्रुत धर्म और चारित्र धर्म की प्राप्ति में बड़ा सहयोग मिलता है। श्रुत और चारित्र धर्म की आराधना करते हुए जीव को अपनी अपरिमित शक्तियों का भान होता है। उसे इस बात पर विश्वास होता है कि "मैं स्वयं भगवान हूँ।" लेकिन ऐसे विश्वास के लिए अपने आप को विशुद्ध बनाना होगा। स्व की साधना के बाद संघ-सेवा का महत्व भी बढ़

जाता है। स्व को समझे बिना कार्य करने वाले धर्मसंघ में भी अर्थ को अनावश्यक महत्त्व देने लगते हैं। अर्थ हमारा साधन है, साध्य नहीं। साध्य तो केवल आत्मार्थ ही है। स्वाध्याय उस आत्मार्थ को उपलब्ध होने का एक सशक्त उपाय है।

राष्ट्रीय अधिवेशन

सम्पूर्ण भारतवर्ष में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के लगभग 1200 स्वाध्यायी सदस्य हैं। इनमें से लगभग 450 स्वाध्यायी प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व में अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं तथा स्वाध्याय संघ की अन्य गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से योगदान देते हैं। सभी स्वाध्यायी एक-दूसरे से परिचित हों तथा स्वाध्याय संघ की प्रगति हेतु अपना मार्गदर्शन दे सकें, एतदर्थ स्वाध्यायियों का राष्ट्रीय अधिवेशन 17 जनवरी 2011 को पीपाड़ शहर में आयोजित किया गया। 11 जनवरी से प्रारम्भ स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का समापन भी इसी के साथ रखा गया।

पीपाड़ संघ द्वारा सुनियोजित पांडाल में दोपहर 1 बजे अधिवेशन कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। मंच संचालक **श्री प्रकाश जी सालेचा** ने अधिवेशन के प्रमुख वक्ता एवं शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना, संरक्षक न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा, आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी समिति के संयोजक श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, संघ महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी, स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री नवरतन जी डागा, पूर्व संयोजक श्री पदमचन्द जी मुणोत, श्री नवरतनमल जी डोसी, श्री चंचलमल जी चोरडिया, श्रीमती सुशीला जी बोहरा, सचिव श्री राजेश जी भंडारी, शताब्दी समिति के सह संयोजक श्री अशोक जी कवाड़, श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती मधु जी सुराणा, युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा, स्थानीय संघ अध्यक्ष श्री छगनमल जी मुथा एवं मंत्री श्री सुमतिचन्द जी मेहता को मंच पर आमंत्रित किया। फत्तेपुर से पधारी स्वाध्यायी सुश्री पूजा जी तालेरा एवं उनकी सहयोगियों ने मंगलाचरण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। तत्पश्चात् स्वाध्याय संघ के संयोजक **नवरतन जी डागा** ने पधारे हुए सभी अतिथिगणों, शाखा संयोजकों, स्वाध्यायियों एवं आगन्तुकों का स्वागत करते हुए स्वाध्याय संघ की स्थापना से लेकर अब तक की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने सभी स्वाध्यायियों को संघ से सक्रिय रूप से जुड़े रहने की प्रेरणा की। डागा जी ने कहा कि आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी

म.सा. ने सन् 1960 के मेड़ता चातुर्मास में ''जीवनदानी साधक वर्ग'' तैयार करने हेतु चिन्तन किया तथा 1971 में अजमेर में इस हेतु संघ के समक्ष योजना रखी। उस समय इस पर उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई। स्वाध्यायी अधिवेशन के अवसर पर उन्होंने ''जीवनदानी स्वाध्यायी'' तैयार करने हेतु आह्वान किया।

शिविर समापन-कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए स्वाध्याय संघ कार्यालय-प्रभारी श्री कमलेश जी मेहता ने शिविर की सम्पूर्ण रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए परीक्षा का परिणाम भी घोषित किया। विभिन्न कक्षाओं में वरीयता प्राप्त स्वाध्यायियों को अतिथियों के कर-कमलों से पुरस्कृत किया गया। शिविरार्थी स्वाध्यायियों में से श्री दिलरूपचन्द जी भण्डारी, सुश्री निधि सुराणा, श्री अमित जैन, सुश्री जयमाला जैन, सुश्री शिल्पा जी गांधी तथा सुश्री कोमल बाघमार ने इस अवसर पर गद्य-पद्य में शिविर अनुभव प्रकट किए। शिविर अध्यापक श्री त्रिलोकचन्द जी जैन ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। शिविर में अध्यापन सेवाएं प्रदान करने वाले सभी अध्यापकों को मंच पर सम्मानित किया गया। सुश्री मानसी जैन सुपुत्री श्रीमती प्रीति-चन्द्रप्रकाश जी कांकरिया को 7 वर्ष की उम्र में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करने पर सम्मानित किया गया। शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन ने परीक्षाओं की जानकारी देते हुए शिक्षण बोर्ड परीक्षा में स्वर्ण-पदक प्राप्त करने वाले तथा नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं परीक्षा में वरीयता प्राप्त परीक्षार्थियों को अतिथियों के कर-कमलों से सम्मानित करवाया।

अधिवेशन कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए स्वाध्याय संघ के संयोजक एवं सचिव पद पर पूर्व में सेवा प्रदान करने वाले महानुभावों को मंच पर आमंत्रित किया गया तथा माननीय अतिथियों द्वारा उन्हें उनकी उत्कृष्ट सेवाओं हेतु प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। स्वाध्याय संघ की विभिन्न शाखाओं के शाखा संयोजकों को भी प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

संचालक जी ने कार्यक्रम को गति प्रदान करते हुए प्रमुख वक्ता एवं शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना को मंच पर आमंत्रित किया। आदरणीय बाफना साहब ने स्वाध्यायियों को प्रेरित करते हुए अपने उद्बोधन में स्वाध्यायी किस तरह से अपनी योग्यता को बढ़ाए, इस हेतु कई सूत्र प्रदान किए। बाफना साहब के उद्बोधन के पश्चात् खुली चर्चा रखी गयी। पधारे हुए स्वाध्यायियों से स्वाध्याय संघ की प्रगति बाबत सुझाव आमंत्रित किए गए तथा समस्याओं को भी रखने का निवेदन किया गया। स्वाध्यायियों ने इस खुली चर्चा में

अपने सुझाव एवं समस्याएं रखी जिनका संयोजक श्री नवरतन जी डागा ने समाधान देते हुए परिणति हेतु सहमति दी।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष **श्री पी. शिखरमल जी सुराणा** ने अपनी चिर-परिचित शैली में स्वाध्यायियों को मार्गदर्शन प्रदान किया।

अधिवेशन के अवसर पर पर्युषण पर्व में बाहर क्षेत्रों में जाकर 20 वर्ष एवं 10 वर्ष से अधिक सेवा प्रदान करने वाले वरिष्ठ स्वाध्यायियों को रजत-पदक से सम्मानित किया गया।

अधिवेशन के अंत में सचिव श्री राजेश जी भंडारी ने सभागत अतिथियों, स्वाध्यायियों एवं आगन्तुकों का सम्मेलन में पधारने हेतु आभार प्रकट किया तथा पीपाड़ श्रीसंघ को सुन्दर व्यवस्था के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

पौष शुक्ला चतुर्दशी 18 जनवरी : साधना आराधना का भव्य कार्यक्रम

प्रतिवर्ष पौष शुक्ला चतुर्दशी पर मुस्लिम बन्धुओं द्वारा पशुवध एवं मांस-विक्रय के त्याग का संकल्प

अध्यात्मयोगी युगमनीषी जैनाचार्य पूज्य श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. का 101 वां जन्म-दिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी, 18 जनवरी, 2011को गाँव-गाँव, नगर-नगर और महानगरों में अपूर्व उल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य कार्यक्रम पुण्यधरा पीपाड़शहर में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. प्रभृति संत-मुनिराजों तथा व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में त्याग-तप के साथ मनाया गया।

श्री ओसवाल लोढ़े साजन विकास केन्द्र (कोट) में प्रवचन सभा में उपस्थित दो-ढाई हजार लोग सामायिक-साधना में गुरु हस्ती का जन्म-दिवस मनाने और व्रत-प्रत्याख्यान की श्रद्धा समर्पित करने को उत्साही देखे गये। पीपाड़शहर के जैन-जैनेतर भाई-बहिनों के अलावा समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रीसंघों व श्रद्धालुओं की अच्छी उपस्थिति के कारण प्रवचन सभा का नजारा देखते ही बनता था। पीपाड़शहर के माहेश्वरी, स्वर्णकार, माली, राजपूत, ब्राह्मण, दर्जी आदि जाति-बिरादरी के भाई-बहिनों के अलावा कुरैशी और मुस्लिम मतावलम्बी भी प्रवच

सभा में उपस्थित थे। गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति भक्ति-भावना से पीपाड़शहर के सभी वर्गों-जातियों का सत्संग सेवा और संत-समागम में भाग लेना नई बात नहीं है। जैन समाज ने दया-संवर, उपवास-पौषध एवं तप-साधना करके अपनी श्रद्धा व्यक्त की।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए **आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म. सा.** ने कहा कि आचरण अपने आप में भक्ति का रूप होता है। अनन्त उपकारी पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म. सा. के सद्गुणों को मैं जीवन में गहराई से धारण कर सकूं तो उनकी सच्चे रूप में भक्ति कर पाऊंगा। भक्ति का सच्चा स्वरूप आचरण में ही सन्निहित है।

आचार्य हस्ती ने सर्वत्र जोड़ने का कार्य किया। भाई-भाई को एक करने का प्रयास किया, पारस्परिक कलह मिटाया। जहाँ कहीं वे वैर, कटुता, विग्रह आदि देखते, वहाँ एकता, समता और समरसता के लिए प्रयास करते। कभी कहीं उनके प्रयासों को वांछित सफलता नहीं मिलती तो यह मानते कि उनकी पुण्यवानी में कहीं कोई कमी रह गई होगी। बालेसर प्रवास के दौरान उन्होने संघ एकता की अपील की, लेकिन एक पक्ष अनुपस्थित रहा। इस पर उन्होंने अन्नाहार का त्याग करके वहां से विहार कर दिया। उनके त्याग और भावना-बल की जीत हुई। गांव के बाहर एकता हो गई।

आचार्यप्रवर देखते कि हर संघ और परम्परा में मतभेद हैं। मतभेद जब मनभेद के कारण बनते हैं तो समाज की समरसता समाप्त हो जाती है। गुरुदेव आचार्य हस्ती ने सदैव सर्वत्र प्रेम की गंगा बहाई और सबको प्रेम की गंगा बहाने का सन्देश दिया। आचार का मेल नहीं होने से उन्होंने श्रमण संघ से अपने आप को अलग कर लिया, लेकिन श्रमण संघ से प्रेम वैसा ही रखा। कभी कहीं आलोचना नहीं की। वस्तुतः संगठन और एकता ही संघ की नींव है। यदि प्रेम और सौहार्द नहीं होगा तो संघ और जिनशासन आगे नहीं बढ़ पाएगा। जिसके हृदय में सच्ची श्रद्धा-भक्ति का जागरण हो जाता है, वह हमेशा जोड़ने का कार्य करता है, तोड़ने का नहीं।

श्रमण सूर्य मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म. सा. की पुण्यतिथि का भी प्रसंग है। उन्होंने भी जोड़ने का कार्य किया। जीवों को अभयदान देने का कार्य किया। तड़पते-मरते प्राणियों को जीवनदान देना बड़ा पुण्य का कार्य है। दोनों ही महापुरुषों ने जीवदया के खूब कार्य किये। जहाँ रहम है, वहाँ रहीम है। सबसे पहले दया अपने

आप पर करो। यह सजगता रहे कि जीवन में पाप का कोई अंश नहीं आए। आज प्रेम और अहिंसा के इन संस्कारों को दिगदिगन्त में फैलाने की बड़ी जरूरत है। इन संस्कारों का बीजारोपण बचपन से ही होना आवश्यक है। इसके लिए उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक धार्मिक पाठशालाओं की स्थापना आवश्यक है। परसों राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत आए थे। हमने उनको कहा कि **देश में नैतिकता का ह्रास चिन्ताजनक है। नैतिकता की प्रतिष्ठा के लिए शिक्षा-प्रणाली में नैतिकता का अध्ययन अनिवार्य किया जाना चाहिये। जैसे सुन्दर लिखावट के अंक दिये जाते हैं, वैसे ही विद्यार्थी को नैतिकता के अंक भी दिये जाने चाहिये।** नैतिकता और अहिंसा सबकी है। ऐसे जीवन मूल्यों को किसी धर्म या पंथ की सीमाओं में सीमित नहीं करना चाहिये।

इस पावन दिवस पर मेरा आपसे आह्वान है कि व्रत ग्रहण करो, अभयदाता बनो। रंक-राजा, गरीब-अमीर सभी व्रतधारी बन सकते हैं। 18 देशों के गणराजा चेटक भी व्रतधारी थे। परीक्षा की घड़ी में भी उन्होने व्रतों का पालन किया। अतः आचरण ही सच्ची श्रद्धा-भक्ति का सक्रिय रूप है। आचरण के लिए प्रत्याख्यान कीजिये, अपने सुषुप्त पुरुषार्थ को जगाइये। अपनी शक्ति का गोपन करना भी मायाचार है। सामर्थ्य होते हुए भी पुरुषार्थ में कमी रखना कपट है। इसलिए पुरुषार्थ के पथ पर मुस्तैदी से कदम बढ़ाकर आचरण की ऊँचाइयाँ स्पर्श करनी चाहिये।

इस अवसर पर **उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म. सा.** ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि आचार्य हस्ती का जीवन पूर्ण अप्रमत्त था। उनसे अप्रमत्त जीवन जीने की कला सीखनी चाहिये।

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी ने कहा कि आगम-पुरुष आचार्य हस्ती ने जिस श्रद्धा से श्रमण जीवन की शुरूआत की, उसी श्रद्धा से पूरे श्रमण जीवन का निर्वहन किया। वे सरल परिणामी थे, जैसे अन्दर, वैसे बाहर, कथनी-करनी में नितान्त एकरूपता। मोक्ष के अलावा उन्हें कोई चाह नहीं थी। इन्हीं दुर्लभ विषेशताओं की वजह से उनका उत्कृष्ट समाधिमरण हुआ। यह भी अनूठा संयोग है कि पौष सुदी चौदस को मरुधर केशरी श्री मिश्रीमल जी म. सा. की पुण्यतिथि भी है। उन्होंने श्रमण संघ के आचार्य पद के लिए हस्ती गुरु का नाम सुझाया था। वे अपनी साधना में अपनी शक्ति को छुपाने वाले नहीं थे, व्रत-चोर नहीं थे। जिनशासन की सेवा में उन्होंने अपना पूरा जीवन न्यौछावर कर दिया।

आचार्य हीरा अनुशासनप्रिय हैं, अतः शासन चमक रहा है। उनके

मुखारविन्द से अध्यात्म चेतना वर्ष में **416 आजीवन शीलव्रती** बने हैं। अन्य संत-सतियों की प्रेरणा से नियम ग्रहण करने वालों को भी जोड़ दिया जाए तो **शीलव्रतियों की यह संख्या 500 से ऊपर** चली जाती है। आज हम देख रहे हैं कि साधक एकान्तर तप में भी मासखमण कर रहे हैं। वस्तुतः शरीर से ऊपर उठ जाने वाला ही निर्ग्रन्थ होता है। देहासक्ति से ऊपर उठ जाने वाला संयम को दूषित नहीं करता है। आचार्यप्रवर एक अनासक्त योगी थे। वे सूर्यास्त के बाद रोग-निदानार्थ चिकित्सक को शरीर नहीं दिखाते थे। वे स्वाद-विजेता थे। पानी में रोटी चूरकर खा लेते थे। प्रतिक्रमण खड़े-खड़े करते थे। जब तबीयत ठीक नहीं रहती और उनसे बैठकर प्रतिक्रमण करने का निवेदन किया जाता तो कहते कि 'मैं बैठकर करूंगा तो तुम सोते-सोते करोगे।' आज हमारे समक्ष उन्हीं के अनुगामी महापुरुष विराज रहे हैं।

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी ने कहा कि आज समापन का नहीं, शुरूआत का दिन है। सत्संकल्प के साथ श्रेष्ठ कार्यों की, त्याग-प्रत्याख्यान की शुरूआत करें। रात्रिभोजन का त्याग करें। रात्रिभोजन त्याग जैन की पहचान रहा है, इस पहचान को कायम रखें। सीखने और सिखाने का निरन्तर प्रयास करें। आचार्यप्रवर का मतिज्ञान निर्मल था, उनका दर्शन विशुद्ध था; इसीलिए उन्हें आने वाली घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता था। एक बार एक भाई उनका फोटो लेने लगा तो बोले - ''भाई मुझे कागज में क्यूं उतारता है, मन में उतार।'' वे चैतन्य की उपासना पर बल देते थे। उनके साधनामय जीवन से अनेक घटनाएँ जुड़ी हैं। गुरुदेव के स्मरण मात्र सें उनका (गुरु हस्ती का) दर्द गायब हो गया। बात श्रद्धा की है। जो कुछ होता है, वह कर्म तथा पुण्योदय के कारण होता है।

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी ने अभ्यर्थना की कि गुरुकृपा से वे गुण-श्रेणियाँ चढ़ते रहें। प्रतिपल वे अप्रमत्त रहकर मुक्ति-पथ पर आगे बढ़ते रहें। उन्होंने कहा कि आचार्यप्रवर आचरण में अग्रणी थे और निर्वहन करवाने में भी अग्रणी थे। गुरु कार्य बड़ा कठिन होता है। शोभा गुरु ने अपनी अन्तर्दृष्टि और दूरदर्शिता से इस कठिन कार्य को आसान कर लिया। आज से पहले आचार्य प्रवर की जयन्तियों पर 13-1-87, 10-1-90, 18-1-92 और 18-1-97 को चार बार पीपाड़शहर में उपस्थित था। लेकिन, आज जैसी उपस्थिति पहले कभी नहीं देखी। आचार्यप्रवर पंचाचार के पालन के प्रति बहुत ही सजग थे। ज्ञानाचार के बारे में कहें तो हर साल पांच-पांच शास्त्र याद करते थे। वृद्धावस्था में भी हमें पढ़ाते थे तो उनको सारे श्लोक

स्मृति-पटल पर अंकित थे। दर्शनाचार के बारे में एक बार श्रद्धेय मरुधर केशरी जी को पूछा गया कि ''दर्शनाचार समझाओ'' तो वे बोले - ''पूज्यश्री (आचार्य हस्ती) को देख लो।'' आचार्यप्रवर निष्ठावान ब्रह्मचारी थे। कैसी भी स्त्री उनके निर्मल भाव-प्रवाह में अणुमात्र विघ्न नहीं डाल सकती थी। उनके चारित्राचार की विषेशता यह रही कि वे छोटी-छोटी बातों का गहराई से पालन करते थे। तपाचार और वीर्याचार के भी वे निर्मल आराधक थे।

श्री योगेशमुनि जी ने कहा कि सद्गुरु का स्थान जीवन में सर्वोपरि होता है। हर साधक चाहता है कि वह आचार्य हस्ती बने, लेकिन उसके लिए जीवन को तपाना-खपाना पड़ता है। उन्होने कहा कि जीवन को शृंगारित नहीं, संस्कारित करना चाहिये। श्री मनीषमुनि जी ने आचार्य हस्ती को साधना व सरस्वती का अमर साधक बताया।

श्री यशवन्त मुनि जी ने कहा कि जैन धर्म में पुरुषार्थ की प्रधानता है। पाप तो जाने-अनजाने हो जाता है, लेकिन धर्म-साधना के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। हमें धर्म के प्रति मन को सुदृढ़ बनाना चाहिये। **महासती श्री मुदितप्रभा जी** ने कहा कि संसार में व्यक्तिगत से लेकर वैश्विक स्तर तक अगणित समस्याएँ हैं, लेकिन उनका समाधान एक है, और वह है - अध्यात्म। **महासती श्री रुचिता जी** ने कहा कि गुरु हस्ती को नहीं देखा, उसका कोई गम नहीं, गुरु हस्ती ने जिस हीरे को गढ़ा वह भी कोई कम नहीं। महासती विनीतप्रभा जी ने कहा कि गुरु हस्ती प्रतिष्ठा को नहीं, निष्ठा को महत्त्व देते थे।

संघसेवा शिरोमणि **श्री मोफतराज जी मुणोत** ने कहा कि धर्म-प्रचार का महत्त्व है और प्रचार आवश्यक भी है, लेकिन प्रचार से ज्यादा महत्त्व आचार का है। उन्होंने बताया कि आचार्य हस्ती जयन्ती के उपलक्ष्य में पीपाड़शहर में समस्त बूचड़खाने बन्द हैं। सभा में यह भी जानकारी दी गई कि हर पौष सुदी चौदस को पीपाड़शहर में मांस का क्रय-विक्रय निषिद्ध रहेगा। इस सम्बन्ध में मुस्लिम बन्धुओं ने यहाँ आकर आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म. सा. से यह व्रत लिया है।

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी समिति के संयोजक **श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना** ने शताब्दी वर्ष जिसे अध्यात्म चेतना वर्ष के रूप में मनाया गया उसमें व्रत-प्रत्याख्यानों का, संघ-समाज में रचनात्मक कार्यों का, संघ के संगठन में सक्रियता-जागरूकता का, जैन-जैनेतर जन समुदाय में अध्यात्म चेतना की सुगन्ध पहुँचने जैसे विविध विषयों पर विशद प्रकाश डाला। संघ-संरक्षक मण्डल

के चेयरपर्सन श्री मोफतराजजी मुणोत ने शताब्दी वर्ष में गाँव-गाँव, नगर-नगर और महानगरों में सम्पन्न कार्यक्रमों को अविस्मरणीय बताते कहा कि हमने वर्षपर्यन्त गुरु के जीवनादर्शो को जीया है इसलिए हम जीवन में नैतिकता, प्रामाणिकता, सच्चरित्रता और सबके साथ अपनत्व भाव सदा-सदा बनाये रखकर महान् धर्माचार्य-धर्मगुरु की यश-कीर्ति को उत्तरोत्तर बढ़ाते हुए रत्नसंघ एवं जिनशासन की दीप्ति में अपना अर्ध्य अर्पण करते रहें।

गुरु हस्ती के जन्म-दिवस पर पीपाड़शहर निवासियों का उत्साह उनकी प्रवचन सभा में उपस्थिति से सहज आंका जा सकता है। जैनों के साथ जैनेतर दम्पतियों ने शीलव्रत के खंद किए इससे उनकी भक्ति का परिचय मिलता है। **गुरु हस्ती के जन्म-दिवस पर मुस्लिम मतावलम्बियों ने सामूहिक रूप से आचार्यप्रवर पूज्य हीराचन्द्रजी म.सा. से नियम लिया कि पीपाड़ के हम-सब मुस्लिम मतावलम्बी स्थाई रूप से हर वर्ष पौष शुक्ला चतुर्दशी गुरु हस्ती के जन्म-दिवस पर न तो पशुवध करेंगे, न मांस विक्रय ही करेंगे। गुरु हस्ती के जन्म-दिवस पर हम शाकाहार ही करेंगे।** प्रवचन पश्चात् एक साथ मुस्लिम भाइयों का गुरुचरणों में कतारबद्ध आना, संकल्प अंगीकार करना और गुरु हस्ती के प्रति भक्ति दर्शाना विशेष रूप से उल्लेखनीय उदाहरण के रूप में सदा याद किया जाता रहेगा। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक और संघ-संरक्षक मण्डल के चेयरपर्सन श्री मोफतराजजी मुणोत ने मुस्लिम भाइयों की भक्ति-भावना और उदारता के लिए पीठ थपथपा कर अपनत्व व प्रेम प्रदर्शित किया। यह नज़ारा अपने-आपमें अनुपम रहा।

12 मार्च को दो दीक्षाएँ

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने 25 जनवरी 2011 को चौकडी गाँव में साधु मर्यादा के अनुसार निम्नांकित मुमुक्षुओं की जैन भागवती दीक्षा फाल्गुन शुक्ला सप्तमी, शनिवार, 12 मार्च 2011 को सम्पन्न होने की घोषणा की है-

1. **मुमुक्षु श्री आशीष जैन** सुपुत्र श्री शिवदयाल जी जैन, पो. हरसाना, जिला-अलवर (राज.)
2. **मुमुक्षु बहन सुश्री पूनम जैन** सुपुत्री श्री नरेशचन्द जी जैन, पो. बौंल-टोडाभीम, जयपुर (राज.)

सम्पर्क सूत्र- श्री पूरणराज अबानी, महामंत्री-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 0291-2636763

अक्षय तृतीया की स्वीकृति जोधपुर संघ को

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने 24 जनवरी 2011 को कोसाणा में अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर (06 मई, 2011) साधु मर्यादा के आगारों सहित जोधपुर विराजने की स्वीकृति फरमाई है। तप एवं दान के इस विशिष्ट पर्व पर आप गुरु चरणों में नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर तपस्वी साधकों की तप-साधना की अनुमोदना कर कर्म-निर्जरा का लाभ लें। तपस्वी साधक अपने पहुँचने की सूचना निम्न पते पर देवें :-

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)
फोन नं. 0291-2636763, 2641445

सम्पर्क सूत्र- (1) श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना, अध्यक्ष-09413329762 (2) श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल, मंत्री-09414132521

भोपालगढ़ में मुमुक्षु सुभाष जी डागा-जयपुर की 15 दिसम्बर को जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न

कोई आमंत्रण पत्रिका नहीं, जुलूस आदि कोई आडम्बर नहीं

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्तप्रवरों के सान्निध्य में क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ में मार्गशीर्ष शुक्ला नवमी, बुधवार तदनुसार 15 दिसम्बर, 2010 को मुमक्षु श्री सुभाषचन्दजी डागा की दीक्षा अत्यन्त सादगी से सम्पन्न हुई। दीक्षा की घोषणा 6 दिसम्बर को आचार्यप्रवर द्वारा पीपाड़ रोड़ में की गई थी। मुमुक्षु श्री सुभाषचन्दजी डागा की दीक्षा के लिए न पत्रिका छपी, न स्वागत-समारोह आयोजित किया गया और न ही बैण्ड-बाजों के साथ जुलूस निकाला गया। मुमुक्षु बन्धु ने जन-जन की शुभभावना का प्रेम पूर्वक हाथ जोड़कर एवं बुजुर्गों से आशीर्वाद रूप स्वागत का समादर तो किया, किन्तु जयपुर सहित कहीं भी किसी की माला तक को यह कहकर स्वीकार नहीं किया कि मुझे स्वागत-सत्कार नहीं, आप-सबकी आत्मीयता-अपनत्व चाहिये। मुमुक्षु बन्धु जयपुर के जौहरी हैं, आडम्बरविहीन दीक्षा लेने को आतुर हैं इसका प्रभाव जन-जन के मन पर होना स्वाभाविक था, अतः गाँव-गाँव और नगर-नगर से ही नहीं महानगरों से भी श्रद्धालु भागवती दीक्षा महोत्सव में उपस्थित हुए।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, भोपालगढ़ ने परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर-परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर प्रभृति सभी संत-मुनिराजों एवं महासती मण्डलों में 22 महासतियों की पावन सन्निधि में दीक्षा महोत्सव जैन रत्न माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में आयोजित हुआ।

दीक्षा महोत्सव पर स्वागत-सत्कार, वरघोड़ा जैसा कोई आयोजन नहीं रखने की मुमुक्षु बन्धु की भावना को साकार करते हुए भोपालगढ़ श्रीसंघ ने दीक्षार्थी परिवार के निवास स्थान जो सामायिक-स्वाध्याय भवन के समीपस्थ ही था, से जय-जयकार के जयघोष करते हुए मुमुक्षु बन्धु को दीक्षा स्थल श्री जैन रत्न माध्यमिक विद्यालय ले जाने का कार्यक्रम रखा जिसमें भोपालगढ़ के जैन-जैनेत्तर भाई-बहिन तो थे ही, डागा परिवार जयपुर सहित समीपवर्ती-सुदूवर्ती श्रद्धालुओं की उपस्थिति के कारण मुमुक्षु बन्धु के प्रति जन-जन के मन में सहज-स्वाभाविक उल्लास जिसने भी देखा वह दंग-सा रह गया। जयनादों के साथ स्वप्रेरित अनुशासन से जुलूस की भव्यता अनूठी रही। श्री जैन रत्न माध्यमिक विद्यालय में निर्मित पाण्डाल देखते-ही-देखते भर गया। कार्यक्रम संचालक **श्री नेमीचन्दजी कर्नावट** ने मंगलाचरण के लिए ब्यावर के श्रावकरत्न **श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा** को आमन्त्रित किया। श्री गोलेच्छा साहब ने नमस्कार महामंत्र के अनन्तर गुरु गुणगान सुमधुर स्वर में करते हुए मंगलाचरण की प्रस्तुति दी।

मुमुक्षु भाई सुभाषचन्दजी डागा की दीक्षा पर समुपस्थित सभी का भोपालगढ़ की ओर से स्वागत करते हुए **श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना** ने मुमुक्षु बन्धु श्री सुभाषचन्दजी डागा का पारिवारिक परिचय देते हुए श्रावक शिरोमणि श्री कन्हैयालाल जी डागा की उदारता-मित्रता रेखांकित की तथा सर्व श्री रतनचन्दजी डागा-श्री इन्दरचन्दजी डागा एवं डागा परिवार के साथ नाहर, देसलहरा और कुम्भट परिवारों के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं का परिचय दिया। मुमुक्षु बन्धु की सांसारिक सुपुत्री एकताजी आज भाग्यप्रभाजी म.सा. के नाम से शासन की प्रभावना कर रही है, दस वर्षो में रत्नसंघ की यश-कीर्ति वृद्धि में उन्होंने अभिवृद्धि की है। आपकी सांसारिक धर्मपरायणा धर्मपत्नी जिसने 6 माह पूर्व बैंगलोर में रत्नसंघ में दीक्षा ली, उन महासती श्री नव्यप्रभाजी की गुरुभक्ति, संघनिष्ठा और साधना में सजगतां सराहनीय है।

डागा परिवार की ओर से **श्री विमलचन्दजी डागा** ने आज के गौरवमय प्रसंग को रत्नसंघ के लिए सौभाग्यशाली बताते हुए कहा कि 6 दिसम्बर को सुभाष

बाबू जयपुर से रवाना हुए तो हमारा हृदय भरा हुआ था। शेर की भांति दीक्षा ले रहे हैं, शेर की भांति संयम-साधना का पालन करें। आप एक परिवार का मोह छोड़कर छः काया के जीवों के प्रति प्रेम और अपनत्व अपनायें और एकभवतारी होकर अपना जीवन सफल करें, यही मंगल मनीषा है।

रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री सुमेरसिंहजी बोथरा** ने रत्नसंघ में मुमुक्षु बन्धु की दीक्षा के प्रसंग से कहा आपकी दादी, आपकी सुपुत्री एवं आपकी धर्मपत्नी रत्नसंघ में दीक्षित हो चुकी है अब आप दीक्षित हो रहे हैं, मैं अपनी ओर से एवं रत्नसंघ परिवार की ओर से आपका, आपके समूचे परिवार का अभिनन्दन करता हूँ, आभार मानता हूँ। महासती श्री भाग्यप्रभाजी जो आपकी सांसारिक सुपुत्री हैं ने राजाजीनगर बेंगलोर में 40 बच्चों का शिविर प्रारम्भ किया; आज महासतीजी के सार्थक सद्प्रयासों से सैंकड़ों बच्चे लाभान्वित हो चुके हैं। मैसूर में यह सुनकर मेरा सीना फूल गया कि महासतीजी ने घर-घर में बच्चों को संस्कारित कर दिया है। आपकी सांसारिक धर्मपत्नी की गुरुभक्ति कैसी है मुझे कहने की जरूरत नहीं, दीक्षा लेकर वे बोल-थोकड़ें सिखाने में संलग्न हैं। मैं मुमुक्षु भाई सुभाषजी के लिए ही नहीं, अमित-अनु के सहयोग के लिए कहूँगा कि आपके पुत्र-पुत्रवधू वस्तुतः अभिनन्दनीय हैं।

शासन सेवा समिति के संयोजक माननीय **श्री रतनलालजी बाफना** ने अपने हृदयोद्गार रखते हुए कहा कि आज के दीक्षा महोत्सव का लाभ गुरु भगवन्त ने भोपालगढ़ श्रीसंघ को प्रदान कर हम-सब पर महती कृपा की है।

श्री सुभाषजी डागा ने गौरवशाली रत्नसंघ के पूर्वाचार्यो के साथ आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. से लेकर सभी मुनिपुंगवों के प्रति भक्ति भावना में चन्द किन्तु प्रभावशाली शब्दों में उपकारों का स्मरण किया। रत्नसंघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के साथ पारिवारिक-परिजनों, इष्ट-मित्रों एवं व्यापार-व्यवसाय में अपने सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए दीक्षा महोत्सव में पधारे समीपवर्ती-सुदूरवर्ती श्रीसंघों व श्रद्धालुओं के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष स्नेह-सहयोग के लिए कहा कि मैं आप-सबके प्रेम से अभिभूत और हर्ष विभोर हूँ। गुरु हीरा-गुरु मान एवं सभी गुरु भगवन्तों के उपकारों के प्रति एवं साध्वीप्रमुखा सहित सभी महासतियाँजी महाराज की कृपा के लिए अन्तर्मन से कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए मुमुक्षु बन्धु ने संयम-मार्ग में सबका सहयोग चाहा। डागा परिवार के सभी सदस्यों के

सहयोग के साथ अपने भ्राता, सुपुत्र पुत्रवधू, बहन-बहनोई, ससुराल पक्ष को सम्बोधित करते हुए कहा- आपने मुझे सत्संस्कार तो दिए ही, मेरी भावना को आगे बढ़ाने में सम्बल भी दिया, मैं पारिवारिकजनों, इष्ट-मित्रों के साथ आप-सबसे हार्दिक क्षमायाचना करता हूँ और अपेक्षा रखता हूँ कि आप-सब मेरी संयम-साधना में सहयोग करते रहेंगे।

मुमक्षु श्री सुभाषचन्दजी डागा के सुपुत्र युवारत्न **श्री अमितजी डागा** ने कहा मैं बड़ा भाग्यशाली हूँ कि मुझे ऐसे वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, स्नेही एवं आदर्श माता-पिता का सान्निध्य प्राप्त हुआ, पूर्व में मेरी बहिन ने, फिर माताश्री ने दीक्षा ली अब पूज्य पिताश्री संयम मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं, हमारे परिवार के लिए यह गौरव की बात है। मुझे भी ऐसा आशीर्वाद आप प्रदान करें जिससे मैं भी इस मार्ग पर आगे बढ़ सकूं।

मुमक्षु बन्धु के सुपुत्र के आसन ग्रहण करते ही दूर से जय-जयकार के जयघोष कर्णगोचर होते ही सबको विदित हो गया कि पूज्य आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-मुनिराजों का स्कूल भवन में मंगल पर्दापण हो गया है, संघ मर्यादानुसार संत-सतीवृन्द के आगमन के पूर्व माईक हटा दिया गया। जय-जयकारों के जयनाद के चलते आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-मुनिराजों का जनसमुदाय ने खड़े होकर एवं जय-जयकार कर स्वागत-सत्कार किया। आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत आसन ग्रहण कर रहे थे कि इस बीच महासतीवृन्द का पदार्पण हो गया।

मुमुक्षु श्रीं सुभाषचन्दजी डागा ने आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द को विधियुक्त वन्दन-नमन किया और आचार्यप्रवर से मांगलिक श्रवण कर परिवारिक-परिजनों एवं इष्ट-मित्रों के साथ वेश परिवर्तन हेतु विद्यालय परिसर के अन्य कमरे में जाने के लिए प्रस्थान किया, मुमक्षु बन्धु साधु वेश में उपस्थित हो इस बीच आचार्यप्रवर के संकेत से साध्वी समुदाय में से महासती **श्री मुदितप्रभाजी म.सा.** ने अपने विचार रखते कहा-आचार्य हस्ती जन्म शती में, व्रत-महाव्रत की कड़ी में आज एक नई लड़ी जुड़ने जा रही है।

महासती श्री रूचिताजी म.सा. ने भोपालगढ़ शब्द में रहे 'भो' का अर्थ भोगों से मुक्ति, 'पा' का अर्थ पापों से छुटकारा बताते हुए मुमुक्षु बन्धु के संयमी जीवन की शुभकामना की। **महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.** ने संयम ही जीवन है शास्त्रीय गाथा एवं उसका हार्द प्रभावी शब्दों में रखा।

श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. ने कहा कि जयपुर के जौहरी ने पुद्गलों को त्याज्य समझ कर हीरा गुरु को अपनाया है। आप संयम मार्ग पर बढ़ते रहें। **श्री दर्शनमुनिजी म.सा.** ने छाई-छाई खुशियाँ अपार बड़लू नगरी में बोल के माध्यम से भजन की चन्द पंक्तियाँ रखते हुए तन-धन का साथ जीवन तक बताया तो धर्म का साथ भवोंभव तक होता है, कहकर अपनी शुभकामना व्यक्त की। **वयोवृद्ध श्री मोहनमुनिजी म.सा.** ने भी संयम पथ पर अग्रसर होने वाले मुमुक्षु के प्रति अपनी मंगलभावना दर्शायी। जिसको आप छोड़ रहे हैं उसे एक पल भी याद न करें और जिसके लिए छोड़ रहे हैं उसे एक पल भी विस्मृत न करें।

श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने कहा कि श्रेय का मार्ग सिद्धि तक पहुँचाता है तो प्रेय का मार्ग संसार में परिभ्रमण कराता है। श्रेय का मार्ग अपने में जीना है तो प्रेय का मार्ग सपने में जीने जैसा है। सुभाषजी गुरुचरणों के दास बनकर कर्मो का विनाश करें, क्योंकि छोड़ने में सुख है, छूटने में दुःख। सम्यक् दृष्टि को भोग रोग के समान, प्रतिष्ठा विष्ठा के समान, गौरव रौरव के समान, काम कांटे के समान, धन धूल के समान नजर आते हैं। वैरागी को कोई भय नहीं होता। **श्री मनीषमुनिजी म.सा.** ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते कहा कि आज का यह मंगलमय दिवस मंगलमय जीवन के शुभारम्भ का दिवस है। आज मुमक्षु आत्मा एक ऐसे स्वस्थ, सुन्दर, समुचित जीवन का शुभारम्भ करने जा रही है जिसमें किसी भी जीव का आरम्भ नहीं होगा, उस जीवन में राग का रोग नहीं, द्वेष की दृष्टि नहीं, क्लेश का लेश नहीं, विलास का विकास नहीं, विचारों में विकार नहीं, कर्म का क्रम नहीं, योग का प्रयोग नहीं ओर उपयोग का दुरूपयेाग नहीं है। उस जीवन में मैत्री का मंत्र होगा, यतना का यंत्र होगा और तप से इस शरीर रूपी तंत्र का प्रसारण होगा।

तत्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने संयम सदा सुखदाई भजन की चन्द कड़ियों के अनन्तर दीक्षार्थी को गुरु भगवन्तों के चरणों में समर्पित एवं आत्मार्थी बने रहने की प्रेरणा की। संयम क्या होता है तत्वचिन्तक मुनिश्री ने संयम की शास्त्रीय गाथाओं के साथ भाव रखा और अपनी मंगलमनीषा व्यक्त की। **मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.** ने 'सुण म्हारा जाया माता की सीख' भजन का हार्द समझाते हुए मुमक्षु आत्मा से फिर किसी माता की कोख से जन्म नहीं लेने की बात कही तो साथ ही यह भी कहा कि आपने सच्चे हीरे की परीक्षा कर हीरा गुरु की चरण सन्निधि प्राप्त की है जिससे आपका मान दुगुना हो गया। मुनिश्री ने संयम-मार्ग मे आने वाले परीषहों को समभाव से सहकर जीवन सफल बनाने की

मंगलकामना की।

मुनिपुंगवों के प्रवचन में दीक्षार्थी बन्धु साधुवेश में समुपस्थित हो गये, लेकिन आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के वन्दन के चलते प्रवचनामृत का जनसमुदाय पान करते हुए वन्दन-नमन का दृश्य अपलक निहार रहा था। वन्दन पश्चात् आचार्य श्री ने पारिवारिक-परिजनों की अनुज्ञा चाही, तो मुमुक्षु बन्धु के भ्राता-भ्रातावधू, पुत्र-पुत्रवधू आदि पारिवारिक-परिजनों ने खड़े होकर दीक्षा की सहर्ष अनुमति प्रदान की। आचार्यप्रवर ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं स्थानीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के प्रमुख पदाधिकारियों की आज्ञा चाही तो रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, कार्याध्यक्ष, महामंत्री एवं स्थानीय संघाध्यक्ष-संघमंत्री ने खड़े होकर आज्ञा प्रदान की।

मुमुक्षु बन्धु श्री सुभाषजी डागा ने जनसमुदाय की ओर मुखातिब हो उपस्थित सभी लोगों से अपने द्वारा प्रत्यक्ष-परोक्ष भूलों के लिए हाथ जोड़कर क्षमायाचना की।

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने पारिवारिक-परिजनों एवं संघ पदाधिकारियों की आज्ञा-अनुमति प्राप्त कर जीवन भर के लिए पापों के प्रत्याख्यान हेतु विधि के अनुसार चउवीसत्थव करवाने हेतु नमस्कार महामंत्र, आलोचना-सूत्र, कायोत्सर्ग-सूत्र, चतुर्विंशतिस्तव-सूत्र, बोलकर करेमि भंते के पाठ से प्रतिज्ञा-सूत्र पाठ पढ़ाया। तीन करण-तीन योग से करेमि भंते के पाठ के पूर्व उपाध्यायप्रवर ने फरमाया कि अब चमत्कार होने जा रहा है। करेमि भंते के पाठ से दीक्षित होते ही जन समुदाय ने हर्षित-प्रमुदित हो 'नवदीक्षित सुभाषमुनिजी म.सा. की जय' का नाद कर अपनी जिह्वा पवित्र की। पूरे पाण्डाल में श्रमण भगवान महावीर स्वामी की जय, जैन धर्म की जय, आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की जय, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की जय, उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. की जय, निर्ग्रन्थ मुनिप्रवरों की जय, साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी म.सा. की जय, जय-जयकार का अनवरत जयनाद के चलते पाटों पर विराजित मुनिप्रवरों ने नवदीक्षित मुनि का पाट पर आसन बिछाया। नवदीक्षित मुनि की चोटी के केश आचार्यप्रवर ने लुंचन किए और मुनिप्रवरों ने नवदीक्षित मुनि को अपने बीच पाट पर बैठाया। नमोत्थुणं पाठ का सस्वर उच्चारण श्रवण कर जन समुदाय हर्षित हो पुनः पुनः जय-जयकार करने लगा।

दीक्षा महोत्सव के पावन प्रसंग पर रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री

सुमेरसिंहजी बोथरा, श्री गौतमचन्दजी छाजेड़, श्री कुशलचन्दजी बाफना, श्री पदमचन्दजी बाफना, श्री धर्मीचन्दजी कांकरिया, श्री विजयराजजी कोठारी ने सपत्नीक **आजीवन शीलव्रत** के खंदकर दीक्षा की अनुमोदना की। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, भोपालगढ़ ने शीलव्रत के खंद करने वाले दम्पतियों का माल्यार्पण से स्वागत किया, वहीं साफा पहनाकर गुरुभ्राताओं का अभिनन्दन किया गया और चून्दड़ी ओढ़ाकर शीलव्रत के नियम ग्रहण करने वाली बहिनों का बहुमान किया गया।

संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा ने सुश्रावक श्री केवलमलजी लोढ़ा परिवार की ओर से भाई श्री विनोदजी लोढ़ा द्वारा दीक्षा फण्ड में पाँच लाख रूपये देने की घोषणा की। कार्यक्रम संचालक श्री नेमीचन्दजी कर्नावट ने श्री कुशलचन्दजी बाफना द्वारा शीलव्रत ग्रहण करने के उपलक्ष्य में एक लाख रूपये शुभ खाते में निकालने की घोषणा की। श्री पदमचन्दजी बाफना द्वारा शीलव्रत अंगीकार करने पर इक्कीस हजार रूपये शुभ खाते में लगाने की घोषणा की गई।

जयपुर श्रीसंघ ने पूज्य आचार्यप्रवर की सेवा में आगामी चातुर्मास की भावपूर्ण विनति रखी। जोधपुर श्रीसंघ की ओर से आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर एवं साध्वीप्रमुखा महासती मण्डल के चातुर्मास की विनति, नागौर श्रीसंघ की अक्षय तृतीया के साथ उपाध्याय प्रवर के चातुर्मास की विनति, मण्डिया (कर्नाटक) श्रीसंघ की ओर से व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास की विनति की गई। पीपाड़शहर की ओर से अध्यात्म चेतना वर्ष के समापन पर 11 से 19 जनवरी तक के कार्यक्रमों में पधारने का निवेदन किया गया। 16,17,18 जनवरी को एक हजार तेलों के आह्वान विषयक संघ का निवेदन दोहराया गया। संघ स्तर पर पौष शुक्ला चतुर्दशी को व्यापार-व्यवसाय बन्द रखने, तथा सेवारत जनों द्वारा अवकाश लेकर उस दिन धर्म-साधना में रहने का आह्वान किया गया।

परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने मांगलिक फरमाई और जय-जयकारों के गगनभेदी जयनादों के साथ दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

भोपालगढ़ दीक्षा महोत्सव पर जोधपुर, जयपुर, पीपाड़, पाली, नागौर, मेड़ता, ब्यावर, अजमेर, दूदू, मदनगंज-किशनगढ़, बिजयनगर, गुलाबपुरा, सवाईमाधोपुर, अलीगढ़-रामपुरा, चौरू, कुशतला, भरतपुर, नदबई, अलवर,

कोसाना, साथीन, कुड़ी, अरटिया, बारनीखुर्द, आसोप, हीरादेसर जैसे ग्राम-नगरों के श्रद्धालु तो थे ही चैन्नई, बैंगलुरू, मैसूर, जलगाँव, धूलिया, कानपुर, दिल्ली जैसे सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रद्धालु भी थे।

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 77 वें जन्म-दिवस पर गुणानुवाद

पुण्यधरा पीपाड़ में परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 77 वां जन्म-दिवस माघ कृष्णा चतुर्थी, रविवार, दिनांक 23 जनवरी, 2011 को श्रद्धा-भक्ति पूर्वक मनाया गया। राता उपाश्रय में प्रातः 9.30 बजे प्रवचन का शुभारम्भ श्रद्धेय **श्री लोकचन्द्रजी म.सा.** ने किया। मुनिश्री ने अपनी भावना व्यक्त करते कहा कि उपाध्याय भगवन्त पंचम आरे में चौथे आरे की बानगी हैं। आप सरलता की प्रतिमूर्ति हैं, इसीलिये भक्तों के द्वारा स्वास्थ्य की पृच्छा करने पर आपके मुख से ''आनन्द है'' शब्द निकलता है। **श्रद्धेया महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.** ने कहा-उपाध्याय श्री के पावन दर्शन से रुग्ण व्यक्ति भी स्वस्थ हो जाता है, क्योंकि आपश्री के मुख पर सदैव प्रसन्नता व आनन्द दृष्टिगोचर होता है। आपश्री के चरणों में रहकर भेदविज्ञान का पाठ सीखने को मिलता है। **श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.** ने गुरु हस्ती को अध्यात्म सूर्य बताते कहा कि उस अध्यात्म सूर्य की लालिमा उपाध्यायश्री के मुख मण्डल पर स्पष्ट देखी जा सकती है।

श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. ने कविता के माध्यम से गुणगान किये। कविता के बोल थेः-

मान गुरु को वन्दना, अन्तर मन स्पन्दना, शांत रसधारी रे, जाऊँ बलिहारी रे।।
वीतराग ज्यों शान्त हो, निरारंभ और दान्त हो, मोह-माया के त्यागी रे, संयम धारी रे।।
दर्शन जिनके मंगल हैं, श्रद्धा के जो स्पन्दन हैं, आत्म-विहारी रे, जाऊँ बलिहारी रे।।
ज्ञान-क्रिया ही आन है, गुरुवर की पहिचान है, महिमाधारी रे।।
तप तेरी ज्योति है, त्याग तेरे मोती हैं, लागे सुखकारी रे।।

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने कहा कि परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर वय और पर्याय में सबसे वरिष्ठ संत हैं तो सद्गुणों में भी श्रेष्ठता लिए हुए हैं। उपाध्यायप्रवर के जीवन में पाँच सकार रहे हुए हैं। आपश्री का सबसे बड़ा गुण सरलता है। सरल आत्मा में ही धर्म ठहरता है। सरलता की तरह दूसरा गुण है सहजता, तीसरा गुण है सतर्कता। आप हर समय अपनी साधना में सर्तक रहते हैं।

आपश्री का चौथा गुण है सहिष्णुता। पांचवा गुण है सततता यानी निरन्तरता। उपाध्यायप्रवर के गुणों का वर्णन करते हुए मुनिश्री ने एक दोहा उपाध्यायश्री के धैर्य को लेकर कहा-धीरज से धोखा टले, शरीर रहे मस्त। तामस कभी न उपजे, धीरज बड़ा मस्त।

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते कहा कि श्रमण भगवान महावीर के शासन में समय-समय पर ऐसे तेजस्वी, वर्चस्वी, यशस्वी साधनाशील पुरुषों का जन्म होता रहा है। उपाध्यायप्रवर भी ऐसे ही महापुरुष हैं जिनका व्यक्तित्व इसलिये प्रभावी है, क्योंकि आपश्री समान भाव से सबके प्रिय हैं। आपश्री बोलते हुए भी आप मौन नजर आते हैं, पद पर रहते हुए भी पदकृत विरोधों से उपरत हैं, प्रवृत्ति करते हुए भी आप अप्रमत्त नजर आते हैं।

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने अपनी भावना व्यक्त करते कहा कि मनुष्य की हम जब आकृति देखते हैं तो ध्यान में आता है सुनने के किए कान दो मिले हैं वहीं जीभ एक है। श्रवण करते हैं उतना ग्रहण भी होना चाहिये। हम कानों से सुनते-सुनते एक दिन प्राणों से भी सुनेंगे। उपाध्यायप्रवर का नाम भले ही मान है, लेकिन क्रिया में जरा भी मान नहीं।

तत्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने उपाध्यायप्रवर की सरलता का हार्द समझाते हुए कहा कि सरलता आती है आलोचना से, अपने दोषों को देखने से। उपाध्यायश्री में सरलता है। आपश्री में विनय, वैय्यावृत्य, व्युत्सर्ग आदि विशेष गुण देखकर ही आचार्य श्री नानालालजी म.सा. ने 1978 में जोधपुर में कहा था- इनका नाम मान नहीं, विनय होना चाहिये। वैय्यावृत्य के लिए आपने जयन्तीमुनिजी की सेवा देखी है। आज के प्रसंग पर तत्वचिन्तक मुनिश्री ने कहा- बीस साल में पहली बार दोनों महापुरुष एक साथ हमारे बीच विराजमान हैं।

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने कहा- आप-हम-सब श्रद्धा-भक्ति से गुणगान कर रहे हैं। गुरु हस्ती ने इस धर्म संघ को आचार्य और उपाध्याय दो पद देकर संघ को निश्चिन्त कर दिया है। आपश्री की सरलता, सहजता और संवर के प्रति निर्मल प्रेरणा व पुरुषार्थ को देखकर दिल्ली के श्रावक सोचने पर मजबूर हो गए कि जिनके शिष्य ऐसे हैं तो गुरु कैसे होंगे ? दिल्ली वालों ने सवाईमाधोपुर जाकर गुरु हस्ती के दर्शन किए तो उन्हें लगा कि हमने तो मानो भगवान को पा लिया। उपाध्यायश्री के अनेकानेक गुण हैं।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि

क्रियोद्धारक पूज्य श्री जीवराजजी महाराज ने इसी राता उपाश्रय में शुद्ध संयम पालने के लिए क्रिया का उद्धार किया। पूज्य आचार्य श्री जयमलजी महाराज ने पोतियाबंध श्रावकों में शुद्ध धर्म का परचम लहराया था। इसी पुण्यधरा में वय, शिक्षा, स्थविर सम्पन्न उपाध्यायप्रवर का जन्म-दिवस मनाने का प्रसंग उपस्थित हुआ है। हमें आशीर्वाद लेना है और शुभकामना भी प्रकट करनी है। अभी संत-सतियों ने गुणगान किए। स्थविर भगवन्तों के गुणगान से महान निर्जरा होती है। आपश्री बड़े पं. रत्न श्री लक्ष्मीचन्दजी महाराज के श्रीचरणों में रहे। संघ की सारणा-वारणा-धारणा करते हैं वे उपाध्याय होते हैं। आप अल्पभाषी हैं, मितभाषी हैं। श्रद्धेय उपाध्यायश्री श्रद्धेय आचार्यश्री हीराचन्द्रजी महाराज का आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज) की भोलावन के अनुसार सहयोग करते आ रहे हैं इसीलिये संघ दीप्तिमान हो रहा है। आपश्री आगे भी इसी तरह सहयोग करते रहेंगे तो हस्ती की यह बगिया फलती-फूलती रहेगी। मैं अपनी ओर से तथा चतुर्विध संघ की ओर से आपके स्वास्थ्य-समाधि की मंगलकामना करता हूँ।

परमश्रद्धेय उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने फरमाया कि गुणगान मेरे नहीं, संयम जीवन के हैं। पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने मुझे संसार के कीचड़ से निकाला वे मेरे पहले उपकारी हैं। पं. रत्न श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. ने ज्ञान-ध्यान में आगे बढ़ाया, सिखाया-पढ़ाया और पास में रखा वे मेरे दूसरे उपकारी हैं। छोटे लक्ष्मीचन्दजी म.सा. ने स्नेह पूर्वक छोटी-छोटी बातें सिखाईं, वे तीसरे उपकारी हैं। अब आचार्य श्री हीराचन्द्रजी महाराज का सहयोग मिल रहा है। आपके सहयोग से हमें नहीं लगता कि आचार्य श्री हस्ती चले गये। हमें वैसा ही स्नेह-सहयोग मिल रहा है। उपाध्यायप्रवर ने फरमाया कि संयमी जीवन में धर्म गुरुओं का उपकार रहा वैसे ही माता, पिता और बड़े भाई भोपालचन्दजी का जीवन में उपकार भुलाया नहीं जा सकता। आचार्य भगवन्त के परोक्ष उपकार का स्मरण करते हुए उपाध्यायप्रवर ने फरमाया कि परोक्ष में भी गुरु का अतिशय काम करता है। आज भी गुरु के अतिशय से संघ दीप्तिमान हो रहा है, आगे भी संघ की जाहोजलाली इसी तरह बढ़ती रहे, यही भावना है।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि वह संघ, सम्प्रदाय, वर्ग स्वयं अपने-आपको ऊँचा उठाने के साथ चतुर्विध संघ को ऊपर उठाने का निमित बनता है जहाँ स्वाध्याय और वैय्यावृत्य में सजगता रहती है। बड़े गुरु के बड़े चेले में स्वाध्याय और वैय्यावृत्य का गुण रहा हुआ

है। उपाध्यायश्री बड़े लक्ष्मीचन्दजी महाराज के शिष्यरत्न के रूप में थे तो मैं छोटे लक्ष्मीचन्दजी महाराज का शिष्य था। आज हर्षानुभूति है कि पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त ने जो आत्मीयता और एकरूपता के संस्कार दिये, वे जीवित हैं। संघ चलता है सौहार्द से, आत्मीयता से, सेवा से। सबके साथ आत्मीयता रखना कठिन काम है। जहाँ स्वार्थ की सिद्धि होती है वहाँ तो फिर भी सेवा होती है, लेकिन सबको अपना मान कर निःस्वार्थ भाव से सेवा करना सरल नहीं है। आज जाये हुए की सेवा नहीं होती वहीं हमारे यहाँ तो सब आए हुए होते हैं, उनकी सेवा करना कितनी बड़ी बात है ? श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर ने सेवा का आदर्श उपस्थित किया, पूरा समाज आपकी सेवाभावना से परिचित है। आचार्यप्रवर ने निभने-निभाने की बात का हार्द समझाते हुए फरमाया कि जहाँ यह गुण नहीं होता वहाँ मर्यादाएँ टूटती-बिखरती हैं चाहे वह परिवार हो या संघ-समाज। जहाँ निभने-निभाने की कला नहीं वहाँ अहंकार जागृत होता है और अहंकार में अलग-अलग खेमे तक बन जाते हैं, लेकिन श्रद्धेय उपाध्यायश्री ने अपने जीवन-व्यवहार से सब मेरे हैं, मैं सबका हूँ चरितार्थ कर दिखाया है। आपश्री की इस भावना से हमारे संघ में कहीं कोई समस्या नहीं है। अहंकार से और नाम की चाहना से। स्वाध्याय, वैय्याबृत्य, स्वनिरीक्षण और सेवा का जो रूप आपके जीवन में है वह मात्र देखने का नहीं, जीवन में उतारने की बात है। आचार्यप्रवर ने उपाध्यायप्रवर के जन्म-दिवस पर मंगलकामना व्यक्त करते हुए फरमाया कि आपने अब तक जैसा सम्बल दिया है, आगे भी सहयोग के साथ संघ की शान बढ़ाने में, संघ उन्नयन में, और संघ-दीप्ति में वैसा ही स्नेहपूर्ण सहयोग मिलता रहेगा।

प्रवचन सभा में श्रावक-श्राविकाओं को समय नहीं दिया जा सका, इसके लिए संघमंत्री श्री सुमतिचन्दजी मेहता ने क्षमायाचना की, साथ ही उपस्थित समस्त श्रावक-श्राविकाओं की ओर से उपाध्यायप्रवर के श्रीचरणों में सश्रद्धा-सभक्ति वन्दन-नमन एवं स्वास्थ्य-समाधि की पृच्छा करके उपाध्यायप्रवर के सुदीर्घ एवं सुखद स्वास्थ्य की मंगलकामना की।

पाली-मारवाड़ में श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन धर्मधरा पाली-मारवाड़ में 9 अक्टूबर, 2010 को संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत, संघ संरक्षक श्री ईश्वरलाल जी ललवाणी,

शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना, संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, युवक परिषद् अध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा के सान्निध्य में, श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती मधुजी सुराना, श्राविका मण्डल कार्याध्यक्ष श्रीमती मंजू जी भण्डारी, श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा, महासचिव श्रीमती शशिजी टाटिया की उपस्थिति में मुख्य अतिथि श्रीमती लीला जी गोलेच्छा-पाली तथा विशिष्ट अतिथि श्रीमती उज्ज्वलाजी टाटिया के आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती शशिजी टाटिया ने श्राविका मण्डल द्वारा की गई विभिन्न गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। माननीय **श्री ईश्वरलाल जी ललवाणी** ने अपने उद्‌बोधन में कहा-''महिला को कमजोर नहीं समझना चाहिये। हमारा संघ महिला मण्डल की प्रगति के बिना आगे नहीं बढ़ सकता।'' **श्री रतनलाल जी बाफना** ने महिला मण्डल को संयुक्त परिवार में रहने तथा घर में सभा का कार्यक्रम हाथ में लेने का सुझाव दिया। **श्रीमती उज्ज्वलाजी टाटिया** ने कहा कि हमारी संघ के प्रति सजगता बढ़े एवं संघ के प्रति रुचि बढ़े, ऐसा प्रयास किया जाना चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ शाखा सम्मान के रूप में बैंगलोर को प्रथम, चेन्नई व जोधपुर शाखा को द्वितीय तथा कोलकाता व सवाईमाधोपुर शाखा को तृतीय पुरस्कार दिया गया। विहार-सेवा में पीपाड़शहर की शाखा को सर्वश्रेष्ठ घोषित कर पुरस्कृत किया गया। व्यक्तिगत स्तर पर विहार में अपनी सेवाएँ प्रदान करने पर पाली की श्रीमती सुभद्रा ज़ी धारीवाल को, मौजपुर शाखा से श्रीमती मंजू जी जैन को तथा बैंगलोर से श्रीमती कांताबाई जी को ट्राफी प्रदान की गई। वर्षीतप करने वाली तथा तपस्या, शीलव्रत अंगीकार करने वाली बहिनों का माल्यार्पण से स्वागत अभिनन्दन किया गया।

माननीय मुणोत साहब ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि पुरुष धर्म के सम्मुख है तो नारी की वजह से है। नारी और पुरुष दोनों संघ की धुरी हैं।

संघाध्यक्ष **श्री सुमेरसिंह जी बोथरा** ने कहा कि नारी जननी है, पत्नी है, बहन, लड़की एवं समाज की शान है। नारी अपनी शक्ति को पहचान कर आगे बढ़े।

श्राविका मण्डल की अध्यक्ष **श्रीमती मधु जी सुराना** ने स्थानीय शिविर के आयोजन, विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान अंगीकार करने तथा मैसूर में अध्यात्म चेतना आयाम शिविर रखे जाने की जानकारी प्रदान की।

श्रीमती कौशल्या जी सालेचा, कार्याध्यक्ष श्रीमती मंजूजी भण्डारी, श्रीमती वैजयन्ती जी मूथा ने ''जहाँ ज्ञान क्रिया और दृढ़ श्रद्धा से बहती निर्मल धारा वो पावन संघ हमारा'' की सुन्दर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती कौशल्या जी सालेचा ने किया।

पीपाड़ में स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा स्वाध्यायियों के ज्ञान में उत्तरोत्तर विकास हो, एतदर्थ स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं। इसी कड़ी में परमपूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी 'अध्यात्म-चेतना वर्ष' की पूर्णता के अवसर पर पीपाड़ शहर में दिनांक 11 से 17 जनवरी 2011 तक **सप्त दिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर** आयोजित किया गया। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में आयोजित इस शिविर में जोधपुर, जयपुर, मारवाड़, मेवाड़, पोरवाल, पल्लीवाल, महाराष्ट्र एवं दक्षिण क्षेत्र से पधारे लगभग 100 स्वाध्यायियों ने भाग लिया। स्वाध्यायियों को चार कक्षाओं में वर्गीकृत किया गया। प्रातः 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक नियमित दिनचर्या के माध्यम से स्वाध्यायियों ने ज्ञानार्जन किया। प्रवचन के पश्चात् चार कालांशों में विशिष्ट विद्वान् अध्यापकों द्वारा विभिन्न विषयों पर स्वाध्यायियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। शिविर के दौरान प्रतिदिन तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने सामूहिक कक्षा के माध्यम से स्वाध्यायियों को जीवन-निर्माण के सूत्र प्रदान किए। महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. ने बहनों की कक्षा लेकर उन्हें वैराग्य के रंग में रंगने का कार्य किया। आचार्यप्रवर ने भी कृपा कर प्रतिदिन एक-एक कक्षा को जीवन-शिक्षाएँ देकर आशीर्वाद प्रदान किया। शिविर में महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि तीन दिन वक्तृत्व कला की विशेष कक्षाओं का आयोजन किया गया, जिनमें विशेष आमंत्रित प्रशिक्षकों- श्री अनिल जी कोठारी-जोधपुर, श्री अरविन्द जी भट्ट-जोधपुर एवं श्री अशोक जी कवाड़-चेन्नई ने प्रभावी वक्तृत्व कला के गुर सिखाए। सायंकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात् प्रत्येक दिन अन्त्याक्षरी, प्रश्नमंच, वादविवाद आदि प्रतियोगिताओं में स्वाध्यायियों ने उत्साह से भाग लिया। शिविर के अन्त में स्वाध्यायियों द्वारा सीखे गये ज्ञान के मूल्यांकन हेतु परीक्षा भी आयोजित की गई।

शिविर में स्वाध्यायियों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था सुन्दर एवं

व्यवस्थित रूप से पीपाड़ श्रीसंघ ने की।

सवाईमाधोपुर में 'आओ व्रत धारण करें' एवं श्राविका अध्यात्म-चेतना शिक्षण-संस्कार शिविर सम्पन्न

आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष में परम विदुषी व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 की प्रबल प्रेरणा एवं पुरुषार्थ से 17 अक्टूबर, 2010 को 'आओ व्रत धारण करें' कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में जैन धर्म का पालन करने वाले उखलाणा एवं जैनपुरी (अलीनगर) से 175 से भी अधिक धर्मनिष्ठ मीणा बन्धु सम्मिलित हुए, जो लगभग सभी रात्रि भोजन त्यागी, निर्व्यसनी, नवकार मंत्र के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले, सामायिक, प्रतिक्रमण एवं संवर की साधना करने वाले हैं। पूज्या महासती मण्डल द्वारा आत्मिक विकास के लिए सामायिक, स्वाध्याय, व्रत, नियम, त्याग, प्रत्याख्यान तथा 12 व्रत धारण एवं वर्ष में कम से कम एक बार गुरु-दर्शन की प्रतिज्ञा की प्रभावी प्रेरणा प्रदान की गई। फलस्वरूप कइयों ने नियम ग्रहण किये।

'पंचदिवसीय श्राविका अध्यात्म चेतना शिक्षण संस्कार शिविर' 13 से 17 अक्टूबर 2010 तक आयोजित किया गया, जिसमें 140 श्राविकाओं एवं 18 वर्ष से अधिक उम्र वाली बालिकाओं ने भाग लिया। इस पंच दिवसीय शिविर में प्रत्येक दिवस को दया दिवस, आयम्बिल दिवस, नीवी दिवस व पौषधोपवास दिवस के रूप में मनाया गया।

इस शिविर में महासती मण्डल द्वारा जीव की विकास यात्रा निगोद से वर्तमान तक, कालचक्र (आरक) का वर्णन, चौथे आरक की सुलभता, पाँचवें आरे की दुर्लभता एव छठे आरे की भयावहता का वर्णन बहुत ही मार्मिक शब्दों में प्रस्तुत किया गया। अरिहन्त सिद्धों का हम पर उपकार, देव-गुरु धर्म का उपकार, 12 व्रतों का स्वरूप, कर्मग्रन्थ भाग-2, पाँच देव का थोकड़ा, महासती सुश्री प्रभा जी म.सा. द्वारा दशवैकालिक सूत्र का प्रथम अध्ययन, उत्तराध्ययन सूत्र का 19 वां अध्ययन, सामायिक सूत्र एवं प्रतिक्रमण सूत्र के मूलार्थ का मूल्यांकन, जीवन क्षण भंगुरता-नश्वरता, 'संयम से सच्चा सुख' आदि वैराग्य-उत्पादक विषयों का निरूपण बहुत ही सुन्दर ढंग से किया गया।

पूज्या महासती जी म.सा. के मुखारविन्द से सम्मान समारोह में सामूहिक रूप से लगभग 80 श्रावक-श्राविकाओं (मीना जैन धर्मावलम्बी) ने नित्य सामायिक करने के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। धर्मनिष्ठ श्रावक श्री हस्तीमल जी गोलेछा, ब्यावर ने रत्न संघ के धर्माचार्यों, महामहिम पूज्य साधु-साध्वी व संघ की गौरव गाथा पद्य रूप में प्रस्तुत की। राष्ट्रीय संघाध्यक्ष **श्री सुमेरसिंह जी बोथरा,** जयपुर ने 'गुरु एक सेवा अनेक' तथा 'गुरु एवं संघ के प्रति हमारा समर्पण निरन्तर बढ़ता रहे' विषय पर अपना उद्‌बोधन दिया। युवारत्न श्री कुशल जी गोटे वाला द्वारा 'तन है यहाँ मन है वहाँ' की प्रस्तुति एवं विवेचना की गई।

शिविर समापन पर प्रवचन सभा में डॉ. धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर प्रधान सम्पादक 'जिनवाणी' के द्वारा बहुत ही सरल एवं सरस शब्दों में नारी चेतना, अबला विकास, नारी जाति की गरिमा, उखलाना ग्रामवासियों की धार्मिकता आदि विषयों पर विशेष उद्‌बोधन दिया गया।

शिविर में त्रिशलानन्दन की दुकान, त्रिशलानन्दन व्रत नियम स्टोर की स्थापना की गई जिसमें जागृत महिला शिविरार्थियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

-बाबूलाल जैन

जोधपुर में अध्यात्म-चेतना वर्ष के 18 दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न

परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी 'अध्यात्म-चेतना वर्ष' के उपलक्ष्य में सूर्यनगरी जोधपुर में दिनांक 1 जनवरी से 18 जनवरी 2011 तक अठारह दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किए गए। सूर्यनगरी जोधपुर में रत्नसंघ के परिवारों की एकजुटता इन कार्यक्रमों में देखने को मिली। कार्यक्रमों का शुभारम्भ तथा नववर्ष का प्रारम्भ दिनांक 1 जनवरी को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा में सामूहिक सामायिक के साथ हुआ। भवन का सम्पूर्ण हॉल सामायिक वेशभूषा में भाई-बहिनों से खचाखच भर गया। देरी से आने वाले भाई-बहनों को सीढ़ियों में ही बैठकर संतोष करना पड़ा। इस अवसर पर साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. का पावन सान्निध्य एवं प्रवचनामृत प्राप्त हुआ। 2 जनवरी को विशाल अध्यात्म-चेतना रैली सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक से प्रारम्भ हुई। रैली में सर्वप्रथम अध्यात्म-चेतना वर्ष के संदेश को प्रसारित करते हुए बादलचन्द सुगनकंवर

विद्यालय की छात्राएँ कतारबद्ध चल रही थीं। उनके हाथों में आचार्य हस्ती के संदेशयुक्त बैनर शोभायमान हो रहे थे। उनके बाद श्री जैन रत्न बालिका मण्डल की बालिकाएँ गगनभेदी नारों के साथ रैली को गुंजायमान कर रही थी। श्राविका मण्डल की सभी महिलाएँ निर्धारित गणवेश में कतारबद्ध होकर आचार्य भगवन्त के भज़नों से माहौल को भक्तिमय बना रही थीं। श्री जैन रत्न युवक परिषद् के युवाबन्धु सफेद गणवेश में पूरी रैली को व्यवस्थित बना रहे थे तथा युवा भजन गायक भजनों के माध्यम से आचार्य भगवन्त के संदेशों से जन-साधारण को परिचित करा रहे थे। रैली के अन्त में संघ संरक्षक न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा, संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, कार्याध्यक्ष श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल, स्थानीय संघ अध्यक्ष श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना, समाजसेवी श्री रावलचन्द जी चौपड़ा, श्री पदम जी मेहता, श्री प्रकाश जी खिंवसरा, शहर विधायक श्री कैलाश जी भंसाली सहित संघ पदाधिकारीगण तथा सभी विशिष्ट श्रावकगण सम्मिलित हो रैली की शोभा बढ़ा रहे थे। रैली में शाकाहार प्रचार, व्यसनमुक्ति एवं संस्कार केन्द्र की झाँकियाँ रैली में चार चाँद लगाती हुई प्रतीत हुई। घोड़ों का चौक से प्रारम्भ हुई रैली सिरे बाजार होती हुई नेहरू पार्क स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन पर सम्पन्न हुई। रैली समाप्ति के पश्चात् स्काउट एण्ड गाइड प्रांगण में आयोजित संघ-स्नेह भोज का सभी ने लुत्फ उठाया। रैली में जोधपुर शहर के साथ ही आसपास ग्रामों के श्रावक-श्राविकाओं ने भी भाग लिया।

3 जनवरी को युवक परिषद् द्वारा सेवा कार्य दिवस के रूप में विभिन्न गौशालाओं, अनाथआश्रम तथा सेल्टर टू सफरिंग संस्था में जाकर जीवदया एवं मानवसेवा का कार्य किया। श्राविका मण्डल द्वारा इस दिन सामूहिक एकाशन एवं प्रश्नमंच का आयोजन रखा गया। 4 जनवरी को युवक परिषद् द्वारा विशाल रक्तदान एवं रक्तजाँच शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें लगभग 125 युवारत्न बन्धु, श्राविका एवं बालिकाओं ने रक्तदान किया। 5 जनवरी को चौपासनी हाउसिंग बोर्ड , 6 जनवरी को सरस्वती नगर, 7 जनवरी को महामन्दिर, 8 जनवरी को घोड़ों का चौक, 11 जनवरी को लक्ष्मीनगर, 12 जनवरी को नेहरू पार्क, 14 जनवरी को सिंहपोल, 15 जनवरी को प्रतापनगर में क्षेत्रीय सामूहिक सामायिक-साधना का आयोजन हुआ।

09 जनवरी को आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं का आयोजन

जोधपुर के विभिन्न केन्द्रों पर हुआ। 10 जनवरी को अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों की जानकारी एवं उपचार सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क में डॉ. अशोक जी कोठारी-जयपुर द्वारा किया गया। 13 जनवरी को भजन प्रतियोगिता भी इसी प्रांगण में आयोजित हुई।

दिनांक 16 से 18 जनवरी 2011 तक अध्यात्म चेतना वर्ष की पूर्णाहुति का कार्यक्रम सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक में साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ। लगभग 200 श्रावक-श्राविकाओं ने सामूहिक तेले की आराधना की। साध्वीप्रमुखा जी के मुखारविन्द से अध्यात्म-चेतना वर्ष में 27 दम्पतियों ने शीलव्रत का नियम अंगीकार किया।

पाली में 13-14 नवम्बर को आचार्य हस्ती पर राष्ट्रिय विद्वत्संगोष्ठी सम्पन्न

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में आचार्य हस्ती जन्मशताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष के अन्तर्गत पाली-मारवाड़ में 13-14 नवम्बर 2010 को **'आचार्य हस्ती का साहित्य और समाज को अवदान'** विषय पर विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संघ में 17 वर्षों के पश्चात् विद्वत् संगोष्ठी की गतिविधि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.शिखरमल सुराणा, चेन्नई की सम्प्रेरणा से पुनः सक्रिय हुई। विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर, आचार्य श्री हस्ती जन्मशताब्दी समिति एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-पाली के संयुक्त तत्त्वावधान में हुआ। संगोष्ठी का संयोजन जिनवाणी के सम्पादक प्रो. धर्मचन्द जैन ने किया।

संगोष्ठी का शुभारम्भ 13 नवम्बर को प्रातः 9 बजे आगमज्ञ आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं सन्तवृन्द की सन्निधि में हुआ। राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया मुख्यातिथि के रूप में पधारे। प्रो. सागरमल जैन, शाजापुर एवं प्रो. दयानन्द भार्गव, जयपुर ने सारस्वत अतिथि के रूप में सम्बोधित किया। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि आचार्य हस्ती ने सामायिक-स्वाध्याय का अभियान चलाकर जन-जन को जीने की सच्ची कला सिखाई। उन्होंने समत्व योग को साध लिया था। वे जैसा कहते थे वैसा ही जीते थे फलस्वरूप वे लाखों

लोगों को सन्मार्ग दिखाने में सफल हुए।

मुख्यातिथि **न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया** ने कहा कि आज युवाओं को आचार्य हस्ती के विचारों से अवगत कराने की आवश्यकता है। स्वाध्याय में महती शक्ति है जो सच्चे नागरिक पैदा कर सकती है। हर व्यक्ति को स्वाध्याय एवं सामायिक साधना का संकल्प करना चाहिए। **तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी** ने कहा कि विद्वत् वर्ग समाज का मस्तिष्क होता है, अतः उसके चिन्तन का लाभ-साधना एवं समझ के लिए उपयोगी है। धन को महत्त्व देने वाले को ज्ञान की उपासना का भी आनन्द लेना चाहिए।

सारस्वत अतिथि **प्रो. सागरमल जी जैन** ने कहा कि आचार्य हस्ती का जीवन बोलता था। जीवन को तनावमुक्त करने की कला सामायिक है। आचारांग सूत्र में समता अर्थात् सामायिक में धर्म कहा गया है। उन्होंने सामायिक, साधना का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए उसके स्वरूप की चर्चा की।

दूसरे सारस्वत अतिथि **प्रो. दयानन्द जी भार्गव** ने कहा कि केवली और श्रुत केवली की तरह जो समाज को युगानुरूप दिशा-बोध देता है, वह लोककेवली होता है। आचार्य हस्ती का व्यक्तित्व वैसा ही था। आचार्य हस्ती के जीवनग्रन्थ नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं के माध्यम से आचार्य हस्ती के दर्शन का प्रतिपादन करते हुए प्रो. भार्गव ने कहा कि आचार्य हस्ती के अमृत वचन आगम की वाणी का सरल रूप हैं। उन्होंने जीवन ग्रन्थ के 'अमृतवाक्' अध्याय के स्वतन्त्र प्रकाशन की आवश्यकता प्रतिपादित की।

विषय का प्रवर्तन करते हुए संगोष्ठी के संयोजक **डॉ. धर्मचन्द जैन** ने आचार्य हस्ती के द्वारा साहित्य तथा समाज को अवदान पर सारगर्भित शैली में प्रकाश डाला तथा समागत विद्वानों एवं श्रोताओं का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के **अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा** ने विद्वत्-परिषद् की गतिविधियों की पुनः सक्रियता एवं निरन्तरता की आवश्यकता बताते हुए विद्वानों का आभार प्रकट किया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पाली के अध्यक्ष श्री रूपकुमार जी चौपड़ा ने स्थानीय संघ की ओर से सबका स्वागत किया।

विद्वत् संगोष्ठी में प्रथम दिन तीन तकनीकी सत्र हुए तथा दूसरे दिन 14 नवम्बर को चतुर्थ एवं पंचम सत्र सम्पन्न हुए। इन पाँच सत्रों में 31 विद्वानों ने अपने

शोधपत्र निम्नानुसार प्रस्तुत किये-

प्रथम-सत्र (अपराह्न 1 से 3 बजे तक)

1. श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली-	आचार्य हस्ती विरचित काव्यपदों में आध्यात्मिकता
2. डॉ. देवेन्द्र कुमार सिंह 'गौतम', जोधपुर-	आचार्य हस्ती की दृष्टि में प्रार्थना का स्वरूप
3. डॉ. सुषमा सिंघवी, जयपुर-	आचार्य हस्ती विरचित काव्यपदों में सामाजिक मूल्य
4. डॉ. सत्यप्रकाश दुबे, जोधपुर-	नन्दीसूत्र के सम्पादन का वैशिष्ट्य

इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. दयानन्द भार्गव ने की तथा संयोजन डॉ. संजीव भानावत, जयपुर ने किया।

द्वितीय सत्र (अपराह्न 3.20 से 4.45 बजे तक)

1. श्री ज्ञानेन्द्र बाफना, जोधपुर-	मारवाड़ क्षेत्र को आ. हस्ती का अवदान
2. डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई-	आचार्य हस्ती और सामाजिक एकता
3. डॉ. मंजुला बम्ब, जयपुर-	आचार्य हस्ती द्वारा नारी-जागरण
4. डॉ. संजीव भानावत, जयपुर-	गजेन्द्र व्याख्यान माला में प्राप्त जीवन मूल्यों का विवेचन।

इस सत्र की अध्यक्षता श्री कैलाशचन्द जी हीरावत ने की तथा संचालन डॉ. सुरेश सिसोदिया, उदयपुर ने किया।

तृतीय सत्र (सायं 7 बजे से रात्रि 9.30 बजे तक)

1. सौ. मंगलाबाई चोरड़िया, जलगाँव-	आचार्य हस्ती द्वारा बालपीढ़ी में संस्कारारोपण की प्रेरणा
2. डॉ. सुरेश सिसोदिया, उदयपुर-	आचार्य हस्ती रचित कुलक कथाएँ
3. श्री कुशल गोटेवाला, सवाईमाधोपुर-	सवाईमाधोपुर क्षेत्र को आचार्य हस्ती का योगदान।
4. श्री प्रसन्नचन्द बाफना, जोधपुर-	सामाजिक समरसता और आचार्य हस्ती
5. डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर-	अवचूरियुक्त दशवैकालिक के सम्पादन का वैशिष्ट्य
6. श्री नौरतन मेहता, जोधपुर-	संघ ऐक्य एवं उन्नयन हेतु प्रेरणाएँ।

7. सुश्री नेहा बैद, जोधपुर- आचार्य हस्ती की प्रवचन शैली का वैशिष्ट्य

8. श्री हस्तीमल गोलेच्छा, ब्यावर- संघ एवं समाज में सामंजस्य की असाम्प्रदायिक दृष्टि

9. श्री अशोक कुमार जैन, जयपुर- पल्लीवाल क्षेत्र को आचार्य हस्ती का योगदान

रात्रिकालीन सत्र की अध्यक्षता प्रो. सागरमल जैन ने की तथा संचालन श्री धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार जोधपुर ने की।

14 नवम्बर, 2010

चतुर्थ सत्र (प्रातः 9 से 11.15 बजे तक)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं सन्तवृन्द के सान्निध्य में प्रारम्भ हुए इस सत्र में सारस्वत अतिथि **न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा** ने स्वाध्याय की महिमा पर विवेचन करते हुए कहा कि स्वाध्याय स्वनिर्मित कवच है जो सांसारिक प्रपंच के तूफानों में धर्मज्ञान के दीप को जलाए रखता है। स्वाध्यायी के जीवन को देखकर लगना चाहिए कि वह स्वाध्यायी है। विद्वानों के ऐसे समागम से समाज में नई चेतना आती है। इस तरह के कार्यक्रम सतत होने चाहिए। **प्रो. सागरमल जी जैन** ने 'धर्म का मर्म' विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि राग-द्वेष आदि विकारी भावों के निराकरण की साधना ही धर्म है। जिसे प्रेय एवं श्रेय का विवेक है वह धर्ममार्ग में प्रवृत्त होता है। समता का धर्म-साधना में प्रमुख स्थान है। **प्रो. दयानन्द भार्गव** ने इस अवसर पर कहा कि आत्मा में अनन्त सुख है तो वह काम-भोग में प्रवृत्त क्यों होता है? संगोष्ठी संयोजक **डॉ. धर्मचन्द जैन** ने कहा कि स्वर्ग और मोक्ष भले ही परोक्ष हैं, किन्तु कषायों के शमन से प्राप्त शांति का अनुभव प्रत्यक्ष होता है। **तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.** ने वक्ताओं के कथन में समन्वय स्थापित करते हुए कहा कि आत्मसुख को शब्दों में समेटना मुश्किल है, प्रज्ञा सबमें है उसे सतत साधना से जागरित किया जा सकता है।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष **श्री पी.शिखरमल सुराणा** ने दक्षिण भारत को आचार्य हस्ती का योगदान विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य हस्ती दक्षिण भारत में विचरण करने वाले प्रथम स्थानकवासी आचार्य थे। वहाँ उन्होंने अभिनव सांस्कृतिक धार्मिक चेतना जगाई।

स्थानीय संघ के श्री मांगीलाल जी चौपड़ा ने धन्यवाद ज्ञापित किया एवं

सूचनाएँ दी।

पंचम सत्र (1 से 3.15 बजे तक)

1. श्रीमती सुशीला बोहरा, जोधपुर- आचार्य हस्ती रचित जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग 3 का अनुशीलन
2. डॉ. हेमलता जैन, जोधपुर- हिन्दी पद्यानुवाद युक्त दशवैकालिक सूत्र का वैशिष्ट्य
3. श्री धर्मचन्द जैन, जोधपुर- अन्तगडदशासूत्र के संस्करण का वैशिष्ट्य
4. श्री चंचलमल चोरडिया, जोधपुर- स्वाध्याय संघ और स्वाध्यायी : आचार्य हस्ती की अनूठी देन
5. प्रो. महेन्द्र भण्डारी, जोधपुर- विश्वशान्ति एवं रष्ट्र-निर्माण में आचार्य हस्ती का चिन्तन
6. प्रो. गणेशीलाल सुथार, जोधपुर- आचार्य हस्तीमल विरचित तत्त्वार्थगीता के आलोक में ज्ञान एवं मोक्ष-विचार का विवेचन
7. डॉ. पदमचन्द मुणोत, जयपुर- जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-4 का अनुशीलन
8. डॉ. सरोज कौशल, जोधपुर- गजेन्द्र व्याख्यानमाला में प्रबन्धन के सूत्र
9. डॉ. प्रभावती चौधरी, जोधपुर- आध्यात्मिक आलोक में साधना के सूत्र

इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. सुषमा सिंघवी, जयपुर ने की तथा संयोजन डॉ. सत्यप्रकाश दुबे, जोधपुर ने किया।

समापन सत्र में संगोष्ठी संयोजक **प्रो. धर्मचन्द जैन** ने संगोष्ठी प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमें 31 विद्वानों के विचारों के माध्यम से आचार्य हस्ती के प्रभावी व्यक्तित्व एवं कृतित्व का व्यापक दृष्टि से मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त हुआ है। उन्होंने समाज को एवं साहित्य को जो कुछ दिया वह अमर रहेगा। संगोष्ठी पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए **प्रो. दयानन्द भार्गव** ने कहा कि यह संगोष्ठी आशातीत सफल रही है। अनेक नये आयाम आचार्य हस्ती के बारे में ज्ञात हुए हैं तथा वे आश्वस्त होकर जा रहे हैं। **डॉ. दिलीप धींग**, चेन्नई ने संस्कृति संरक्षण के लिए ऐसे ज्ञान अनुष्ठान को आवश्यक बतलाया। समापन सत्र के **मुख्यातिथि डॉ. सागरमल जैन** ने कहा कि जैन धर्म गुणवाचक दृष्टिकोण रखता

है। आचार्य हस्ती ने ऐसी ही गुणदृष्टि से साहित्य का सर्जन किया और समाज को भीतर-बाहर से समृद्ध किया।

आचार्यप्रवर एवं सन्तवृन्द का विभिन्न सत्रों में सान्निध्य प्राप्त हुआ। **तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी** का सान्निध्य रात्रिकालीन सत्र को छोड़कर शेष सभी सत्रों में प्राप्त हुआ। वे आँख मूंदकर ध्यानस्थ मुद्रा में सभी आलेखों का श्रवण करते रहे तथा मन ही मन उनका मूल्यांकन करते रहे। समापन सत्र में उन्होंने कहा कि गुरु आशीर्वाद से असम्भव भी सम्भव हो जाता है।

संगोष्ठी के प्रेरक **श्री पी. शिखरमल सुराणा** ने जैन विद्वत् परिषद् को सक्रिय एवं सतत गतिमान रखने की भावना अभिव्यक्त की। आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी समिति के महासचिव **श्री जगदीशमल जी कुम्भट** ने सबको साधुवाद दिया और आभार ज्ञापित किया। स्थानीय संघ की ओर से **श्री ताराचन्द जी सिंघवी** एवं **रूपकुमार जी चौपड़ा** ने शॉल द्वारा विद्वानों को सम्मानित किया तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की ओर से **कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराज चौधरी** ने प्रतीक चिह्न वितरित किए। **श्री मांगीलाल जी चौपड़ा** ने गोष्ठी की सफलता पर हर्ष की अभिव्यक्ति की एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

आचार्य श्री हस्ती स्वाध्याय प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

युगमनीषी, युगप्रभावक, स्वाध्याय-सामायिक के प्रबल प्रेरक, प्रतिपल स्मरणीय, परमाराध्य आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिपूर्ण **'नमोपुरिसवर गंधहत्थीणं'** ग्रन्थ के आधार पर **''आचार्य श्री हस्ती स्वाध्याय प्रतियोगिता''** आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता के प्रथम चरण की परीक्षा में 1830 महानुभावों ने भाग लिया। उनमें से जिन्होंने 495.50 अथवा इससे अधिक अंक प्राप्त किये, ऐसे 448 महानुभावों का द्वितीय चरण की परीक्षा हेतु चयन किया गया।

द्वितीय चरण की परीक्षा 19 दिसम्बर 2010 को 27 केन्द्रों पर आयोजित की गई, जिसमें 318 महानुभावों ने भाग लिया। तीन घण्टे की इस परीक्षा में 100 प्रश्न दिये गये थे, जिनमें से 74 प्रश्नों के उत्तर के साथ उनके पेज नम्बर भी लिखने थे। शेष 26 प्रश्नों के उत्तर बिना पेज नम्बर के पूछे गये थे।

इस द्वितीय चरण की परीक्षा में 255 प्रतियोगी उत्तीर्ण रहे। वरीयता सूची में स्थान पाने वाले प्रतियोगी निम्नांकित हैं- **प्रथम स्थान-** सौ. प्रभा संचेती-अमरावती (97 अंक) राशि 1,00,000 रुपये, **द्वितीय स्थान-** सौ. अरुणा जी जैन-होशियारपुर (96 अंक), श्री महेन्द्रकुमार जी जैन-सवाईमाधोपुर (96 अंक) राशि 41,000 रुपये प्रत्येक, **तृतीय स्थान-** सौ. कनीनिका जैन-जयपुर (95.5 अंक), सुश्री ममता जी लुंकड़-भोपालगढ़ (95.5 अंक) राशि 16,000 रुपये प्रत्येक, **चतुर्थ स्थान-** सौ. सुनिता जी मेहता-जोधपुर (93.5 अंक), सौ. पूजा छल्लाणी (93.5) राशि 6,000 रुपये प्रत्येक, **पंचम स्थान-** सौ. आरती मूथा (93 अंक) राशि 3,000 रुपये , **षष्ठ स्थान-** सौ. श्रुति जी मेहता-इन्दौर (92.5 अंक) राशि 2,000 रुपये। इनके अलावा 50 से 92 तक अंक पाने वाले सभी महानुभावों को 500-500 रुपये के समान पुरस्कार चैक द्वारा भिजवाये जा रहे हैं।

स्वाध्याय प्रतियोगिता के प्रथम चरण में भाग लेने वाले सभी 1830 महानुभावों को स्मृति चिह्न तथा आचार्य श्री हस्ती के प्रवचनों की पुस्तक सम्मान स्वरूप प्रदान की जायेगी।

उक्त सभी वरीयता पुरस्कार एवं सम्मान पुरस्कार उदारमना, धर्मनिष्ठ, संघ समर्पित, सेवाभावी श्रावकरत्न श्रीमान् पी. शिखरमल जी सुराणा-चेन्नई ने अपने पूज्य पिताश्री, संघनिष्ठ श्रावकरत्न स्व. श्रीमान् पारसमल जी सुराणा (नागौर वाले) की पावन स्मृति में प्रदान किये हैं, अतः सुराणा साहब एवं उनके सम्पूर्ण परिवार के प्रति हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

स्वाध्याय प्रतियोगिता का परिणाम जानने एवं सम्मान-पुरस्कार प्राप्त करने सम्बन्धी जानकारी हेतु सम्पर्क करें- **सुशीला बोहरा,संयोजक-** 94141-33879, **धर्मचन्द जैन, सह-संयोजक-** 93515-89694, **स्वाध्याय प्रतियोगिता कार्यालय-**0291-2630490

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 31 जुलाई 2011 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की आगामी परीक्षा कक्षा 1 से 12 तक के लिए 31 जुलाई 2011, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी।

उक्त परीक्षा संशोधित पाठ्यक्रम एवं संशोधित पाठ्यपुस्तकों के आधार

पर आयोजित होगी। इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि संशोधित पाठ्यपुस्तकें मंगाने हेतु शिक्षण बोर्ड कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर से सम्पर्क करें।

12 कक्षाओं का संशोधित पाठ्यक्रम इस प्रकार है-

कक्षा प्रथम- जैन कौन-देव-गुरु-धर्म(10) ,सामायिक मूल, 32 दोष एवं विधि सहित (30), उच्चारण शुद्धि के नियम (5), 25 बोल में 1 से 13 तक (मूल)(20), भगवान महावीर(10), नवकार मंत्र, जय बोलो महावीर स्वामी की (10), 24 तीर्थकरों के नाम, सप्तकुव्यसन, पाँच अभिगम, विनय-स्वरूप, महत्त्व (15)।

कक्षा द्वितीय- सामायिक सूत्र अर्थ एवं प्रश्नोत्तर (40), 25 बोल-14 से 25 तक मूल (20), भगवान पार्श्वनाथ (10), ओम शान्ति-शान्ति, जरा कर्म देखकर (10), ज्ञान प्राप्ति के बाधक कारण महापापी, यतना-स्वरूप-महत्त्व (10), प्रथम कक्षा के सूत्र-तत्त्व में से (10)।

कक्षा तृतीय- प्रतिक्रमण सूत्र-इच्छामि खमासमणो तक (30), 25 बोल की परिभाषाएँ (20), 67 बोल (10), भगवान ऋषभदेव (10), एक सौ आठ बार, दुनिया में देव (10), वन्दना का अर्थ एवं भेद, बारह भावना के दोहे, पाँच आचार, जैन धर्म और पर्यावरण (10), द्वितीय कक्षा के सूत्र तत्त्व में से (10)।

कक्षा चतुर्थ- प्रतिक्रमण सूत्र-पूर्ण-विधि सहित (40), कर्म प्रकृति, उपयोग, संज्ञा का थोकड़ा, 14 नियम, 3 मनोरथ (20), भगवान शान्तिनाथ (10), मेरे अन्तर भया....आओ भगवन्.....(10), नवकारसी, उपवास, दया एवं संवर के पाठ, सचित्त-अचित्त विवेक,जमीकन्द त्याग (10), तृतीय कक्षा के सूत्र में से (10)

कक्षा पाँचवी- प्रतिक्रमण सूत्र अर्थ एवं प्रश्नोत्तर (40), समिति गुप्ति का थोकड़ा (20), भक्तामर 1 से 16 श्लोक तक भावार्थ सहित (10), मैंने बहुत किए अपराध, जय जिनवर जय.....(10), आयम्बिल, एकासन, पोरिसी के प्रत्याख्यान (10), चतुर्थ कक्षा के सूत्र तत्त्व में से (10)।

कक्षा छठी- दशवैकालिक अ. 1,2 मूल अर्थ कण्ठस्थ, जीवनोपयोगी गाथाएँ, अन्तगड सूत्र-सामान्य परिचय (35), गति-आगति, जयन्ती बाई का थोकड़ा (30), रत्नाकर पच्चीसी (हिन्दी) (10), भक्तामर-17 से 32 श्लोक तक भावार्थ सहित (10), सामान्य-रात्रि भोजन त्याग, अस्वाध्याय के 34 कारण, आगम-स्वरूप एवं विशेषताएँ, पौषधव्रत-भेद एवं विशेषताएँ (15)।

कक्षा सप्तमी- दशवैकालिक अ. 3 मूल-अर्थ कण्ठस्थ (30), अन्तगड सूत्र-सामान्य प्रश्नोत्तर (15), नव तत्त्व (हिन्दी अर्थ)(40), भक्तामर-33 से 48 श्लोक तक भावार्थ सहित (15)।

कक्षा अष्टम-दशवैकालिक अ. 4 मूल व अर्थ कण्ठस्थ (30), लघुदण्डक का

थोकड़ा (30), क्रोध-मान-माया-लोभ विजय (10), वीर स्तुति-मूल व शब्दार्थ भावार्थ कण्ठस्थ (20), आराधक-विराधक की विशेषताएँ (10)।

कक्षा नवमी- उत्तराध्ययन अ. 3,4 मूल व अर्थ कण्ठस्थ (40), तत्त्वार्थ-अ.1,2 भावार्थ एवं प्रश्नोत्तर (20), अनेकान्त-स्वरूप (10), गुणस्थान स्वरूप का थोकड़ा (20), व्रत-प्रत्याख्यान सम्बन्धी जानकारी (10)।

कक्षा दसवीं- उत्तराध्ययन अ. 10 मूल व अर्थ कण्ठस्थ (25), तत्त्वार्थ अ. 3,4,5 भावार्थ एवं प्रश्नोत्तर (25), सुखविपाक-मूल व अर्थ कण्ठस्थ (10), प्राकृत व्याकरण अ. 1 से 5 (10), जैन धर्म की मौलिक विशेषताएँ (10), जीव-पज्जवा का थोकड़ा (20)।

कक्षा ग्यारहवीं- उत्तराध्ययन अ. 29 मूल व अर्थ कण्ठस्थ (40), तत्त्वार्थ अ. 6,7 भावार्थ एवं प्रश्नोत्तर (20), कर्मग्रन्थ भाग-2 (20), प्राकृत व्याकरण अ. 6 से 10 तक (10), स्थानकवासी परम्परा की मान्यताएँ (10)।

कक्षा बारहवीं- आचारांग सूत्र के-चयनित सूत्र (30), तत्त्वार्थ अ.-8,9,10 भावार्थ एवं प्रश्नोत्तर (30), प्राकृत व्याकरण अ. 11 से 15 तक (10), कर्मग्रन्थ भाग-3 (20), राजप्रश्नीय सूत्र के प्रश्नोत्तर (10)।

सुशीला बोहरा	गौतमचन्द कवाड़	धर्मचन्द जैन	शिक्षण बोर्ड
संयोजक	सह-संयोजक	रजिस्ट्रार	कार्यालय
9414133879	9444054522	9351589694	0291-2630490

आचार्य हस्ती अहिंसा अवार्ड-2010

जलगाँव- आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. की पावन स्मृति में प्रतिवर्ष अहिंसा के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय काम करने वाले सज्जनों को रतनलाल सी.बाफना फाउण्डेशन ट्रस्ट द्वारा "आचार्य हस्ती अहिंसा अवार्ड" से सम्मानित किया जाता है। ट्रस्ट की ओर से इस वर्ष का अहिंसा अवार्ड दिनांक 30.1.2011 को (1) विनियोग परिवार-मुम्बई से राजेन्द्र जी जोशी को (2) गीताबेन रांभिया स्मृति अहिंसा ट्रस्ट-अहमदाबाद से बच्चूभाई शाह को (3) शेल्टर टू सफरिंग ट्रस्ट-जोधपुर से डॉ. रत्ना जी को अहिंसा, करुणा एवं शाकाहार के क्षेत्र में किये गये उत्कृष्ट कार्यों के लिए अहिंसा तीर्थ गोसेवा अनुसंधान केन्द्र कुसुम्बा, जलगांव के प्रांगण मे भव्य समारोह में प्रदान किया गया। इस सम्मान में प्रत्येक को 51 हजार रुपये एवं प्रतीक चिह्न दिए गए। कार्यक्रम में विशेष अतिथि श्री मोफतराज जी मुणोत-मुम्बई (संयोजक, संरक्षक मण्डल) एवं श्री पी.एस. सुराणा-चेन्नई (अध्यक्ष, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर) थे। प्रमुख अतिथि

के रूप में समाज चिन्तामणी श्री सुरेश दादा जैन (विधायक, जलगांव), श्री सुमेरसिंह जी बोथरा-जयपुर (अध्यक्ष-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ), श्री कैलाशचन्द जी हीरावत-जयपुर (सह संयोजक, शासन सेवा समिति) पधारे। कोलकाता से पधारे श्री चिरंजीलाल जी बगड़ा प्रमुख वक्ता थे।

'जीवन-सूत्र' पुस्तक का लोकार्पण

सिकन्द्राबाद- आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में जैनाचार्य हस्ती जन्म शताब्दी समिति (आं.प्र.) के तत्त्वावधान में मनीषी श्री तेजराज जी जैन द्वारा संकलित पुस्तक 'जीवन सूत्र' (आचार्य हस्ती के जीवनोपयोगी विचारों का संकलन) का लोकार्पण प्रख्यात कलाविद् पद्मश्री जगदीश जी मित्तल के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष एवं अन्तरराष्ट्रीय अधिवक्ता श्री पी. शिखरमल सुराणा थे। इस अवसर पर समाजसेवी रामगोपाल जी गोयनका, स्वतन्त्रवार्ता के सम्पादक डॉ. राधेश्याम जी शुक्ल, साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग, समिति के अध्यक्ष श्री मांगीलाल जी सुराणा, कार्याध्यक्ष श्री सुरेन्द्र जी लुणिया, प्रधान सचिव श्री श्रीपाल जी देशलहरा ने भी विचाराभिव्यक्ति की। कविद्वय श्री सुरेश जी गुगलिया एवं समिति के सचिव श्री पारस जी डोशी ने सुन्दर संचालन किया। उल्लेखनीय है कि 'जैन सूत्र' पुस्तक 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' का एक संक्षिप्त रूप है।

उत्तराध्ययन सूत्र पर विद्वत्संगोष्ठी

बैंगलुरु- आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष के अन्तर्गत श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बैंगलुरु द्वारा श्री श्वेताम्बर जैन श्रावक संघ, हलसूर के महावीर भवन में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 11 की सन्निधि में उत्तराध्ययन सूत्र पर विश्लेषणात्मक विद्वत्संगोष्ठी आयोजित हुई। संगोष्ठी में प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द जी जैन, जलगाँव, डॉ. प्रियदर्शना जी जैन, चेन्नई, डॉ. अशोक जी कवाड़, चेन्नई तथा बैंगलुरु के श्री ज्ञानराज जी मेहता, श्री शान्तिलाल जी बोहरा, श्री नवरतनमल जी भंसाली स्वाध्यायी सज्जनों ने विश्लेषणपरक उद्बोधन दिए। संगोष्ठी का संचालन श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल ने बखूबी किया। सर्वप्रथम उद्बोधन महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. ने दिया तथा कहा कि उत्तराध्ययन सूत्र आत्म-समाधि व आत्म प्रसन्नता प्रदान करने वाला एक विशिष्ट

जैन आगम है। प्रत्येक सुज्ञ श्रावक-श्राविका एवं साधु-साध्वीवर्ग के लिए इसकी वाचना, पृच्छना, धर्मकथा आदि ग्रहणीय हैं। इसमें चारों योग का समावेश है यथा- चरणानुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग एवं द्रव्यानुयोग। उत्तराध्ययन सूत्र भगवान महावीर का अंतिम व महत्त्वपूर्ण संदेश है। श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ जलगांव के प्राचार्य **श्री प्रकाशचन्द जी जैन** ने अपने प्रासंगिक एवं महत्त्वपूर्ण प्रमुख उद्‌बोधन में कहा कि- जीवन की हर समस्या का समाधान देने वाले सूत्र का नाम है- उत्तराध्ययन सूत्र। आचारांग के बाद जिस सूत्र का पठन होता है वह है उत्तराध्ययन सूत्र। आचार्य श्री हस्ती के गुरु जैनाचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. स्वयं प्रतिदिन 2000 गाथाओं का स्वाध्याय करते थे। जिनमें उत्तराध्ययन सूत्र प्रमुख था। यही प्रभाव आचार्य श्री हस्ती पर पड़ा। जो ज्ञान की आराधना स्वयं करता है उसे ही ज्ञान का महत्त्व भी मालूम पड़ता है। जो स्वयं विनयवान होता है तो उनकी नहीं चाहने पर भी प्रसिद्धि स्वयं हो जाती है। उत्तराध्ययन जैन धर्म की गीता है। अतः इसका सभी निरन्तर स्वाध्याय करें। मद्रास विश्वविद्यालय में जैनोलोजी विभाग की अध्यक्ष-**श्रीमती डॉ. प्रियदर्शना जी जैन** चेन्नई ने बताया कि उनके जीवन पर आचार्य श्री हस्ती के द्वारा चार भागों में लिखित- जैन धर्म का मौलिक इतिहास व उत्तराध्ययन सूत्र के तीन भागों का बड़ा प्रभाव पड़ा है। उन्होंने जीवन की हर समस्या का समाधान बड़े ही वैज्ञानिक ढ़ंग से हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में बताते हुए, उत्तराध्ययन सूत्र के माहात्म्य को बताया। भगवान महावीर के अनुसार नॉलेज का मेनेजमेन्ट स्वयं के साथ कैसे करें, का वैज्ञानिक रूप से इस सूत्र में विश्लेषण किया गया है। श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ के महामंत्री- **श्री ज्ञानराज जी मेहता**, बैंगलूरु ने उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से समाचारी अध्ययन पर अपने विशेष उद्‌गार प्रकट किए। प्रखरवक्ता **महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.** ने अपने महत्त्वपूर्ण उद्‌बोधन में फरमाया कि उत्तराध्ययन में उजास है, मोक्ष का पुरुषार्थ है। समस्या का समाधान है उत्तराध्ययन। आत्मार्थी सोचता है कि मेरा अज्ञान टोटल समाप्त हो। शास्त्र-श्रवण से ज्ञान, ज्ञान से विज्ञान, विज्ञान से प्रत्याख्यान एवं प्रत्याख्यान से मोक्ष। आत्मा में आठ गुण प्रकट करे। जो हो रहा है, जैसा हो रहा है उस पर द्रष्टाभाव रहे, यही भाव उत्तराध्ययन सूत्र दिखाता व सिखाता है। सुखी को देखकर सुखी होना व दुःखी को देखकर अनुकंपित होना, यह उत्तराध्ययन सूत्र का निरन्तर स्वाध्याय करने वाले का गुण है। श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ बैंगलूरु के संयोजक **श्री शांतिलाल जी बोहरा**, बैंगलूरु ने

उत्तराध्ययन सूत्र के 36 वें अध्ययन जीव व अजीव तत्त्व पर अपना उद्‌बोधन दिया। उन्होंने नौकरी व गुलामी का अन्तर बताकर, शास्त्रों को आत्म भावों से पढ़ने-गुणने की बात कही। परम गुरुभक्त सतत स्वाध्यायी **डॉ. अशोक जी कवाड़,** चेन्नई ने उत्तराध्ययन सूत्र के सम्यक्त्व पराक्रम विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पराक्रम व पुरुषार्थ में अन्तर है। विनय हर जगह सीखने को मिलता है। हमारा धर्म बड़ा जबरदस्त है, किन्तु धर्म में जबरदस्ती नहीं चलती है। मोक्ष महल की बात महत्त्वपूर्ण है पर कठिन नहीं। अतः यह संकल्प करें कि उत्तराध्ययन सूत्र पढ़े बिना मरना नहीं। बैंगलूरु के वरिष्ठ स्वाध्यायी **श्री नवरतनमल जी भंसाली** ने संगोष्ठी के अपने अंतिम उद्‌गार में बताया कि उत्तराध्ययन सूत्र के कथानक हमारे जीवन को प्रभावित व प्रकाशित करने वाले है, अतः जरूर शास्त्र स्वाध्याय को जीवन का अनिवार्य अंग बनाएँ। हम पूर्ण विनयवान व प्रज्ञावान बनें। **परम विदुषी महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.** ने फरमाया कि दिनभर चली इस उत्तराध्ययन सूत्र संगोष्ठी का सार जीवन में उतारें, तभी हमारा यह भव व परभव सुखकारी हो सकता है। अंत में मंगलपाठ से संगोष्ठी सानन्द सम्पन्न हुई। इस संगोष्ठी में स्वाध्यायी श्रावक-श्राविका, प्रबुद्ध सज्जन एवं स्थानीय रुचिशील युवक-युवति अच्छी संख्या में उपस्थित रहे। अंत में सभी अतिथि विद्वानों का श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ बैंगलूरू की ओर से स्मृति चिह्न प्रदानकर स्वागत किया गय। स्थानीय हलसूर संघाध्यक्ष श्री चैनराज जी तातेड़, संघमंत्री श्री किशनलाल जी कोठारी एवं रत्नसंघ अध्यक्ष श्री यशवन्तराजजी सांखला तथा रत्न संघमंत्री श्री निर्मल जी बम्ब आदि की सेवाएँ सराहनीय, अभिनन्दनीय रही। हलसूर श्री संघ द्वारा आवास-निवास आदि की सुन्दर व्यवस्था काबिले तारीफ रही। *-गौतमचन्द ओस्तवाल*

सूरत में पंचदिवसीय नैतिक एवं धार्मिक शिविर सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद्, सूरत के सौजन्य से श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ- सूरत, दरियापुर आठ कोटि संघ संग्रामपुरा एवं छ कोटि संघ संग्रामपुरा के सहयोग से आचार्य श्री हस्ती जन्मशताब्दी चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में 31 अक्टूबर से 4 नवम्बर 2010 तक नैतिक एवं धार्मिक संस्कार शिविर आयोजित किया गया। सूरत के 15 उपनगरों से 700 से 800 शिविरार्थियों ने श्रद्धा एवं उत्साह के साथ शिविर में ज्ञानार्जन किया। शिविरार्थियों को लाने एवं छोड़ने के लिए 10 सीटीबसों की व्यवस्था निःशुल्क

उपलब्ध कराई गई। प्रातः 9 बजे से अपराह्न 3 बजे तक प्रतिदिन चले शिविर में 10 कक्षाएँ हिन्दी माध्यम की तथा 4 कक्षाएँ गुजराती माध्यम की थी। शिविर में सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, कर्म-सिद्धान्त, जैन जीवन शैली, जैन दर्शन की सामान्य जानकारी एवं गुरु हस्ती की जीवन झांकी से परिचित कराया गया। अध्यापन में 16 हिन्दी अध्यापकों, 3 गुजराती अध्यापकों, 4 महासतियाँ जी का सहयोग प्राप्त हुआ। सूरत का यह ऐतिहासिक शिविर श्री जितेन्द्र जी डागा, जयपुर की सत्प्रेरणा का फल है। शिविर में लगभग सभी सम्प्रदायों के लोगों ने भाग लिया। शिविर को सफल बनाने में दरियापुरी सम्प्रदाय की विदुषी महासती श्री पुष्पा बाई आदि ठाणा का योगदान रहा। प्रवचन के माध्यम से उन्होंने नैतिक संस्कारों का बीजारोपण किया एवं कक्षाओं में भी उद्बोधन दिया। आचार्य श्री हस्ती पर निबन्ध, भजन एवं भाषण प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। शिविर की सफलता में युवारत्न शिक्षक श्री त्रिलोक जी जैन-जयपुर एवं युवारत्न शिक्षक श्री दिलीप जी जैन-जोधपुर की अहम् भूमिका रही। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् के सदस्यों का तन, मन एवं धन से सहयोग सराहनीय रहा। शिविर में नवसारी, उमरगाँव, वापी, सिलवासा, अहमदाबाद, अंकलेश्वर के श्रावकों का भी सहयोग प्राप्त हुआ। 4 नवम्बर को आयोजित समापन समारोह में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री लाभचन्द जी नाहर, संघसरक्षक श्री प्रकाशचन्द जी गाँधी, श्री स्वरूपचन्द जी बाफना, श्री सुनील जी नाहर, दरियापुरी सम्प्रदाय की दानवीर श्राविका श्रीमती रूपाबहन मेहता एवं कैलाश नगर संघ के प्रमुख श्री कैलाश भाई बलानी उपस्थित थे। समारोह के प्रातःकालीन सत्र में 8 से 13 वर्ष के बालक-बालिकाओं को पुरस्कृत किया गया तथा कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया गया। मध्याह्नकालीन समापन सत्र छ कोटि उपाश्रय में सम्पन्न हुआ जिसमें आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी समिति के संयोजक श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने मुख्यातिथि के रूप में सम्बोधित किया। समारोह की अध्यक्षता क्षेत्रीय प्रधान श्री सुनील जी नाहर ने की। शिविर आयोजन में प्रमुख भूमिका श्री राजीव जी नाहर की रही।

10 हजार लोगों द्वारा शाकाहार की शपथ

हैदराबाद- आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री के. रोशय्या एवं महर्षि पत्रीजी के समक्ष 11 नवम्बर 2010 को लगभग 10 हजार लोगों ने शाकाहारी बनने हेतु शपथ ग्रहण की। अध्यात्म-चेतना वर्ष में यह आयोजन विभिन्न संस्थाओं ने मिलकर किया,

जिनमें जैनाचार्य हस्ती जन्मशताब्दी (आ.प्र.) एवं जैन रत्न युवक परिषद् (आं.प्र.) की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इस दिन आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 48 वां दीक्षा-दिवस तथा महर्षि पत्रीजी का 63 वां जन्मोत्सव था। कार्यक्रम हैदराबाद स्थित एन.टी.आर. स्टेडियम में सम्पन्न हुआ।

नवी मुम्बई में आचार्य श्री नानेश हॉस्पिटल का शिलान्यास

एच.एस. रांका परिवार द्वारा सेवाकार्यों के अन्तर्गत परिकल्पित आचार्य श्री नानेश हॉस्पिटल का 24 नवम्बर 2010 को सी बी डी बेलापुर (नवी मुम्बई) में शिलान्यास किया गया। हॉस्पिटल भवन का शिलान्यास अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पद्म विभूषण डॉ. बी. के गोयल के कर कमलों द्वारा हुआ। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री प्रताप भोगीलाल एवं चिकित्सा जगत से जुड़े कई डॉक्टर तथा समाज के कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। हॉस्पिटल प्लॉट बेलापुर रेलवे स्टेशन के नजदीक प्रदूषणरहित शान्त तथा हरियाली से आच्छादित वादियों के बीच स्थित है। प्रस्तावित हॉस्पिटल में हृदय रोग से सम्बन्धित सभी तरह की चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध की जायेगी जिससे आस-पास के निर्धन रोगियों का रियायती दरों पर उपचार संभव हो सकेगा। इस हॉस्पिटल का निर्माण कार्य चिकित्सा क्षेत्र के एक्सपर्ट कन्सलटेन्ट्स एवं कुशल इन्जिनीयर्स की देखरेख में शीघ्र ही प्रारम्भ होकर सन् 2012 में पूरा कर लिया जायेगा।

करुणा अंतरराष्ट्रीय का 13 वां राष्ट्रीय अधिवेशन चेन्नई में सम्पन्न

26 दिसम्बर 2010 को विद्यासागर वूमेन्स कॉलेज चेंगलपेट में करुणा अंतरराष्ट्रीय का 13 वां राष्ट्रीय अधिवेशन भव्य समारोह के रूप में सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम करुणा प्रदर्शनी के साथ प्रारम्भ हुआ। श्री दुलीचंद जैन, चेयरमेन क.अ. ने करुणा अंतरराष्ट्रीय का संक्षिप्त परिचय देते हुए इस सत्र की शुरुआत की। इस अवसर पर देश के विभिन्न राज्यों से करुणा अंतरराष्ट्रीय के 20 केन्द्रों के लगभग 300 प्रतिनिधि उपस्थित हुए और अपने केन्द्र की गतिविधियों से अवगत कराया। इसके पश्चात् 'खुला मंच' के अन्तर्गत सभी के सुझावों को आमंत्रित किया गया। अधिवेशन का द्वितीय सत्र पुरस्कार वितरण समारोह श्री आर शेलमुथु, चेयरमेन, तमिलनाडु पब्लिक सर्विस कमीशन के मुख्यातिथ्य में आरम्भ हुआ।

श्री कैलाशमल दूगड़ अध्यक्ष, राष्ट्रीय कार्यालय ने समस्त अतिथियों का संक्षिप्त परिचय देते-हुए सबका स्वागत किया। श्री सुरेश कांकरिया, महामंत्री, राष्ट्रीय कार्यालय ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। पुरस्कार वितरण के अन्तर्गत प्रतीक चिह्नों सहित 65,000 रुपए की नगद राशि पुरस्कार स्वरूप निम्नांकित वर्गों में वितरित की गई-

1. उत्कृष्ट करुणा प्रदर्शनी, इनोवेटिव कार्यक्रम- सी.डी. एनिमेशन पुरस्कार
2. उत्कृष्ट करुणा क्लब पुरस्कार एवं दयावान पुरस्कार
3. विशेष करुणा केन्द्र पुरस्कार

संक्षिप्त-समाचार

गाँधीनगर (गुजरात)- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा: आदि ठाणा के सान्निध्य में 1 से 3 नवम्बर 2010 को धार्मिक शिविर आयोजित हुआ जिसमें 48 बालकों ने तथा 27 महिलाओं ने ज्ञानार्जन किया। शिविर में कमल जी जैन स्थानीय युवासंघ एवं श्री पदमचन्द जी कोठारी का पूरा सहयोग प्राप्त हुआ। कार्तिक शुक्ला षष्ठी को आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-दिवस पर 60 एकाशन हुए। 40 व्यक्तियों ने व्यसनमुक्ति हेतु शपथ पत्र भरा। प्रातः एवं सायं त्रिरंगी सामायिक हुई। दो दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत ग्रहण किए।

जयपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर द्वारा पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. जन्म शताब्दी समापन समारोह 16 से 18 जनवरी, 2011 तक बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। त्रिदिवसीय समापन समारोह में विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा.आदि ठाणा का सान्निध्य प्राप्त हुआ। 16 जनवरी को सामूहिक रूप से 5 सामायिक एक साथ कर 1000 सामायिक पूर्ण करने का लक्ष्य पूरा किया गया। लक्की ड्रॉ द्वारा श्रेष्ठ सामायिक करने वाले को पुरस्कृत किया गया। 17 जनवरी को सामूहिक रूप से एकाशन का कार्यक्रम रखा गया, साथ ही सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित पुस्तक 'रत्नसंघ के धर्माचार्य' खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन किया गया। परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। 18 जनवरी को गुरु हस्ती जन्मोत्सव तेले, बेले, उपवास, एकाशन, दया, पौषध, संवर के साथ मनाया गया। इस दिन लगभग 105 तेले व 190 के करीब उपवास हुए।

-उर्मिला बोथरा, अध्यक्ष

बैंगलोर- मधुर व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 6 के पावन सान्निध्य एवं श्री स्थानकवासी जैन संघ मैसूर के तत्त्वावधान में दिनांक 13 एवं 14 नवम्बर 2010 को 2 दिवसीय Fruitful Inspiration In Life (FIL)-2010 कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें मैसूर, चेन्नई, बैंगलोर, इरोड़, हुबली, बीजापुर, कोप्पल, के.जी.एफ., होसपेट, मण्डिया, रामनगर आदि अनेक क्षेत्रों से लगभग 300 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। शिविर में जिनशासन का अखूट खजाना (Hidden treasure of Jainism), स्व का विकास (self development) अनंत स्वतंत्रता (Infinite Wisdom), धैर्य (Patient), आस्रव, संवर आदि विषयों पर मार्गदर्शन किया गया। महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. ने प्रवचन के माध्यम से 'सम्यक्त्व' तथा महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. ने I can एवं Hidden treasures of Jainism विषय पर मार्गदर्शन किया। साथ ही शिविर में श्रीमती डॉ. प्रिया जी जैन-चेन्नई, श्री अशोक जी कवाड़-चेन्नई, श्री नवरतनमल जी भंसाली-बैंगलोर, श्री दिनेश जी भंसाली-बैंगलोर, श्रीमती सीमा जी भंसाली-बैंगलोर, श्रीमती कविता जी चोरडिया-बैंगलोर, श्रीमती सरिता जी कोठारी-बैंगलोर ने अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान की एवं राकेश जैन-बैंगलोर ने शिविर संचालन का कार्य किया। शिविर के पूर्व 8000 लोगों ने 'भोजन में झूठा नहीं छोड़ना' के संकल्प-पत्र भरे एवं आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी अध्यात्म चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में 2000 बियासना तप की आराधना के प्रत्याख्यान एक वर्ष में करने का संकल्प ग्रहण किया। शिविर में अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ, जिनके आधार पर SUN FIL- विशाल जी नाहटा, के.जी.एफ., MOON FIL- श्रीमती नम्रता जी दरला एवं 5 व्यक्ति STAR FIL घोषित किए गए। चातुर्मासिक पर्व पर संवर-पौषध की आराधना हुई एवं 71 भाई-बहिनों ने भिक्षु दया की। सम्पूर्ण चातुर्मास धर्म-ध्यान, तप-त्याग, ज्ञान-आराधना पूर्वक सम्पन्न हुआ। *-राकेश जैन*

पीपाड़ शहर- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी महाराज आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में 1 से 5 नवम्बर 2010 तक बालक-बालिकाओं का शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 75 बच्चों ने भाग लिया। अध्यापन में पुष्पा जी मेहता, मंजु जी जैन एवं नमन जी मेहता का सहयोग प्राप्त हुआ। महिलाओं का शिविर 10 से 14 नवम्बर तक आयोजित हुआ, जिसमें 65-70 की उपस्थिति रही। शिविर में 12 व्रतों एवं 9 तत्त्वों का विवेचन किया गया।

मुम्बई- आचार्य विजयराज जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती स्थविर प्रमुख श्री प्रेमचन्द जी म.सा. आदि ठाणा 4 एवं विदुषी महासती श्री स्वर्णप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में 25 से 30 दिसम्बर 2010 तक 'जीवन जागृति शिक्षा संस्कार शिविर' का आयोजन किया गया। शिविर में उदयपुर, भोपाल, पुणे एवं मुम्बई के 86 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। सामायिक, प्रतिक्रमण आदि धार्मिक अध्ययन के साथ जीवन में पाप को कैसे घटाएँ, संस्कारों का महत्त्व, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, शाकाहार, सौन्दर्य प्रसाधन कितने अहिंसक आदि विषयों के सम्बन्ध में मुनिप्रवर द्वारा व्याख्यान के माध्यम से विशेष जानकारी दी गई। अहमदाबाद के श्री परीक्षित जोगनपुत्र के 'स्मरणीयशक्ति का विकास' 'परीक्षा की टेंशन से मुक्ति' 'पढ़ाई कैसे करें' 'सकारात्मक सोच' विषयक व्याख्यान हुए।

जलगाँव- आगमज्ञ पंडितरत्न आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 48 वां दीक्षा-दिवस वाणीभूषण श्री प्रीतिसुधाजी म.सा. के सानिध्य में मनाया गया। महासतीजी ने फरमाया कि आचार्यप्रवर शुद्ध निरतिचार संयम का दृढ़ता के साथ पालन करते हुए अपने गुरु अध्यात्मयोगी परम श्रद्धेय श्री हस्तीमल जी म.सा. के सामायिक-स्वाध्याय के संदेश को आगे बढ़ाने का महनीय कार्य कर रहे हैं। आचार्य श्री की प्रेरणा से स्थापित स्वाध्याय भाऊ मंडल गत दस वर्षों से निरन्तर गतिमान है। युवक परिषद् द्वारा रात्रि में एक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें आगन्तुक श्रावकों ने आचार्यप्रवर के गुणानुवाद एवं भजन प्रस्तुत किये। भाऊ मंडल की संख्या बढ़ाने हेतु प्रयास करने एवं व्यसन-मुक्ति के संकल्प के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

जलगाँव- आचार्य श्री हस्ती जन्म शती के अवसर पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा जलगाँव शाखा के सहयोग से 25 दिसम्बर 2010 से 1 जनवरी 2011 तक आठ दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 1000 बच्चों व महिलाओं ने भाग लिया। पूरे क्षेत्र में ऐतिहासिक धार्मिक वातावरण बन गया। सुशील बहू मंडल द्वारा अध्यापन का कार्य किया गया। जलगाँव सकल संघ के अध्यक्ष श्रीमान् दलीचंद जी चोरड़िया की अध्यक्षता में शिविर समापन एवं पुरस्कार वितरण का कार्य सम्पन्न हुआ। जैनों के साथ कई अजैन बच्चों ने भी भाग लेकर सामायिक, पच्चीस बोल, आचार्य भगवंत के भजन, जीवन में माता-पिता का उपकार विषय पर भाषण आदि द्वारा ज्ञानार्जन किया।

जलगाँव- आचार्य हस्ती जन्म शती के अवसर पर 2 जनवरी, 2011 को नवकार

महामंत्र के जाप का आयोजन किया गया, जिसमें करीब 300 लोग सामायिक एवं संवर में रहे। महाराष्ट्र विधान परिषद् हेतु नवनिर्वाचित विधायक श्री मनीष ईश्वरलालजी ललवानी इस कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित थे। 16,17 व18 जनवरी को आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म जयंती महासती जी श्री विमलेश प्रभा जी म.सा. के सान्निध्य में त्याग-तप के साथ मनायी गई।

वेपेरी- आचार्य श्री हस्ती अध्यात्म चेतना दिवस एवं श्रमणसूर्य मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. का 27 वां स्मृति-दिवस 16 से 18 जनवरी 2011 तक सामायिक, स्वाध्याय एवं तप दिवस के रूप में आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री चन्द्रप्रभा जी म.सा. के सान्निध्य में मरलेचा गार्डन, वेपेरी में मनाया गया। जिसमें विशेष रूप से तेले तप का आह्वान किया गया।

मायावरम- आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में श्री जैन रत्न युवक परिषद् चेन्नई द्वारा मायावरम् में 25 से 29 दिसम्बर, 2010 तक पंच दिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 80 बालक-बालिकाओं एवं 45 स्वाध्यायी महिलाओं ने भाग लिया। इस शिक्षण शिविर की उपलब्धियाँ है-(1)आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा देने का संकल्प (2) 10 दिन एवं 1 माह तक 12 प्रत्याख्यान का संकल्प (3) प्रत्येक रविवार को सुबह 9 से 10 बजे तक बच्चों की धर्मिक कक्षाएँ प्रारम्भ (4) प्रत्येक रविवार को नवयुवक मण्डल एवं महिला मण्डल द्वारा सामायिक करने का संकल्प।

बीजापुर- बीजापुर संघ द्वारा 'अध्यात्म चेतना वर्ष' के उपलक्ष्य में 8 से 10 अक्टूबर 2010 को त्रिदिवसीय 'विकलांग निःशुल्क सेवा' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस शिविर में 250 लोग लाभान्वित हुए। 46 लोगों को नये पैर, 24 पोलियोग्रस्त लोगों को कैलिपर, 44 लोगों को एल्यूमिनियम की वैशाखी, 18 को विशेष प्रकार के जूते और 7 को साइकिल दी गई।

हैदराबाद- अध्यात्म चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में श्री जैन रत्न सेवा संघ, रामकोट, हैदराबाद के तत्त्वावधान में 31 अक्टूबर को जैनाचार्य हस्ती जन्मशताब्दी समिति द्वारा 'साहित्य मानव का मित्र' विषयक संगोष्ठी आयोजित की गई। मुख्य अतिथि एवं प्रमुख वक्ता पत्रकार डॉ. राधेश्याम शुक्ला ने साहित्य के महत्त्व का प्रतिपादन किया तथा कहा कि आचार्य हस्ती का जीवनोपयोगी साहित्य आध्यात्मिक विकास में सहायक है।

नवसारी (गुजरात)- 31 अक्टूबर से 4 नवम्बर 2010 तक यहाँ एक धार्मिक शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 10 वर्ष से अधिक उम्र के लगभग 80 बालकों ने भाग लिया। 10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की कक्षा 10.30 से 12 बजे तक आयोजित की गई। शिविर में धार्मिक अध्ययन कराने के साथ उनका व्यावहारिक महत्त्व भी बताया गया। शिविर बहुत उपयोगी रहा। पाँचों दिन उपस्थित रहने वाले शिविरार्थियों को संघ द्वारा विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। शिविर में भाषण, प्रश्नपत्र आदि के माध्यम से विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। 31 अक्टूबर को 'आचार्य श्री हस्ती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में श्रीमती मीना बेन अजमेरा, श्रीमती मनीषा जैन, सुश्री भाविका शाह ने 18 वर्ष से ऊपर वाले वर्ग में क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किए। 10 से 18 वर्ष की आयु वालों में विजय हींगड़, ईशा जैन एवं हनी जैन ने पुरस्कार प्राप्त किए। 1 नवम्बर को आयोजित 'आचार्य श्री हस्ती भजन प्रतियोगिता' में 16 वर्ष से ऊपर वाले वर्ग में श्रीमती इन्द्रादेवी जैन, श्रीमती मीना बेन अजमेरा, श्री भूपेश कुमार जी हींगड़ विजेता रहे।

सिलवासा (दादरा नागर हवेली)- यहाँ अध्यात्म चेतना वर्ष में पंचदिवसीय शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 41 बालक-बालिकाओं ने ज्ञानार्जन किया। भजन एवं भाषण प्रतियोगिताएँ भी आयोजित हुईं।

पुणे- आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज का दीक्षा-दिवस यहाँ 11 नवम्बर 2010 को महाराष्ट्र प्रवर्तक श्री कुन्दन ऋषि जी, श्री लोकेश ऋषि आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में बिबेवाडी जैन स्थानक में मनाया गया। इस दिन यहाँ नवकार मन्त्र का जाप किया गया। *-पोपटलाल ओस्तवाल, अध्यक्ष*

जोधपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आध्यात्मिक चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में शीतकालीन षड् दिवसीय शिविर का आयोजन 21 से 26 दिसम्बर 2010 तक सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क स्थानक में किया गया। शिविर में अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के कक्षा पहली से आठवीं तक पाठ्यक्रमानुसार तथा सामायिक, पच्चीस बोल आदि विषयों पर शिविरार्थियों को प्रबुद्ध अध्यापकों श्रीमती अकलकंवर जी मोदी, श्रीमती मोहिनीदेवी जी कच्छवाहा, श्रीमती मोहनकौर जी जैन, श्रीमती रतन जी चोरडिया, श्री धर्मचन्द जी जैन द्वारा अध्यापन कराया गया। शिविर में 125 शिविरार्थियों ने पूर्ण उमंग-उत्साह से भाग लिया। *-सुनीता मेहता, अध्यक्ष*

भोपाल- चारित्र चूड़ामणि इतिहास मार्तण्ड आचार्य प्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. का 100 वां जन्मवर्ष मध्यप्रदेश प्रान्त के विभिन्न शहरों में पूरे धार्मिक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। राजधानी भोपाल में आचार्य श्री चौथमल जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूज्या डॉ. मधुबाला जी म.सा. की सुशिष्या प्रवचन प्रभावी श्री प्रतिभा श्रीजी म.सा. ठाणा 3 के सान्निध्य में जन्म जयन्ती मनाई गई। प्रातः 9.30 बजे भक्तामर पाठ प्रवचन, गुणानुवाद के साथ-साथ श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक व एकासना का लाभ लिया। परम पूज्या तेजकुंवर जी म.सा. ठाणा 9 के निश्रा में करेली शहर में चांगोटोला, नरसिंगपुर, जबलपुर, पिपरिया, गाडारवाड़ा, भोपाल से संघ आए। इस अवर पर सभी संघों ने पूज्य आचार्य श्री के जीवन पर अपने भाव रखे। इस अवसर पर सामूहिक एकासन हुए।

सोजतरोड़- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर एवं श्री श्रावक संघ सोजत रोड़, राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनाँक 28 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2010 तक बालक-बालिकाओं एवं महिलाओं का 6 दिवसीय शिविर आयोजित किया गया, जिसमें सामायिक, प्रतिक्रमण मूल व अर्थ तथा 25 बोल का अध्ययन कराया गया। इस शिविर में 63 शिविरार्थियों ने भाग लिया। अध्यापन कार्य श्रीमती मोहनकौर जैन-जोधपुर, श्रीमती सुशीला गुलेच्छा-जोधपुर एवं स्थानीय शिक्षिका ने किया। शिविर की विशेषता यह रही कि सभी शिविरार्थियों ने दीपावली पर्व पर पटाखें न छोड़ने तथा होली पर्व पर रंग व पानी आदि न डालने का स्वेच्छा से संकल्प लिया। शिविर का संचालन श्रीमती मोहनकौर जैन-जोधपुर ने किया।

कोलकाता- अध्यात्म चेतना वर्ष के अन्तर्गत श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, कोलकाता ने 26 नवम्बर, 2010 को महिला Cervical Cancer awareness कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें बंगाल आब्स्टेट्रिस एण्ड गायनेकोलॉजिकल सोसायटी के डॉ. के.डी. बख्शी एवं डॉ. निर्मला पीपाड़ा ने चित्रों के माध्यम से प्रभावी प्रस्तुति दी। सभी सदस्यों ने कार्यक्रम की सराहना की। कार्यक्रम की अध्यक्षता अखिल भारतीय श्वेताम्बर जैन कांफ्रेंस के महिला प्रकोष्ठ की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कमला सज्जनराज जी मेहता ने की। 16 जनवरी 2011 को पूर्वीभारत संभाग के प्रधान श्री चंचलमल जी बच्छावत की अध्यक्षता में गुरु हस्ती के जीवन एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया तथा भजन प्रस्तुत किए गए। 17 जनवरी को कोलकाता से 150 कि.मी. दूर आदिवासी निर्धन बस्ती वाले

चार गाँवों में पुराने कपड़ों का श्राविकाओं द्वारा वितरण किया गया। 18 जनवरी को दया, 350 सामायिक, नवकारमन्त्र जाप एवं प्रतिक्रमण किया गया। तीन तेले, तीन उपवास, तीन आयम्बिल एवं 51 एकासन तप हुए। -*डॉ. गुमानसिंह पीपाड़ा*

खेरली- परम पूज्य गुरुदेव 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म शताब्दी अध्यात्म चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् शाखा खेरली द्वारा द्वितीय विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन 30 दिसम्बर, 2010 को किया गया। रक्तदान शिविर में सभी जाति वर्ग के युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिसमें 215 यूनिट रक्तदान हुआ। इस शिविर के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि श्री एम.पी. जैन, उपनिदेशक मुख्यमंत्री कार्यालय तथा विशिष्ट अतिथि श्री हेमन्त जी जैन, महुआ-मंडावर थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजसेवी रामबाबू जी जैन दांतिया वालों ने की। शिविर डॉ. मनीष जैन, धार्मिक शिक्षण-शिविर सह प्रभारी युवक परिषद् के संयोजन में किया गया।

जलगाँव- जैन भवन एम.आय.डी.सी. के परिसर में सन् 2000 के आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पदार्पण के समय से ही धर्म जागरणा की लहर व्याप्त है। जैन भवन के प्रांगण में धर्म साधना का ठाठ लगा रहता है। इस परिसर के नागरिकों की भावनाओं को ध्यान में लेते हुए श्री जैन रत्न युवक परिषद् के विशेष प्रयासों द्वारा महानगरपालिका ने इस परिसर का नामकरण 'हस्ती-हीरानगर' करने की स्वीकृति प्रदान कर आदेश प्रसारित कर दिया है। आचार्य भगवंत के उपकारों को स्मृति में रखने हेतु यह श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया।

भोपाल- मुनिश्री तरुणसागर जी के भोपाल चातुर्मास से मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान अत्यन्त प्रभावित हुए। 8 दिसम्बर 2010 को मुनि श्री को अपने निवास पर मुख्यमंत्री ने नवधा भक्तिपूर्वक सपत्नीक आहार दिया। मुनि श्री के चार नये सपने हैं- (1) 10 लाख लोगों की मांसाहार एवं शराब छुड़वाकर शाकाहारी बनाना (2) मस्जिद और चर्च में प्रवचन कर एकता का संदेश देना (3) देश की सरहद के पार नेपाल आदि देशों तक पैदल यात्रा करना। (4) राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के गणवेश को चमड़े के जूते और चमड़े की बेल्ट से मुक्त कराना। साथ ही गोहत्या पर पूर्णतः प्रतिबंध हो और गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाए। शाकाहार का पहला संकल्प पत्र मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने भरा है तथा दस लाखवाँ संकल्पपत्र प्रधानमंत्री से भराने का लक्ष्य है।

वैशाली- प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली द्वारा 20 नवम्बर,

2010 को डॉ. गुलाबचन्द्र चौधरी स्मारक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. रवीन्द्र कुमार सिंह, अध्यक्ष-दर्शन विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर ने की। प्रमुख वक्ता डॉ. श्रीयांश कुमार सिंघई आचार्य एवं अध्यक्ष, जैन दर्शन विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान मानित विश्वविद्यालय, जयपुर ने 'पवयणपाहुड में श्रमण' विषय पर व्याख्यान दिया। संस्थान के निदेशक डॉ. ऋषभचन्द्र जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कुण्डेरा,सवाईमाधोपुर- श्री वर्द्धमान पुत्र श्री रामस्वरूप जी जैन ने 35 दिवसीय तपाराधन किया है।

दुर्ग- आचार्य श्री रामेश के मुखारविन्द से मुमुक्षु निधि बोहरा की दीक्षा सम्पन्न हुई। आचार्य श्री का होली चातुर्मास हैदराबाद में होने की संभावना है।

बधाई/चुनाव

उदयपुर- प्रोफेसर (डॉ.) प्रेम सुमन जैन, निदेशक, राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान, बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ, श्रवणबेलगोला को उनके द्वारा प्राकृत भाषा और साहित्य तथा जैन विद्या के क्षेत्र में किये गये महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर द्वारा कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ अवार्ड-2009 से 2 दिसम्बर 2010 को इन्दौर में सम्मानित किया गया। डॉ. जैन को प्रशस्तिपत्र के साथ पच्चीस हजार रुपयों की सम्मान राशि भी प्रदान की गयी। प्रोफेसर जैन 2006 में प्राकृत और पालि भाषा के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार से भी सम्मानित हैं।

चेन्नई-श्री दुलीचंद जैन 'साहित्यरत्न' को 'भगवानदास शोभालाल जैन शाकाहार एवं जीवदया' राष्ट्रीय पुरस्कार से अहिंसा इंटरनेशनल नई दिल्ली द्वारा 24 अक्टूबर 2010 को सम्मानित किया गया। यह भव्य अवार्ड समारोह अणुव्रत भवन, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। श्री जैन ने जीवदया और शाकाहार के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु अपनी अध्यक्षता में 15 वर्ष पूर्व मात्र 3 करुणा क्लबों से 'करुणा अन्तर्राष्ट्रीय' संस्था प्रारंभ की, जिसके अंतर्गत वर्तमान में देश के 12 राज्यों में 1900 करुणा क्लबें कार्यरत हैं। आप इस संस्थान के चेयरमेन हैं।

नई दिल्ली- डॉ. महावीर गोलेछा को मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया में सम्पन्न हुई 8वीं एशियन ओसियन एपिलेप्सी कांग्रेस का प्रतिभाशाली वैज्ञानिक पुरस्कार प्रदान किया गया। डॉ. गोलेछा को यह पुरस्कार उनके द्वारा नारिन्जिन नामक नई

मेडिसिन की खोज तथा इसकी मस्तिष्कीय रोगों में उपयोगिता पर किये गए अनुसन्धान के लिए दिया गया। यह पुरस्कार ऑस्ट्रेलिया की स्वास्थ्य मंत्री श्रीमती निकोला रोक्सोन ने प्रदान किया। डॉ. गोलेछा यह सम्मान पाने वाले 11 वें भारतीय, प्रथम जैन एवं राजस्थानी हैं।

जोधपुर- श्रीलंका सरकार के विश्वविद्यालय ''दी ओपन इन्टरनेशनल युनिवर्सिटी फोर कम्प्लीमेन्टरी मेडिसीन'' 14 नवम्बर 2010 को कोलम्बो (श्री लंका) में प्रो. (डॉ.) सोहनराज तातेड़ को डी.एस-सी. (योग विज्ञान) की उपाधि से अलंकृत किया गया।

अलीगढ (रामपुरा)- डॉ. विनोद कुमार जैन सुपुत्र श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन

(पाटोली वाले), व्याख्याता, वनस्पति शास्त्र विभाग, अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जयपुर को Indian Phytopathological Society (Central Zone) द्वारा स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर में आयोजित दो दिवसीय (27 व 28 अक्टूबर, 2010) कार्यशाला में उनके शोध पर Poster Session Contest में द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। आपने अपने शोध में Poster के माध्यम से उड़द के बीजों में पाये जाने वाले जीवाणु द्वारा फसल में होने वाले रोगों के प्रभाव एवं उनके प्रबंधन के विषय में बताया।

बैंगलोर- श्री अभिषेक सुपुत्र श्रीमती लीला-रमेश जी सुराणा एवं सुपौत्र श्रीमती कंचनदेवी-मिलापचन्द जी सुराणा ने नाटिंगम ट्रेन्ट यूनिवर्सिटी (U.K.) से B.Tech, MSc. में उच्च श्रेणी से सफलता प्राप्त की। आप श्री शांतिलाल जी दुधेड़िया के दौहित्र हैं।

उदयपुर- श्री विकास चौधरी ने 'राष्ट्रसंत श्री गणेशमुनि शास्त्री के साहित्य का जैन धर्म व दार्शनिक दृष्टि से समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर डॉ. हुक्मचन्द जैन, सह-आचार्य, जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग, उदयपुर के निर्देशन में शोधकार्य पूर्ण किया।

जयपुर- सुश्री पूजा जी जैन (सी.ए.) सुपुत्री श्रीमती दर्शना-घनश्याम जी जैन की भारत संचार निगम, पालनपुर में जूनियर अकाउण्ट्स आफिसर के पद पर नियुक्ति हुई हैं। हार्दिक बधाई।

अलीगढ़ (रामपुरा)- सिद्धार्थ जैन पुत्र रवीन्द्र कुमार जैन ने 8 वर्ष की लघु वय में

महासती सौभाग्यवती जी म.सा. के सान्निध्य में अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा संचालित धार्मिक शिविर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उन्हें 2100 रु की राशि पुरस्कार के रूप में प्रदान की गई। बालक जिनवाणी पत्रिका का पाठक है।

पाली-मारवाड़- एडवोकेट श्री मोहित कुम्भट (सॉफ्टवेयर इंजीनियर) सुपुत्र श्रीमती नलिनी-सत्येन्द्र कुम्भट, पाली ने MBA (फाइनेन्स) तथा PGDBM डिप्लोमा फाइनेन्स में कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया है तथा वर्तमान में कोटक महेन्द्रा बैंक, रीजनल ऑफिस, जयपुर में क्रेडिट मैनेजर नियुक्त हुए हैं।

मदनगंज- मनन डांगी सुपुत्र श्री मनीष-मोनिका डांगी ने 8 वर्ष की लघुवय में प्रतिक्रमण सूत्र और दशवैकालिक सूत्र कंठस्थ किया है। आप राजेन्द्र कुमार जी डांगी (मदनगंज-किशनगढ) के पौत्र और विमलचंद जी सुराणा (ब्यावर) के दोहिते हैं।

नसीराबाद- प्रतीक जैन सुपुत्र श्रीमती शीला मनीष जैन (मुणोत) एवं सुपौत्र ताराचन्द जी मुणोत ने सी.एस. फाउंडेशन परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर योग्यता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

जयपुर- श्री आशीष जैन पुत्र श्री नरेन्द्र जी कक्कड़ का चण्ड़ीगढ़ में डेल सर्विसेज इण्टरनेशनल लिमिटेड में इंजीनियर के पद पर चयन हुआ है। आपने पूना से बी.ई. की डिग्री विशेष योग्यता से प्राप्त की।

पूणे- श्री रितेश जैन सुपुत्र श्रीमती चन्द्रा जी व श्री अमरचन्द जी चौपड़ा एवं सुपौत्र श्री बंशीलाल जी चौपड़ा ने International Institute of Information Technology, PUNE से MBA (FINANCE) में 85% अंक अर्जित कर विश्वविद्यालय की वित्त शाखा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें 'EXCELLENCE IN FINANCE' की उपाधि व छात्रवृत्ति से पुरस्कृत किया गया।

अहमदाबाद- दीपा जैन ने 'गुणस्थान का अध्ययन' विषय पर शोधकार्य डॉ. दीनानाथ शर्मा, ऐसोशिऐट प्रोफेसर, प्राकृत भाषा विभाग, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद के मार्गदर्शन में पूर्ण किया है।

उदयपुर- युवा मनीषी द्वीपेन्द्र मुनि ने ''देवेन्द्राचार्य कृत कर्म-विज्ञान : एक समीक्षात्मक अध्ययन'' विषयक शोध कार्य डॉ. उदयचन्द जैन, पूर्व सह-आचार्य, जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के निर्देशन में पूर्ण किया।

पाली-मारवाड़- कुमारी अर्चना लूकड़ सुपुत्री श्री कान्तिलाल जी लूकड़ पाली (पचपदरा)ने भारतीय विद्यापीठ पुणे से B.A.M.S. परीक्षा में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया है।

जयपुर- सुश्री प्रियंका बैताला सुपुत्री श्रीचन्द जी-कान्ता जी बैताला ने सी.ए. फाइनल दोनों ग्रुप की परीक्षा एक साथ उत्तीर्ण की है। आपने आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की सातवीं कक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है।

जयपुर- श्री हेमन्त खींचा, सुपुत्र श्रीमती इन्द्रा-श्री प्रकाशचन्द जी खींचा ने ICFAI हैदराबाद से MBA अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की। ICICI गुड़गाँव में सेल्स मैनेजर पद पर चयनित हुए।

सी.ए. की परीक्षा में उत्तीर्ण

1. सुश्री रिद्धी सुपुत्री निहालचंद जी नाहर, सुपौत्री श्रीमती विजयकंवर सोहनलाल जी नाहर (पाली), सुरत।
2. सुश्री रुचि मेहता सुपुत्री श्रीमती सरोज-रविन्द्र कुमार जी मेहता, जयपुर।
3. श्री अंकित खींचा ने सुपुत्र श्री हेमन्त खींचा, जयपुर।
4. सुश्री स्नेहा जैन सुपुत्री श्री सुनील कुमार जी एवं मधुजी जामड़, जयपुर।
5. सुश्री निकिता सुराणा पुत्री श्री निलेश जी सुराणा एवं सुपौत्री श्री विरदराज जी सुराणा, जयपुर।
6. सुश्री निकिता सुपुत्री श्री गौतमचन्द जी श्रीश्रीमाल एवं सुपौत्री श्री रतनलाल जी श्रीश्रीमाल, ब्यावर।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- रत्न संघ के संरक्षक, स्वाध्यायशील, चिन्तनशील संघहित-चिन्तक

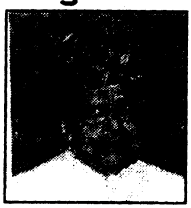

सुज्ञ श्रावक रत्न न्यायाधिपति श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा का 85 वर्ष की वय में 11 नवम्बर, 2010 को दिल्ली में स्वर्गगमन हो गया। राजस्थान उच्च न्यायालय में न्यायाधिपति पद से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् भी आप उपभोक्ता संरक्षण

आयोग के अध्यक्ष रहे। वकालात एवं न्यायाधिपति काल में उनकी सेवाएं महनीय रही। आपका जीवन सरल, प्रेरणादायक एवं सेवा-समर्पण से युक्त था। आप श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के वर्षों तक अध्यक्ष रहे। आपने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक पद के दायित्व का निर्वहन किया, साथ ही संघ की संस्थाओं के पोषण-रक्षण-संवर्धन में आपकी महनीय भूमिका रही। संत-सतीवृन्द के प्रति आपकी अनूठी भक्ति थी। आप आहार-विहार एवं श्रमणोचित औषधोपचार में सदा सजग रहते थे। जिनवाणी पत्रिका में आपके आलेख छपते रहते थे। आपने आजीवन शीलव्रत का नियम वर्षों पूर्व ले लिया था। रात्रि भोजन के भी त्याग थे। अष्टमी, चतुर्दशी को हरी का त्याग रहता था। आपके पुत्र डॉ. सुरेन्द्रमल जी, न्यायाधिपति श्री राजेन्द्रमल जी भी अपने पिता के जीवनादर्शों का अनुगमन करने वाले हैं। धर्मपत्नी उगमकंवर जी ने छायावत् उनकी सेवा की तथा वे अत्यन्त श्रद्धालु, धर्मनिष्ठ एवं तपस्विनी हैं। आपकी पुत्रियाँ उषा जी मेहता, शशि जी जैन एवं उमा जी सिंघवी, जयपुर भी धर्मनिष्ठ हैं।

जोधपुर- लब्धप्रतिष्ठ धर्मपरायण सुश्रावक संघरत्न डॉ. सम्पतसिंह जी

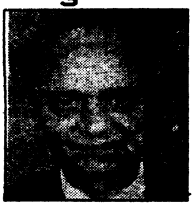

भाण्डावत सुपौत्र स्वर्गीय चीफ कोर्ट जज श्रीमान् नवरतनमल जी एवं सुपुत्र श्रीमान् धनपत सिंह जी भाण्डावत ने शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की सुशिष्या तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. के मुखारविन्द से संथारे के पच्चक्खाण कर 28 दिसम्बर 2010 को नश्वर देह का त्याग किया। भाण्डावत साहब का जीवन बाल्यकाल से ही धर्ममय रहा। आप बहुत ही सरल स्वभावी, धर्मनिष्ठ, कर्तव्य परायण मृदुभाषी, व्यवहार कुशल एवं सेवाभावी श्रावकरत्न थे। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के विक्रम संवत् 2041 के जोधपुर चातुर्मास का विशेष श्रेय आप को ही है। भाण्डावत परिवार की हार्दिक भावना को ध्यान में रखते हुए आचार्य भगवन्त ने रेनबो हाउस में चातुर्मास किया। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत सतीवृन्द के प्रति भाण्डावत परिवार की अनुपम श्रद्धा भक्ति अनुकरणीय है। आपने 44 वर्ष की उम्र में आजीवन शीलव्रत अंगीकार कर लिया था तथा 35 वर्षों से सचित्त जल का त्याग था। 25

वर्षों से रात्रि भोजन त्यागी थे।

आप राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर के प्रतिष्ठित अधिवक्ता थे। वे अतिरिक्त महाअधिवक्ता भी वर्षों तक रहे। धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक क्षेत्र की अनेक संस्थाओं से जुड़े डॉ. भाण्डावत ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल के अध्यक्षीय दायित्व का कुशलता पूर्वक निर्वहन किया। आप सन् 1975 से 1984 तक अखिल भारतीय संघ के कार्यध्यक्ष रहे तथा सन् 1984 से 1990 तक संघाध्यक्ष के दायित्व का निर्वहन किया। सन् 1990 से 1996 तक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष रहे। अभी आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक पद को सुशोभित कर रहे थे। आपने डिस्ट्रिक रोटरी के प्रान्तपाल और ओसवाल सिंह सभा जोधपुर के ट्रस्टी जैसे पदों को सुशोभित किया।

आपकी धर्मसहायिका सुश्राविका श्रीमती नलिनी जी, सुपुत्र श्री संदीप जी, पुत्रवधू श्रीमती बिन्दू जी और सुपौत्र मास्टर सचिन जी, श्रेयांस जी की संघ के प्रति अनन्य आस्था है। आपके द्वारा प्रदान किये संस्कारों का निर्वहन करते हुए वे आपके बताये हुए पदचिह्नों पर चल रहे हैं।

जोधपुर- समाज-सेवी, उदारमना, सुश्रावक श्री माणकचन्द जी संचेती का 20 दिसम्बर, 2010 को आकस्मिक देहावसान हो गया। सुश्रावक संचेती जी की ज्ञान-क्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द चारित्रात्माओं के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक समाज-सेवा में तत्पर रहने वाले श्री संचेती साहब का जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता आदि सद्गुणों से युक्त था। आपका सम्पूर्ण जीवन सेवा-धर्म की साधना में रचा-पचा हुआ था। आप समाज-सेवी, समाज-प्रेमी, समाज-हितैषी और समाजरत्न श्रावक थे। आपके अकस्मात् स्वर्गगमन से न केवल परिवार में अपितु सकल समाज में एक रिक्तता अनुभव की जा रही है।

आदरणीय श्री संचेती जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। जैन-जैनेतर समाज में आपकी उल्लेखनीय सेवाएँ रही। आप अनेक संस्थाओं के संस्थापक अध्यक्ष एवं सचिव रहे। जोधपुर की अनेकों स्वयं सेवी संस्थाएँ

आपके अनुभव एवं मार्गदर्शन को प्राप्त कर अपने कार्यों को अंजाम देती थीं। आप अनेक सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे।

जोधपुर की निर्धन-असहाय, दीन-दुःखी जनता के लिए आपके मन में अत्यन्त वात्सल्य भाव रहता था। आपने अभावग्रस्त लोगों की सेवा में पूरा जीवन समर्पित कर दिया। उनके पास आने वाला प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ प्राप्त करके जाता था, साथ ही दानदाताओं एवं समाज के लोगों का संचेती साहब के प्रति पूरा विश्वास था। इसी कारण लोग उन्हें लाखों रुपये शुभ कार्यों में लगाने हेतु प्रदान कर जाते थे। देने वालों को रसीद की अपेक्षा नहीं रहती थी एवं जिनको दिया जा रहा है उनसे संचेती जी प्राप्ति रसीद की अपेक्षा नहीं रखते थे। वे जीवन के अन्तिम समय में भी पक्षियों के दाने के लिए अच्छी राशि एकत्रित कर समाज को दे गये।

उन्होंने जीवन में संस्कारों को तो जीया ही, साथ ही अपनी सन्तानों में भी धर्म और सेवा के संस्कार का दायित्व निभाया। सम्पूर्ण संचेती परिवार धार्मिक संस्कारों के साथ जीवन-निर्माण रूप सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ा हुआ है। समाज की सभी गतिविधियों में संचेती परिवार का सदैव सक्रिय सहयोग रहा है।

अजमेर- सुश्राविका श्रीमती चंचला चौधरी धर्मपत्नी श्री भागचन्द जी चौधरी

का 24 नवम्बर, 2010 को समाधिमरण हो गया। आप व्यवहार में अतिशालीन, गुणानुरागी एवं प्रसन्नचित्त श्राविका थीं। आपने अट्ठाई, तेले, बेले, उपवास, आयम्बिल आदि अनेक तपस्याएँ कीं। आपकी आचार्य श्री सोहनलाल जी म.सा. के प्रति अनन्य भक्ति थी।

जयपुर- संघ-सेवी, संत-सेवी श्रावकरत्न श्री कैलाशचन्द जी डागा का 9

दिसम्बर 2010 को देहावसान हो गया। आपकी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द के प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति थी। आपका जीवन धार्मिक संस्कारों से पूरित था। आप गुरुभक्ति, सेवानिष्ठा एवं संघ-समाज की प्रवृत्तियों में सदैव समर्पित रहने वाले श्रावक थे। सम्पूर्ण डागा परिवार धार्मिक संस्कारों के साथ जीवन निर्माण रूप सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ा हुआ है।

आप गजेन्द्रनिधि के सम्मानित ट्रस्टी भी रहे तथा संघ की गतिविधियों में आपका सक्रिय सहयोग रहा।

जोधपुर- गाँधीवादी विचारक एवं समाजसेवी श्री नेमीचन्द्र जी जैन 'भावुक'

का 21 अक्टूबर 2010 को 82 वर्ष की वय में स्वर्गगमन हो गया। आपने स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभायी तथा गाँधीवादी विचारधारा के समर्थक रहे। सुश्रावक का कई मानित संस्थाओं द्वारा अभिनन्दन एवं सम्मान किया गया। पचास वर्ष की सामाजिक सेवाओं के लिए सर्वदलीय नागरिक अभिनन्दन, राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा साहित्यकार सम्मान, झाबरमल शर्मा अवार्ड से सम्मानित, शारदा ज्ञानपीठ पुरस्कार गाँधी स्मृति पुरस्कार-2008, तथा भगवान महावीर अचीवमेन्ट अवार्ड से सम्मानित हुए। बाल परिषद् , भूदान आन्दोलन,अन्तरप्रान्तीय कुमार साहित्य परिषद्, गाँधी शांति प्रतिष्ठान आदि कई सस्थाओं से आप जुड़े हुए थे। आपने विश्व हिन्दी सम्मेलन में भाग लिया तथा हरिजन सेवा, प्रौढ़ शिक्षा, नशाबंदी आन्दोलनों का संचालन किया। आपने राष्ट्र पताका, दैनिक नवभारत टाइम्स, नवज्योति, नया राजस्थान, हिन्दुस्तान समाचार समिति, दैनिक नवयुग, राष्ट्रदूत, चेतन प्रहरी आदि पत्र-पत्रिकाओं में संपादन एवं संवाददाता का कार्य किया -***धर्मेश रुटिया***

पाली- तपस्वी-साधिका एवं जागरूक सुश्राविका श्रीमती सुकनकंवर धर्मपत्नी

स्व. श्री हस्तीमल जी सुराणा का 103 वर्ष की वय में 23 नवम्बर 2010 को स्वर्गवास हो गया। आप सरलता, सादगी, त्याग-तपस्या की मूर्ति थीं। आपने अपने जीवनकाल में 4 वर्षीतप, आयम्बिल, नीवी, दया, पौषध आदि व्रतों का आराधन किया। ज्ञानगच्छ में आपकी तीन पोतियाँ दीक्षित हैं।

जोधपुर- समाज सेवक श्री चम्पालाल जी सालेचा का 85 वर्ष की वय में 18 जनवरी 2011 को स्वर्गवास हो गया। आप नगर सुधार न्यास (जे डी ए) के पूर्व अध्यक्ष, यू.आई.टी. के चेयरमैन और नाकोड़ा जैन तीर्थ के ट्रस्टी थे। इसके अतिरिक्त आप भैरूबाग जैन मंदिर, आदर्श विद्या मंदिर, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के साथ विभिन्न धार्मिक व सामाजिक संगठनों से जुड़े रहे।

सिकन्दराबाद- सुश्राविका श्रीमती इन्द्राबाई धर्मपत्नी श्री भोपालराज जी बेताला का 39 वर्ष की वय में 14 सितम्बर 2010 को संथारे सहित स्वर्गवास हो गया। आप मिलनसार एवं दृढ़धर्मी श्राविका थीं।

सूरत- वरिष्ठ सुश्रावक श्री सज्जनराज जी कांकरिया सुपुत्र स्व. श्री जवाहरलाल जी कांकरिया (मूलतः भोपालगढ़ निवासी) का दिनांक 10 दिसम्बर, 2010 को स्वर्गवास हो गया। आप महासती श्री शांतिकंवर जी के सांसारिक भतीजे थे। आप संत-सतीगण के प्रति दृढ़ श्रद्धावान थे। आपका सारा जीवन धर्ममय था एवं आप नित्य सामायिक करते थे। आपके पीछे परिवार में मातुश्री, पत्नी व पुत्र सभी धार्मिक भावना से ओत-प्रोत हैं।

जोधपुर- वीरपिता श्रावकरत्न श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल का 27 नवम्बर 2010 को संथारे के साथ स्वर्गगमन हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ श्रावक थे। आपकी आचार्य हस्तीमल जी म.सा., आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द के प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति थी। आप संघ-समाज की प्रवृत्तियों में सदैव समर्पित रहते थे। आपने अपनी सुपुत्री, सुपौत्री एवं पौत्ररत्न को रत्नसंघ में दीक्षित कर संघ के गौरव में अभिवृद्धि की जो सम्प्रति व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा.,महासती श्री सुव्रतप्रभाजी म.सा. एवं श्री लोकचन्द्र मुनि जी के रूप में अपनी ज्ञान-दर्शन-चारित्राराधना में सन्नद्ध हैं। आप प्रतिदिन सामायिक साधना के साथ यथाशक्य तपाराधना करते थे। आप एवं आपका सम्पूर्ण हुण्डीवाल परिवार धार्मिक संस्कारों के साथ संघ की गतिविधियों से जुड़ा हुआ है।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती उषाजी हुण्डीवाल धर्मपत्नी श्री सुभाषचन्द जी हुण्डीवाल का 29 नवम्बर 2010 को देहावसान हो गया। स्नेह और संस्कार से परिवार को सिंचित करने वाली आप हुण्डीवाल परिवार की शोभा थीं। आप नित्य सामायिक स्वाध्याय करती थीं। संत-सतीवृन्द के प्रति

आपकी प्रगाढ़ निष्ठा थी। आपके पति श्री सुभाष जी हुण्डीवाल वर्तमान में आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के सचिव हैं।

आलनपुर (सवाईमाधोपुर)- सुश्रावक श्री गौतमचन्द जी जैन अध्यापक का

6 अक्टूबर, 2010 को हृदयगति रुक जाने के कारण आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आप देव गुरु एवं धर्म के प्रति समर्पित श्रावक रत्न थे। आप अपने पीछे तीन पुत्र, पौत्र-पौत्रियों का भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। आपके प्रथम पुत्र श्री ओमप्रकाश जी ज्योतिर्विद् हैं तथा आचार्यप्रवर एवं सन्त मुनिराजों के प्रति श्रद्धा-समर्पित हैं।

चैन्नई- सेवाभावी सरलमना सुश्रावक श्री सतीश जी जैन का 60 वर्ष की वय में

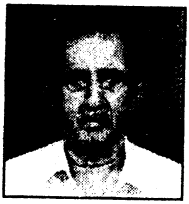

3 नवम्बर 2010 को स्वर्गगमन हो गया। आचार्य हस्ती के चेन्नई चातुर्मास से आप रत्नसंघ से जुड़े हुए हैं। आपने महासतियों के विहार में दीर्घकाल तक सेवा प्रदान की। आप नित्य सामायिक करते थे।

इन्दौर- दृढधर्मी सुश्राविका श्रीमती बदामबाई धर्मपत्नी श्री कल्याणमल जी

जैन का 27 अक्टूबर 2010 को देहावसान हो गया। सामायिक स्वाध्याय के प्रति सजग श्राविकारत्न के अपने जीवनकाल में कई प्रकार के प्रत्याख्यान थे। आप धर्मप्रेमी, सेवाभावी, मृदुभाषी तथा वात्सल्य मूर्ति थीं। आपके रात्रिभोजन एवं जमीकन्द का आजीवन त्याग था। आप चारित्र-आत्माओं के प्रति सदैव सेवा में अग्रणी रहती थीं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

बैंगलुरु - गुरुभक्त संघहितैषी श्रावकरत्न श्री पारसमल जी डोसी का 9 दिसम्बर, 2010 को हृदय गति रुक जाने से असामयिक देहावसान हो गया। आप रत्नसंघ के सुज्ञ श्रावकरत्न थे। आपकी गुरुभक्ति, संघनिष्ठा और स्वधर्मी-सेवा अनुकरणीय थी। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के बैंगलुरू चातुर्मास में आपने धर्म साधना-आराधना में तो पुरुषार्थ प्रदर्शित किया ही, संघ-सेवा, संत-सेवा और स्वधर्मि वात्सल्य-सेवा में भी

अग्रणी भूमिका निभाई। आप श्री संघसेवी सुश्रावक श्री ताराचन्द जी सिंघवी, सदस्य-शासन सेवा समिति के दामाद थे।

हिण्डौन सिटी(फाजिलाबाद वाले)-दृढ़धर्मी धर्मनिष्ठ सुश्राविका वीरमाता

श्रीमती तारा देवी जी जैन धर्मपत्नी वीरपिता श्री प्रभुदयाल जी जैन का 4 जनवरी, 2011 को 28 दिवसीय संलेखना संथारा सहित पण्डित मरण हो गया। आप तप आराधिका महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. की सांसारिक माताश्री थीं। आप सरलता, मृदुता, सहिष्णुता व उदारता के गुणों से ओत-प्रोत थीं। आपकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति प्रारंभ से ही रही है। नित्य प्रार्थना, उभयकाल प्रतिदिन कम से कम तीन सामायिक करने वाली सुश्राविका ने बेला, तेला, आदि तप भी किये। आप जिनशासन की शोभा में अभिवृद्धि एवं धर्म प्रभावना करते हुए मरने की कला भी सिखाकर गई। आप अपने पीछे पाँच पुत्र श्री कैलाशचन्द जी, श्री नरेन्द्रकुमार जी, श्री विमलचन्द जी, श्री निर्मलकुमार जी, श्री दिनेश कुमार जी जैन एवं चार पुत्रियाँ श्रीमती कान्ता महावीर प्रसाद जी जैन, श्रीमती सुशीला सुरेश जी जैन, श्रीमती राजुल हेमेन्द्रकुमार जी जैन, श्रीमती मंजु मनोज जी जैन का भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

अहमदाबाद- सुश्राविका श्रीमती सायरकंवर जी कोठारी धर्मपत्नी स्व. श्री

प्यारेलाल जी कोठारी का दिनाँक 6 जनवरी 2011 को सगारी संथारा पूर्वक समाधिमरण हो गया। आपने अपने जीवन में त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किये। आप प्रतिदिन 5-6 सामायिक करती थी। आप प्रतिवर्ष परिवार सहित गुरु भगवन्तों के दर्शनार्थ उपस्थित होती थीं। पुण्य से प्राप्त लक्ष्मी का आपने शिक्षा-दीक्षा, स्थानक निर्माण एवं धार्मिक तथा सामाजिक अनुष्ठानों में मुक्तहस्त से उपयोग किया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अन्तर्गत संचालित शिक्षा-दीक्षा फण्ड में भी बहुत अच्छी राशि आपने प्रदान की। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पालड़ी-अहमदाबाद चातुर्मास में आपने संत-सतियों की सेवा के साथ आतिथ्य-सत्कार का भी पूरा लाभ लिया। आप अपने पीछे पुत्र बाबूलालजी, बुधमलजी, पदमचन्दजी, अशोककुमारजी का भरापूरा परिवार छोड़कर गई है।

जोधपुर- समाजसेवी, मिलनसार, मृदुभाषी, नेक-निर्भीक, कर्त्तव्यनिष्ठ, देव

गुरु धर्म के प्रति अटूट श्रद्धावान सुश्रावक श्रीमान् सांवतराजजी लोढ़ा का 23 जनवरी 2011 को संथारे के साथ पण्डितमरण हो गया। आपने अपने जीवनकाल में श्री ओसवाल समाज महामन्दिर के सचिव पद एवं श्री लोढ़ा कुलदेवी श्री बड़माता मंदिर ट्रस्ट के राष्ट्रीय सचिव पद को सुशोभित करते हुए कई रचनात्मक कार्य किये। शिक्षा के क्षेत्र में आपश्री ने महामन्दिर में श्री महावीर एकेडमी विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) की स्थापना की। महात्मा गाँधी अस्पताल में आफिस अधीक्षक पद पर रहकर जैन समाज के संत-सतीवर्ग की अस्पताल सम्बन्धी सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आपके परिवर की आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द प्रवर के प्रति पूर्ण श्रद्धा भक्ति है। आपने अपने जीवनकाल में उपवास, आयम्बिल एवं ग्यारह की तपस्या की। आप पूज्य श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. के सांसारिक पक्षीय भाई थे। आप अपने पीछे धर्मसहायिका धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी लोढ़ा, एक पुत्र जसवन्तराज एवं तीन पुत्रियाँ, पुत्रवधू, एक पौत्र, दो पौत्री, आठ दोहिता-दोहितियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गए है। जीवन के अंतिम क्षणों में महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की सुशिष्याओं द्वारा संथारा ग्रहणकर समाधि भावों में लीन रहकर संघ-समाज के लिए अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया।

जयपुर- कर्तव्यपरायण, मृदुभाषी सुश्रावक श्री केशरीचन्द जी नवलखा का 12 दिसम्बर, 2010 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप पूरे जैन समाज में तातश्री के नाम से प्रसिद्ध थे। आप आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति श्रद्धानत रहे। श्रीमान् केशरीचन्द जी राजनीति के क्षेत्र में भी ख्याति प्राप्त राजनेता थे। आप अपने पीछे भाई मोतीचन्द जी, डॉ. पन्नालाल जी एवं सुपुत्र डॉ. राजकुमार जी, सुशील कुमार जी का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

जयपुर- वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी, सुश्रावक श्री उगमराज जी सुपुत्र स्व. श्री मूलराज जी मोहनोत (जोधपुर वालों) का 30 अक्टूबर 2010 को स्वर्गवास हो गया। आप वर्ष 1942 से 1944 तक जेल में रहे और अंग्रेजी हुकूमत के

खिलाफ काफी लड़ाईयाँ लड़ी। आपके पारिवारिक जनों ने आपकी अन्तिम इच्छा को पूर्ण करते हुए आपकी देह एस.एम.एस. मेडिकल कॉलेज के एनाटॉमी विभाग को सौंपी है। आपने अपना जीवन सादगीपूर्ण तरीके से एवं सहज रूप में जीया।

टोंक- सुश्राविका श्रीमती चन्द्रादेवी जी धर्मपत्नी श्री गंभीरमल जी बंब का 11

दिसम्बर, 2010 को देहावसान हो गया। आप बारहव्रतधारी श्राविका थीं। आपने अनेक वर्षीतप किये, मासखमण आदि तपश्चर्याएँ भी कीं। आप नियमित सामायिक-प्रतिक्रमण करती थीं। अनेक थोकड़े आगम आदि की जानकार श्राविका थीं। उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी म.सा. 'कमल' के प्रति आप विशेष श्रद्धा रखती थीं।

चिकमंगलूर- सुश्राविका श्रीमती शान्ति देवी धर्मपत्नी श्री बसन्तमल जी

सेठिया-रांका (बीकानेर) का 84 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। सरलता और संतोष की प्रतिमूर्ति वीर माता ने वर्षीतप, सिद्धितप, ग्यारह, दस, अठाई आदि तपस्याएँ कीं। आपके रात्रि भोजन एवं सचित्त पानी के त्याग थे तथा आप प्रतिदिन 7-8 सामायिक एवं स्वाध्याय करती थीं। आपके पुत्र आचार्य श्री नानेश के सुशिष्य श्री गौतममुनि जी म.सा. के रूप में शासन सेवा में सन्नद्ध हैं।

जयपुर- श्रीमती माणकदेवी खवाड़ धर्मपत्नी स्व. श्री हीराचन्द जी खवाड़ का आकस्मिक निधन 15 दिसम्बर, 2010 को हो गया।

चन्द्रपुर- श्री मनोजकुमार सुपुत्र श्री इन्दरचन्द जी लोढ़ा का स्वर्गवास 16 सितम्बर, 2010 को हो गया।

सिकन्दराबाद- समाजसेवी श्री उत्तमचन्द जी लुणावत का 61वर्ष की आयु में

संथारा सहित 13 सितम्बर 2010 को पंडित मरण हो गया। आप सिकन्दराबाद श्री संघ के वरिष्ठ, कर्मठ, धर्मपरायण, सक्रिय समाजसेवी एवं समर्पित कार्यकर्ता थे। आप बड़े ही सरल, शांत स्वभावी, हँसमुख, मधुरभाषी, व्यवहार कुशल एवं मिलनसार व्यक्ति थे। आप महावीर मेडिकल रिलीफ सोसायटी के दो बार अध्यक्ष रहे। आप कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे।

शिरपुर- कर्मयोगी सुश्रावक श्री प्यारेलाल जी बोहरा सुपुत्र स्व. श्री चुन्नीलाल

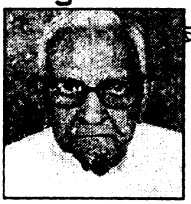

बोहरा (पीपाड़ शहर) का 81 वर्ष की आयु में 13 अक्टूबर 2010 को सागारी संथारा के साथ देहावसान हो गया। आपका जीवन सरलता, सादगी, सहनशीलता, मृदुता आदि गुणों से सुवासित था। आप प्रतिदिन सामायिक एवं स्वाध्याय करते थे। आप अपने पीछे अपने तीन बेटों और दो बेटियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

पगारिया- तपस्वी साधिका श्रीमती वरदीबाई छिंगावत धर्मपत्नी स्व. श्री

नाथूलाल जी छिंगावत (खजूरीपंथ वाले) का 8 फरवरी 2010 को 85 वर्ष की आयु में 48 घण्टे के संथारे सहित मरण हो गया। आप प्रतिदिन आठ सामायिक एवं पौरसी करती थीं तथा आपके आजीवन शीलव्रत का नियम था। आप शास्त्रों एवं थोकड़ों की जानकार थीं। आपका संपूर्ण जीवन त्यागमय था, साधुसन्तों की सेवा में हमेशा तत्पर रहती थीं। *-दयानन्द छिंगावत*

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती लीलादेवी जी मेहता धर्मपत्नी श्री नगेन्द्रमल जी

मेहता का 76 वर्ष की उम्र में 15 दिसम्बर 2010 को जयपुर में स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ सुश्राविका थी। आपका जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। प्रतिदिन स्वाध्याय एवं सामायिक उनके जीवन का अंग था। प्राणिमात्र की सेवा उनके जीवन का मुख्य ध्येय था। आप धर्मनिष्ठ श्री गणपत मल जी सुराणा की सुपुत्री थीं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जयपुर- सुश्रावक श्री भंवरलाल जी चौधरी सुपुत्र स्व. श्री घीसूलाल जी चौधरी (अजमेर वाले) का 66 वर्ष की वय में 24 दिसम्बर 2010 को आकस्मिक निधन हो गया। आप सद्व्यवहारी, मृदुभाषी एवं सेवाभावी थे तथा कई पत्रिका संस्थाओं से जुड़े हुए थे।

शोरापुर (कर्नाटक)- श्रीमान् शान्तिचन्द जी सिंघवी का 68 वर्ष की उम्र में

हृदय गति रुक जाने से 13 दिसम्बर 2010 को देहावसान हो गया। आप मृदुभाषी और धर्मविज्ञ थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए है।

रायचूर- श्रीमती पद्माबाई धर्मपत्नी स्व. श्री देवकरण जी संचेती मूथा का 88 वर्ष की वय में संथारे सहित 15 दिसम्बर 2010 को देहावसान हो गया। आप नित्य व्रत-प्रत्याख्यान करती थीं और 45 वर्षो से ब्रह्मचर्य का पालन कर रही थीं। आपका सम्पूर्ण परिवार रत्न संघ को समर्पित है।

पाली- धर्मपरायणा सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती सूरजदेवी का 28 जनवरी, 2011 को छः दिवसीय संथारे के साथ मरण हो गया। श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ सुश्राविका की गुरुभक्ति, संघनिष्ठा और सबको साथ लेकर शासन दीप्ति की भावना अनुकरणीय तो थी ही, अनुमोदनीय भी है। आपने जहाँ संघ-समाज में अपना वर्चस्व स्थापित किया, वहीं श्राविकारत्न ने ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन में उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए स्व-पर ज्ञान-ध्यान वृद्धि में सतत पुरुषार्थ प्रदर्शित करते हुए श्राविका मण्डल और बालिका मण्डल को सक्रिय-संगठित किया। स्वाध्यायरसिका श्राविकारत्न को आगम-शास्त्रों, बोल-थोकड़ों और परम्परा सम्बन्धी अच्छी जानकारी थी। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता में भी सामायिक-स्वाध्याय, दया-संवर, उपवास-पौषध और व्रत-प्रत्याख्यानों के प्रति उनकी जागरूकता-सजगता प्रेरणादायी रही। संथारे के समय श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के मुखारविन्द से आगमों की गाथाएँ सुनने का सुयोग प्राप्त हुआ।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मधुबाला धर्मपत्नी श्री जसवन्तराज भंसाली का संथारे के साथ देवलोकगमन 26 अक्टूबर 2010 हो गया।

जलगाँव- तपस्वी सुश्रावक श्री शिवराज जी जैन का 23 दिसम्बर 2010 को 76 वर्ष की वय में हृदयगति रूक जाने से निधन हो गया। आप निरन्तर उपवास, आयम्बिल, एकासन आदि तपश्चर्या के साथ धार्मिक गतिविधियों में सन्नद्ध रहते थे। आप जैन उद्योग समूह के संस्थापक सदस्य थे।

पाली- संघ-सेवी सुश्राविका श्रीमती अणचीबाई जी गुलेच्छा धर्मपत्नी स्व. श्री माणकचन्द जी गुलेच्छा का 10 जनवरी, 2011 को देहावसान हो गया। गुरु

हस्ती द्वारा प्रेरित सामायिक-स्वाध्याय के प्रति उनकी विशेष रुचि थी। संघ की प्रत्येक गतिविधि में आपका सदैव तन-मन-धन से सहयोग रहता था। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता आदि गुणों से युक्त आपका जीवन था। आप सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में सदैव समर्पित रहती थी। आपने अपने सुपुत्रों को भी धार्मिक संस्कार प्रदान किये, जिसके फलस्वरूप गुलेच्छा परिवार धार्मिक संस्कारों के साथ जीवन-निर्माण रूप सामायिक-स्वाध्याय से जुड़ा हुआ है। आप अपने पीछे पुत्र श्री लाभचन्द जी, श्री मदनलाल जी एवं श्री सम्पतराज जी का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

सुमेरगंजमण्डी- संघ-समर्पित सुश्राविका श्रीमती रामप्यारीबाई जी जैन का 27 दिसम्बर, 2010 को संथारापूर्वक स्वर्गगमन हो गया। आप प्रतिदिन नवकारसी, पौरसी, सामायिक एवं 25 वर्षों से चौविहार कर रही थीं। पिछले 35 वर्षों से आप ब्रह्मचर्य की साधना में रत थी। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप अपने पीछे सुयोग्य पुत्रों को छोड़कर गई हैं।

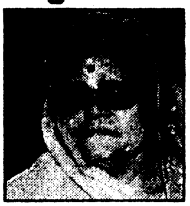

जयपुर- श्रीमती सूरजकंवर जी चोरडिया धर्मपत्नी स्व. श्री गुमानमल जी चोरडिया का 17 जनवरी 2011 को स्वर्गवास हो गया। आप सरलता एवं सादगी की प्रतिमूर्ति थी। आप में धार्मिक भावना के साथ दया एवं सहिष्णुता के भावों का भी सामञ्जस्य था। आपने निरंतर बेले-तेले-अठाई की तपस्या के साथ मासखमण की भी तपस्या की। मात्र 38 वर्ष की अवस्था में आपने सजोड़े ब्रह्मचर्य के कठोर नियम को अंगीकार किया। आप साधुमार्गी जैन महिला संघ की राष्ट्रीय अध्यक्ष थी।

सवाईमाधोपुर- श्री दिनेश कुमार जी जैन (महावीर प्रसाद जी) सुपुत्र स्व. श्री वृद्धिचन्द जी जैन का 54 वर्ष की उम्र में 6 जनवरी 2011 को निधन हो गया। वे धर्मानुरागी एवं संतों के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति रखते थे। पशुपक्षियों, रोगियों व बच्चों की सेवा में विशेष रुचि रखते थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

3000/- साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

725 SHRI P. DALPATHRAJ JI SINGAVI, Mysore(Karnataka)
726 SHRI SOHANRAJ JI RANKA, Tripolia Bazar, Jodhpur (Raj.)
727 SHRI SUBHASHCHANDJI SURANA,GuruwarBazar,Vasim(M.H.)
728 SHRI KAMAL KUMAR JI JAIN, Talwandi, Kota (Rajasthan)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12887 श्री नरेशकुमारजी लुणावत,तिलक नगर प्रथम, भदवासिया रोड़, जोधपुर (राज.)
12888 श्री इन्दरसिंह जी पोखरना, मदनगंज-किशनगढ़, जिला–अजमेर (राजस्थान)
12891 Shri Shital Jain ji, Next to Andhra Bank, Chennai (T.N.)
12892 श्री राकेश कुमार जी चोरड़िया, बस स्टेण्ड रोड, भोपालगढ़, जोधपुर (राज.)
12893 Shri ChagganLal ji Jain,Main Bazar, Hospet (Karnataka)
12894 Shri Prakash Chand ji Dak, Gundlupet (Karnataka)
12895 Smt. Vimala ji Ostwal, Kilpark, Chennai (Tamilnadu)
12896 श्री सुरेश जी सुराणा, न्यू पावर हाऊस रोड, शास्त्रीनगर, जोधपुर (राजस्थान)
12897 Shri Rajesh ji Doshi, Bangalore (Karnataka)
12900 Smt. Anupama ji, Bangalore (Karnataka)
12901 Shri Amrit ji Mandot, Santacruz (East) Mumbai (M.H.)
12903 Shri Kalpesh ji Kavad, Egmore, Chennai (Tamilnadu)
12904 Shri Prakash Chand ji Bohra, Chennai (Tamilnadu)
12905 Shri Jaideep ji Bhandari, Jamnagar (Gujarat)
12907 श्री आशिष कुमार जी ताथेड़, मनमाड़, नाँदगाँव, जिला–नाशिक (महाराष्ट्र)
12910 श्री किशोर जी डोसी, च्याबालुजा, पंचवटी, नाशिक (महाराष्ट्र)
12911 श्रीमती संगीता जी बोकडिया, बनीपार्क, जयपुर (राजस्थान)
12912 श्री राजेश जी बाफणा, रविवार कारंजा, जवल, नाशिक (महाराष्ट्र)
12913 श्रीमती मीत जी मोदी, वासुदेव चौक, घोटी, नाशिक (महाराष्ट्र)
12914 श्री अजीतजी जैन, द्वारकादास मंत्री राजस्थानी हायस्कूल के पास, बीड (महा.)
12916 श्री प्रेमचन्द जी जैन, 14 ए, गुलाब बाडी, आर्य समाज रोड, कोटा (राजस्थान)
12917 श्री राहुल कुमार जी जैन, गुलाब बाड़ी, कोटा (राजस्थान)
12918 श्री अशोक जी कटारिया, लाखन कोटडी, सूरतराम चौक, अजमेर (राजस्थान)
12919 श्री नन्दाबल्लभ जी लोहनी, ई 1/191, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (मध्यप्रदेश)

12920 श्री नरेन्द्र जी नाहटा, बी. आर. नाहटा मार्ग, मन्दसौर (मध्यप्रदेश)
12924 श्री बंशीलाल जी डोसी, पुराना बाजार, गुलाबपुरा, भीलवाड़ा (राजस्थान)
12925 श्री राजेन्द्र कुमार जी चोरड़िया, भदादा बाग, गुलाबपुरा, भीलवाड़ा (राजस्थान)
12926 श्रीमती चन्द्रलेखा जी मेहता, बाफणा कॉलोनी, बेरसिया रोड़, भोपाल (म.प्र.)
12929 Shri Dilip S. Chatur ji, T. Nagar, Chennai (Tamilnadu)
12930 श्रीमती कमला जी सेठिया, सदर बाजार, मसूदा, अजमेर (राजस्थान)
12931 श्री रतनराज जी जैम (पल्लीवाल), अनाजमंडी, महुवा, जिला–दौसा (राज.)
12932 श्री राहुल जी गाँधी , आय.सी. कॉलोनी, बोरीवली (वेस्ट), मुम्बई (महाराष्ट्र)
12933 श्री भँवरलाल जी कोठारी, कपड़े के व्यापारी, कोटा रोड़, बून्दी (राजस्थान)
12934 श्रीमती अनिता जी जैन, नौ कुआँ रोड़, शामली, मुजप्फरनगर (उत्तरप्रदेश)
12937 Shri Vishal ji Jain, Kandivali (East), Mumbai (M.H.)
12938 श्री सुरेन्द्र जी लुणावत, शाहीबाग, अहमदाबाद (गुजरात)
12939 श्री रतन जी, लक्ष्मी क्लॉथ मार्केट, पाँच कुआँ, अहमदाबाद (गुजरात)
12940 श्री ललीत जी लुणावत, मटकी चौराहा, पावटा सी रोड, जोधपुर (राजस्थान)
12941 Shri Ravindra ji Dangi, 6th Main Gomtipuram, Madurai
12942 Smt. Neetaji Lodha,Gandhi Chowk,Jamner,Jalgaon(M.H.)
12944 Smt. Leena ji Jain, East Punjabi Bagh, New Delhi
12945 श्री अतुल जी धारीवाल, 97, केशव नगर, पाल रोड, जोधपुर (राजस्थान)
12947 श्री प्रकाशकरण जी संचेती, बालोतरा, जिला–बाड़मेर (राजस्थान)
12948 श्री गुमानमल जी जैन, आदर्श नगर, पाली (राजस्थान)
12949 श्री अमित कुमार जी जैन, लवकुश अपार्टमेन्ट, जामनगर (गुजरात)
12963 Shri Madan Lal Ji Darla, Mysore (Karnataka)
12964 Smt. Padama Devi ji Khivasara, Mysore (Karnataka)
12971 श्री चितरंजन जी जैन, छोटा चौराहा, दादाबाडी, कोटा (राजस्थान)
12973 श्री अभिषेक जी जैन, नयनतारा अपार्टमेन्ट, जलगाँव (महाराष्ट्र)
12974 श्री विनोद कुमार जी जैन, नयनतारा अपार्टमेन्ट, जलगाँव (महाराष्ट्र)
12975 Shri Lalit ji Jain (Chout Bhai), Mumbai (M.H.)
12976 Shri Rakesh ji Kothari, Zaveri Bazar, Mumbai (M.H.)
12977 Shri Kanhiyalal ji Bohra, Zaveri Bazar, Mumbai (M.H.)
12978 Shri Chander Singh ji, Zaveri Bazar, Mumbai (M.H.)
12979 Shri Dinesh ji Hiran, Zaveri Bazar, Mumbai (M.H.)
12980 श्री पुखराज एम. जैन जी, दत्ता पाटिल चाल, घाटकोपर, मुम्बई (महाराष्ट्र)
12981 Shri Pawan ji Chordia, RL Charrasta, Surat (Gujarat)

12982 श्रीमती नीता जी बेतला, मु.पोस्ट–छोटी खाटू, जिला–नागौर (राजस्थान)
12984 श्री संजय कुमार जी कोटेचा, भगवान महावीर मार्ग, बोदवड, जलगाँव (महा.)
12985 श्री नगेन्द्रमल जी मेहता, ड्रग लेण्ड, जालोरी गेट, जोधपुर (राजस्थान)
12986 Shri Rupesh ji Lunkad, Lunkad Tower, Jalgaon (M.H.)
12987 Shri Mulkh Raj ji Garg, Budhlada, Mansa (Punjab)
12992 Shri Abhayraj ji Kothari, Bangalore (Karnataka)
12993 श्री विजय कुमार जी जैन, 3–ब–37, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)
12994 श्री लाहौरीलाल जी जैन, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)

500/- श्री डी. बोहरा परिवार, चेन्नई के सौजन्य से

12915 श्री धनराजजी कटारिया, खती का हथाई,नया बास,ब्यावर,अजमेर (राजस्थान)

44 सदस्य अर्द्धमूल्य योजना श्री उत्तमचन्द जी भंडारी, बैंगलोर के सौजन्य से

12889 श्री शांतिलालजी जैन, नित्यानन्द नगर, तृतीय मंजिल, क्विंस रोड,जयपुर(राज.)
12890 श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन, गढ़ी भदौरिया, प्रताप नगर, शाहगंज, आगरा (उ.प्र.)
12898 श्री अशोक कुमार जी जैन, सरस्वती नगर, विदिशा (मध्यप्रदेश)
12899 श्री अशोक कुमार जी जैन (छैगाँव वाले), खाचरौद, जिला–उज्जैन (म.प्र.)
12902 श्री अनिलजी जैन,ज्योतिराव महिला कॉलेज के पीछे, सोडाला, जयपुर (राज.)
12906 श्री प्रमोद कुमार जी जैन, हल्दीघाटी मार्ग, प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर (राज.)
12908 श्री रवि कुमार जी जैन, डाक बंगला रोड, मेघनगर, जिला–झाबुआ (मध्यप्रदेश)
12909 श्री रिखबचंद्रजी जैन,आदर्शकॉलोनी, हैड पोस्टऑफिस के पीछे,भरतपुर (राज.)
12921 श्री रविराज जी कटारिया, प्रजापत गली, रावटी, जिला–रतलाम (मध्यप्रदेश)
12922 श्री अभय कुमार जी चत्तर, सदर बाजार, रावटी, जिला–रतलाम (मध्यप्रदेश)
12923 श्री सचिन जी चतर, मावाला, पैलेस रोड, रावटी, जिला–रतलाम (मध्यप्रदेश)
12927 श्री बिरदीचन्द जी जैन, साईंनाथ की खिडकियाँ, सेठ हाऊस, करौली (राज.)
12928 श्री प्रकाशचन्द जी जैन, साईंनाथ की खिडकियाँ, सेठ हाऊस, करौली (राज.)
12950 श्री विनोद कुमार जी जैन, 61/245, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
12951 श्री प्रखर कुमार जी मोदी, चौंगोटोला, नगरवाड़ा, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
12952 श्री ज्ञानचन्द जी कांकरिया, चांगोटोला, नगरवाड़ा, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
12953 श्री प्रेमचन्द जी कांकरिया, चांगोटोला, नगरवाड़ा, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
12954 श्री विनोद कुमार जी बोथरा, चांगोटोला, नगरवाड़ा, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
12955 श्री मिलापचन्द जी ललवानी, चांगोटोला, नगरवाड़ा, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
12956 श्री भीकमचन्द जी आबड, चांगोटोला, नगरवाड़ा, बालाघाट (मध्यप्रदेश)

12957 श्री ललित कुमार जी बागरेचा, चांगोटोला, नगरवाड़ा, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
12958 श्री रतनचन्द जी ललवानी, चांगोटोला, नगरवाड़ा, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
12959 श्री राजेश कुमार जी चक्रवर्ती, चांगोटोला, नगरवाड़ा, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
12960 श्री टीकमचन्द जी आबड, चांगोटोला, नगरवाड़ा, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
12961 श्री योगेश कुमार जी आबड, चांगोटोला, नगरवाड़ा, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
12962 श्री दिनेश कुमार जी कोचर, लामता, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
12965 श्री मनीष जी पोरवाल, निशी पैलेस, नई आबादी, मन्दसौर (मध्यप्रदेश)
12966 श्री अनूप कुमार जी जैन (पोरवाल), नई आबादी, मन्दसौर (मध्यप्रदेश)
12967 श्री धर्मेन्द्र जी जैन, गाँव पोस्ट–पिपलीया मंडी, जिला–मन्दसौर (मध्यप्रदेश)
12968 श्री प्रीयेश जी डूंगरवाल, काला खेत, मेन रोड, मन्दसौर (मध्यप्रदेश)
12969 श्री अशोक कुमार जी मारु, भादवीया गली, खानपुरा, मन्दसौर (मध्यप्रदेश)
12970 Shri Ravindra Kumar ji Surana, Shivgarh, Ratlam (M.P.)
12983 कु. सुवर्णा जी पारख, एच कॉलोनी, पाचोरा रोड, भडगाँव, जलगाँव (महा.)
12988 श्री सचिन जी जैन, कमला पार्क, डी वन 405, भाईन्दर (वेस्ट), ठाणे (महा.)
12989 श्री सन्देश जी जैन, रुणवाल गॉर्डन सीटी, बालकुम, ठाणे (वेस्ट) (महाराष्ट्र)
12990 श्री अभय कुमार जी नलवाया, ए–34, जनता कॉलोनी, मन्दसौर (मध्यप्रदेश)
12991 श्री कुशाग्र जी नलवाया, रामलला जी का रास्ता, जौहरीबाजार, जयपुर (राज.)

अर्द्धमूल्य योजना श्री मदनलाल जी बाघमार, जबलपुर के सौजन्य से

12972 श्री सुनील जी कोठारी, कोठारी मार्केट, मेन गेट, नरसिंहपुर (मध्यप्रदेश)

50 सदस्य अर्द्धमूल्य योजना श्री दिनेश जी खिंवसरा, गोटन (जोधपुर) के सौजन्य से

12935 श्री विपुल जी पारख, पाल लिंक रोड, पेट्रोल पम्प के सामने, जोधपुर (राज.)
12936 श्री आदि जी सोलंकी, सोलंकियों का बास, खानपुरा मौहल्ला, जालोर (राज.)
12943 श्री अजीत कुमार जी मेहता, मलवासी स्टेशन रावटी, रतलाम (मध्यप्रदेश)
12946 Smt. Seema ji Bhandari, Haveri (Karnataka)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

100000/- श्री राजीव जी नीता जी डागा, हांगकांग, श्री अनन्त जी चोरड़िया सुपुत्र श्रीमती काजल–अशोक जी चोरड़िया, जोधपुर के 9 तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

11000/- मैसर्स पृथ्वी सोफ्टेक लिमिटेड, चेन्नई, आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म शताब्दी अध्यात्म चेतना वर्ष के अन्तर्गत जिनवाणी के गुरु गरिमा एवं श्रमण–जीवन का प्रकाशन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

11000/- श्री सुनीलचन्द जी, अमितकुमार जी डागा, जयपुर श्री सुभाष जी डागा सुपुत्र स्व श्री इन्दरचन्द जी एवं सुपौत्र स्व. श्री रतनचन्द जी डागा की भागवती दीक्षा भोपालगढ़ में परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से दिनांक 15 दिसम्बर 2010

को सानन्द सम्पन्न होने पर एवं दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

5100/- श्री अनिल जी भंसाली, जोधपुर, श्री कमलपतराज जी एवं श्रीमती सुशीला जी भंसाली जोधपुर के दिनाँक 11 दिसम्बर 2010 को शादी के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उनके परिवार वालों की तरफ से भेंट।

3100/- श्री डी.एस. पदमचन्द जी धोका, रामनगरम् बैंगलोर, अपनी धर्मपत्नी के मासखमण की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

3100/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मेडता सिटी, द्वारा सहयोग हेतु।

2551/- श्री कुशलचन्द जी बाफना, लक्ष्मीनगर, जोधपुर, भोपालगढ़ में मुमक्षु भाई श्री सुभाष जी डागा के दीक्षा प्रसंग पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से सजोड़े शीलव्रत ग्रहण करने पर भेंट।

2500/- श्री नेमीचन्द जी, नीलमचन्द जी, प्रकाशचन्द जी, संजय जी, संदीप जी, विनोद जी, पिंकेश जी-जलगाँव एवं श्री चम्पालाल जी, पारसमल जी खटोड-आकोला, सपरिवार पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा दिवस पर पावन दर्शन व उपाध्यायप्रवर के पावन दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी सप्रेम भेंट।

2500/- श्रीमती बिमला जी कांतीलाल जी चौधरी, धुलिया, अध्यात्म चेतना वर्ष में पीपाड़सिटी में विराजित पूज्य आचार्य भगवन्त श्री, उपाध्याय भगवन्त श्री प्रभृति सन्त-सतीवृन्द के पावन दर्शन लाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2500/- श्री सुनील जी नाहर (पाली वाले), सूरत, कु. रिद्धी सुपुत्री श्री निहालचन्द जी, सुपौत्री श्रीमती विजयकँवर जी सोहनलाल जी नाहर के प्रथम प्रयास में सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री सुरेन्द्र कुमार जी, सज्जनसिंह जी, श्रेयांस जी, ऋषभ जी पोखरना, विजयनगर, श्री चेतनकुमार जी के पचोले की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- सुप्रभात (जन्म शताब्दी कलैण्डर), मुम्बई, आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.की जन्म शताब्दी को अध्यात्म चेतना वर्ष के रूप में मनाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्रीमती पारसदेवी जी हीरावत धर्मपत्नी श्री धनरूपमल जी हीरावत, जयपुर, अपने वर्षीतप एवं आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्मशती के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्रीमती सायरदेवी जी लुंकड परिवार, पाली-मारवाड कु. डॉ. अर्चना जी लुंकड सुपुत्री श्री कान्तिलाल जी लुंकड के भारतीय विद्यापीठ, पुणे में बी.ए.एम.एस. की डिग्री में चतुर्थ स्थान प्राप्त कर डॉक्टर बनने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्रीमती उगमकँवर जी जैन (चोरड़िया) धर्मपत्नी स्व. श्री पारसमल जी जैन, जोधपुर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म शताब्दी अध्यात्म चेतना वर्ष के रूप में मनाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री चंचलमल जी मिनाक्षी जी बच्छावत, कोलकात्ता सुपुत्र चि. मोहित का शुभविवाह सौ.कां. ऋचा जी के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री सतीशनाथ जी मोदी, श्रीमती गुलाब जी मोदी, जयपुर, अपने सुपुत्र श्री सौरभनाथ मोदी एवं सुधांशुनाथ मोदी पुत्र (स्व. श्री सज्जनाथ जी मोदी श्रीमती विमला जी मोदी) के शुभविवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्री चन्नीलाल जी, संतोषकचन्द जी नाहर, चुडावल,राजस्थान हॉल निवासी कलकुची, चेन्नई, द्वारा सहयोग हेतु भेंट।

2100/- श्रीमती रोशनकुमारी जी धर्मपत्नी श्री प्रसन्नकुमारजी कटारिया, भीलवाड़ा, अपनी पुत्रवधू श्रीमती संगीता धर्मपत्नी श्री राजीव जी कटारिया के 31 उपवास के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्री हंसराज जी, आनन्दराज जी मुणोत, जयपुर, चि. अंकित जैन (सी.ए.) सुपुत्र श्री आनन्दराज जी जैन का शुभविवाह सौ. शालिनी जैन (सी.ए.) के संग होने एवं सुपुत्री आशा जैन (सी.ए.) के P.W.C. में पदोन्नति के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्री दिलखुशराज जी मेहता (पीपाड़ शहर), मुम्बई, अपने अग्रज श्री मनमोहनराज सा मेहता (पीपाड़ शहर) दिल्ली वालों द्वारा दिनाँक 18 जनवरी, 2011 को आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत ग्रहण करने के उपलक्ष्य में भेंट।

2000/- श्री धोका और रूणवाल परिवार, मैसूर, चि. मनीष जी सुपुत्र श्री चन्दनमल जी रूणवाल के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1501/- श्री महेन्द्र जी एम. गांग, सूरत, श्रीमती स्वाति जी धर्मपत्नी श्री अनुपम जी गांग (यू.एस.ए.) के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में, श्रीमती प्रियदर्शनी जी धर्मपत्नी श्री अभिषेक जी गांग, मुम्बई के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में तथा श्रीमती ललिता जी धर्मपत्नी श्री महेन्द्र एम. गांग जी (जोधपुर वाले), सूरत की शादी की सालगिरह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1500/- श्री प्रकाशचन्द जी, शान्तिलाल जी, महावीर जी लोढ़ा, चेन्नई, परम पूज्य आचार्य भगवन्त, श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर एवं संत-सती मंडल के पावन दर्शन तथा श्री महावीर जी लोढ़ा पर्वाधिराज पर्युषण में प्रथम बार सेवा देने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1111/- श्री मुकेश कुमार जी, राजेश जी नाहर, देहली, पूज्य पिताश्री स्व. श्री शान्तिलाल जी नाहर की द्वितीय पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- डॉ. धर्मचन्द ऋषभचन्द जी जैन (अलीगढ़-रामपुरा), जोधपुर, सौ.कां. मधुरिका सुपुत्री श्रीमती मधु जी-डॉ. धर्मचन्द जी जैन का शुभ विवाह आयुष्मान आशीष जी सुपुत्र श्रीमती आशारानी जी-श्री प्रेमचन्द जी जैन, रावतभाटा के संग 21 जनवरी 2011 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री देवीनारायण जी, प्रेमचन्द जी जैन (कुशतला वाले), रावतभाटा, आयुष्मान आशीष सुपुत्र श्रीमती आशारानी जी-श्री प्रेमचन्द जी जैन का शुभ विवाह सौ.कां. मधुरिका सुपुत्री श्रीमती मधु जी-डॉ. धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर के संग 21 जनवरी, 2011 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री राजूलाल जी, नरेन्द्रमोहन जी, जिनेन्द्र कुमार जी जैन (श्यामपुरा वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर महासती कृपाश्री जी म.सा. का मेड़तासिटी में प्रथम चातुर्मास सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सुनीलकुमार जी जामड़ एवं श्रीमती मधु जी जामड़, जयपुर, अपनी सुपुत्री सुश्री स्नेहा जैन (जामड़) सुपौत्री श्रीमान् हेमचन्द जी एवं पारसदेवी जी जामड़ के सी.ए. की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री प्यारेलाल जी मुणोत, नागपुर, सौ. शोभाबाई जी प्यारेलाल जी मुणोत के सुपौत्र रत्न चि. अरिहन्त सुपुत्र श्री महेन्द्र जी मुणोत के प्रथम जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री प्रदीप कुमार जी मधु जी मोदी, जयपुर सुपुत्री सौ.कां. कृति जी का शुभविवाह चि. सौरभ जी सुपुत्र श्री महेन्द्रसिंह जी मृदुलिका जी सिंघवी के संग दिनांक 12 नवम्बर 2010

को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री महावीरचन्द जी, प्रकाशचन्द जी, संदीप कुमार जी, सुनील जी, विशाल जी, चेन्नई, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं सन्त-सती के पावन दर्शन-वन्दन करने एवं पूज्य पिताश्री श्री हरकचन्द जी ओस्तवाल का स्वर्गवास हो जाने पर प्रथम बार दर्शन करने के सम्बन्ध में भेंट।

1100/- श्रीमती वीणा जी अभय जी पारख, जयपुर, सुपुत्र चि. अनुराग जी का शुभविवाह सौ.कां. डोली जी सुपुत्री श्री मोतीचन्द जी दुग्गड, जगदलपुर के संग दिनांक 17 अक्टूबर 2010 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- वीरमाता श्रीमती तारादेवी जी धर्मसहायिका श्री प्रभुदयाल जी जैन (फाजिलाबाद वाले), हिण्डौनसिटी, साध्वीप्रमुखा, शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री प्रभुदयाल जी जैन, हिण्डौनसिटी, वीरमाता धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी जी जैन का दिनांक 4 जनवरी, 2011 को 28 दिवसीय संलेखना संथारे सहित महाप्रयाण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री सुरेन्द्र कुमार जी, सज्जनसिंह जी, श्रेयांस जी, ऋषभ जी पोखरना, विजयनगर, श्रीमती विमलादेवी जी के 11 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री के. एस. गलुण्डिया जी, जयपुर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म शताब्दी को अध्यात्म चेतना वर्ष के रूप में मनाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री हरिचन्द जी अनिल जी एवं श्रीमती सरिता जी हीरावत, जयपुर सप्रेम भेंट।

1100/- श्री नेमीचन्द जी, पारसचन्द जी जैन, कुशतला श्री नेमीचन्द जी जैन द्वारा सजोड़े शीलव्रत तथा रात्रि चौविहार के आजीवन प्रत्याख्यान ग्रहण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री राधेश्याम जी कुशलचन्द जी गोटेवाले, सवाईमाधोपुर, अध्यात्म चेतना वर्ष में सौ. रजनीदेवी जी धर्मपत्नी श्री पदमचन्द जी के एकान्तर वर्षीतप एवं चि. प्रदीप कुमार जी के एकान्तर मासखमण की साधना करने तथा पीपाड़सिटी में पूज्य आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त के पावन सान्निध्य में पारणा करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती प्रेमकँवर जी धर्मपत्नी श्री मिलापचन्द जी बुरड़, ब्यावर, आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी एवं श्री मिलापचन्द जी बुरड़ के गुरु भगवन्त के परोक्ष कृपा प्रसाद से स्वास्थ्य लाभ की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती सायरदेवी जी, बस्तीमल जी, श्रेणिक जी, राजेश जी, सुरेश जी, संजय जी चोरड़िया, चेन्नई, पीपाड़सिटी में पूज्य आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त प्रभृति सन्त-सतीवृन्द के दर्शन लाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती सायरदेवी जी बस्तीमल जी चोरड़िया, चेन्नई सुपुत्र श्रेणिक जी के अध्यात्म चेतना वर्ष में एकासना का वर्षीतप एवं पुत्रवधू सौ. उषादेवी जी के एकान्तर वर्षीतप आराधना की साधना के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री गौतमराज जी, श्रीमती उषा जी, उमंग जी सुराणा, जयपुर, आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. की 101वीं जन्मजयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री रविन्द्र कुमार जी मेहता सुपुत्र स्व. श्री शिवकरण जी मेहता, जयपुर, सुपुत्री रुचि जी मेहता के चार्टर्ड अकाउण्टेन्ट बनने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री महावीरचंद जी लोढ़ा, श्रीमती सुशीला जी लोढ़ा, हीरादेशर, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर

के हिरादेशर पधारने के उपलक्ष्य में सजोडे आजीवन शीलव्रत ग्रहण करने पर भेंट।

1100/- श्री प्रकाशचन्द जी, पंकजकुमार जी, विशाल जी जैन, जलगाँव (महा.), चि. विशाल जैन के कांदिवली (ईस्ट) मुम्बई में नूतन गृह प्रवेश के उपलक्ष्य में सादर भेंट।

1100/- श्रीमती केसरकंवर जी धारीवाल, जोधपुर, पूज्य स्व. श्री मूलराज जी धारीवाल की द्वितीय पुण्य स्मृति पर श्रीमती केसरकंवर जी मंन्जू जी, संन्दीप जी एवं सोनू जी धारीवाल द्वारा उनकी स्मृति में भेंट।

1100/- श्री तेजराज जी संचेती मूथा, रायचूर (कर्नाटक), स्व. श्रीमती पदमाबाई मूथा धर्मपत्नी स्व. श्री देवकरण जी मूथा संचेती का दिनाँक 15 दिसम्बर 2010 को संथारापूर्वक देवलोक गमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री अभयकुमार जी, सम्पतकुमार जी चोरडिया, जयपुर, श्रीमती सूरजकंवर जी चोरडिया धर्मपत्नी स्व. श्री गुमानमल जी चोरडिया का दिनाँक 17 जनवरी, 2011 को आकस्मिक निधन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री रविन्द्र कुमार जी मेहता सुपुत्र स्व. श्री शिवकरण जी मेहता, जयपुर, अपनी पुत्री सुश्री रुचि मेहता के चार्टड एकाउन्टेण्ट (सी.ए.) बनने के उपलक्ष्य में भेंट।

1001/- श्री सज्जनसिंह जी, शोभागसिंह जी चौधरी, गुलाबपुरा, महासती श्री सन्तोषकँवर जी म.सा. आदि ठाणा-4 का वर्ष 2010 का चातुर्मास गुलाबपुरा में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1001/- श्री मनोहरसिंह जी, अमित कुमार जी चेलावत, इन्दौर, ज्ञान प्रभावना के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्रीमती सुशीला जी, श्री किस्तूरचन्द जी डोसी, ब्यावर, सुपौत्री सुश्री ऐश्वर्या जी सुपुत्री श्रीमती सुनीता जी (अध्यक्ष श्री जैन रत्न श्राविका मंडल-ब्यावर) एवं श्री संजय जी डोसी (अध्यक्ष श्री जैन रत्न युवक परिषद्-ब्यावर) के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में।

1000/- श्री दलीचन्द जी, किशनलाल जी नाहटा, केजीएफ, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन, वन्दन करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री सोहनलाल जी, बुधमल जी, सम्पतराज जी, राजेन्द्र कुमार जी बाघमार, मैसूर, श्री सुभाष जी डागा की भागवती दीक्षा भोपालगढ़ में परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से सानन्द सम्पन्न होने पर तथा इस प्रसंग पर दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री भूपेशकुमार जी, अर्जुनलाल जी हींगड, नवसारी, सप्रेम भेंट।

1000/- श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी, जोधपुर, द्वारा सहयोग हेतु।

1000/- श्री पारसमल जी महावीरचन्द जी धोका, मैसूर, श्री सुभाष जी डागा की भागवती दीक्षा भोपालगढ़ में परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से सानन्द सम्पन्न होने पर तथा इस प्रसंग पर दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री राणूलाल जी कोचर, विजयनगरम्, सप्रेम भेंट।

1000/- श्री प्रकाशचन्द जी, सुभाषचन्द जी, अशोककुमार जी, अभयकुमार जी हुण्डीवाल, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल का संथारापूर्वक पण्डितमरण होने की पुण्य स्मृति में भेंट।

1000/- श्री मोतीलाल जी,शांतिलाल जी पावेचा, सोजत रोड़-पाली, व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 6 के सोजत चातुर्मास सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में

सप्रेम भेंट।

551/- श्री कपूरचन्द जी, ओमप्रकाश जी, सोमप्रकाश जी जैन (बिलोपा वाले), सवाईमाधोपुर, सौ.कां. गरिमा जी का शुभविवाह चि. सचिन जी सुपुत्र श्री योगेन्द्र कुमार जी जैन, जयपुर के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

551/- श्रीमान् श्रीचन्द्र जी एवं श्रीमती कान्ता जी बैताला, जयपुर, अपनी सुपुत्री सुश्री प्रिंयका (टीना) सुपौत्री स्व. श्री सोहनलाल जी एवं श्रीमती इचरज देवी जी बैताला के सी.ए.(फाइनल) दोनों ग्रुप एक साथ पास करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

551/- श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर चि. राहुल जी जैन के एम.सी.ए. में तृतीय सेमेस्टर में 79% अंक प्राप्त करने तथा श्री अजय जी जैन बी-टेक के पाँचवे सेमेस्टर में 75.3% अंक प्राप्त करने तथा श्री प्रवीण जी जैन (गगन) सुपुत्र श्री धर्मचन्द जी जैन के टैक्सास-यू.एस.ए. में नियुक्ति प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री शरद जी जैन, दिल्ली, श्रीकमलचन्द जी मालू का दिनांक 3 अक्टूबर 2010 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री शान्तिलाल जी, मेघराज जी जैन (चौरू वाले), जयपुर, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पाली में, उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के गोटन में तथा सभी सन्त-सती मंडल के चातुर्मास स्थलों पर दर्शन लाभ प्राप्त करने एवं श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. की 11वीं दीक्षा जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री श्राविका महिला मंडल, गंगापुरसिटी-सवाईमाधोपुर द्वारा सप्रेम भेंट।

501/- श्री दौलतचन्द जी, योगेन्द्र कुमार जी जैन, मानसरोवर-जयपुर, अपने सुपुत्र चि. सचिन का शुभविवाह सौ. गरिमा सुपुत्री श्री सोमप्रकाश जी जैन (आवासन-मंडल), सवाईमाधोपुर के संग दिनांक 02 दिसम्बर 10 को सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री घनश्याम जी जैन, मानसरोवर-जयपुर, सुपुत्री सुश्री पूजा जी जैन के जूनियर एकाउण्टेट ऑफिसर के पद पर नियुक्ति होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री बाबूलाल जी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर, स्व. श्री नेमीचन्द जी जैन (धणोली वाले) के सुपौत्र पंकज कुमार जी सुपुत्र श्री बाबूलाल जी जैन का शुभविवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री सुनील कुमार जी, संजयकुमार जी खवाड, जयपुर, श्रीमती माणक देवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री हीराचन्द जी खवाड का स्वर्गवास दिनांक 15 दिसम्बर 2010 को हो गया, उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

501/- श्री जम्बू कुमार जी, नवीन कुमार जी जैन, आलनपुर-सवाईमाधोपुर सुपुत्र चि. नवीन कुमार जी जैन का शुभविवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री विजय जी मेहता, जोधपुर, अपनी शादी की 36 वी वर्षगाठ पर सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती शांतिबाई जी जैन, जयपुर सप्रेम भेंट।

500/- श्री सम्पतराज जी, विमल कुमार जी बाघमार, चेन्नई, चि. विमलकुमार जी सुपुत्र चि. जीत के जन्म की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री गणपतलाल जी चौपड़ा, त्रिपुर, पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री वर्धमान जी चाणोदिया, इन्दौर, पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं सन्त-सती के दर्शन, वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती शांतादेवी जी चपलोत धर्मसहायिका स्व. श्री रामपाल जी चपलोत, हुरडा, सेवाभावी महासती श्री सन्तोष कँवर जी म.सा. के गुलाबपुरा में यशस्वी चातुर्मास के उपलक्ष्य में एवं आयंबिल ओली सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री दीपचन्द जी, राजेन्द्र कुमार जी, राकेश कुमार जी, मुकेश कुमार जी रांका, गुलाबपुरा, श्रीमती राखी जी के 11 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री अशोक जी जीतमल जी कटारिया, अजमेर, पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के सपरिवार पावन दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती कमलाबाई जी धर्मसहायिका श्री लालचन्द जी काठेड, ब्यावर, अपने पीहर पक्ष गुलाबपुरा में ऐतिहासिक चातुर्मास में महासती श्री सन्तोषकँवर जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री आनन्दराज जी, सुनील कुमार जी पटवा, मैसूर, श्री सुभाष जी डागा की भागवती दीक्षा भोपालगढ़ में परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से सानन्द सम्पन्न होने पर तथा इस प्रसंग पर दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- दीक्षा प्रसंग पर भोपालगढ़ में मैसूर से भागवती दीक्षा के पावन प्रसंग पर उपस्थित 10 युवकों द्वारा सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती कमला जी चौधरी, जयपुर, श्री भंवरलाल जी चौधरी का दिनांक 24 दिसम्बर 2010 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

500/- श्री कल्याणमल जी, महावीर प्रसाद जी, इन्दौर, श्रीमती बदामबाई जी की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री लड्डूलाल जी, अशोक कुमार जी जैन (मोहम्मदपुरा वाले), इन्दौर, चि. अंकित कुमार जी जैन के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री महेन्द्र कुमार जी जैन (अलीगढ-रामपुरा), सवाईमाधोपुर अपने सुपुत्र चि. राहुल का शुभविवाह दिनांक 2 दिसम्बर 2010 को सौ. राशि के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री बाबूलाल जी घनश्याम जी जैन (मोहम्मदपुरा वाले), सुमेरगंज मंडी, अपनी माताश्री श्रीमती रामप्यारी बाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री रामप्रहलाद जी का देहावसान 27 दिसम्बर 2010 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री प्रकाशचन्द जी खींचा, जयपुर सुपुत्र चि. अंकित कुमार जी सुपौत्र श्रीमती कमलादेवी जी स्व. श्री सम्पतराज जी खींचा द्वारा प्रथम प्रयास में सी.ए. फाइनल करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री महावीरचन्द जी शान्तिलाल जी पालडेचा, धनोप, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सन्त-सतीवृन्द के पीपाड़सिटी में दर्शन, वन्दन तथा महासती श्री जागृतिप्रभा जी म.सा. के विगत 6 वर्ष से एकान्तर वर्षीतप की आराधना के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री अशोक कुमार जी, नरेन्द्र कुमार जी चौधरी, निवाली, चलथान, अपनी पुत्री सुश्री मोनिका का विवाह दिनाँक 23 नवम्बर, 2010 को सानन्द सम्पन्न होने पर।

500/- श्री सौभाग्यमल जी, धर्मचन्द जी जैन, कुशतला वाले, श्री सुरेशचंद जी जैन कुशतला के सवाईमाधोपुर ग्रामीण सहकारी बैंक के डायरेक्टर पद पर निर्वाचित होने पर भेंट।

500/- श्री चम्पालाल जी, श्री जवाहरलाल जी, श्री प्रकाश जी सुराणा, पाली-मारवाड़, अपनी माताश्री श्रीमती सुकनकंवर धर्मपत्नी स्व. श्री हस्तीमल जी का दिनाँक 23 नवम्बर 2010 को 103 वर्ष की आयु में स्वर्गगमन होने पर उनकी स्मृति में भेंट।

500/- श्री कंवलराज जी, किरणराज जी मेहता, जोधपुर, अपने सुपौत्र वेदान्त पुत्र श्री दीपक मीनल मेहता का जन्म दिनाँक 14 नवम्बर 2010 को होने की खुशी में भेंट।

500/- श्री शीतलचंद जी, श्रीमती स्वरूपकंवर जी सिंघवी, जोधपुर, अपने दोहिते श्री सौरभनाथ एवं सुंधाशु जी मोदी सुपुत्र श्री सतीशनाथ जी श्रीमती गुलाबकंवर जी मोदी के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमती कान्ता जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री प्रकाशचन्द जी मेहता, जोधपुर, अपने पौत्र श्री अभिषेक (पुत्र श्री अनिल-निर्मला) एवं सौरभ पुत्र (सुनील-आशा) के इंजीनियर बनने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री पवनकुमार जी, विनयकुमार जी नाहर, चुडावल-राजस्थान, हॉल निवासी चेन्नई, द्वारा भेंट।

500/- डॉ. चंदनबालाजी, सहआचार्य- विधि संकाय, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, अपने पिताजी श्री जौहरीमल जी संकलेचा के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में दिनाँक 30 नवम्बर, 2010 को सप्रेम भेंट।

500/- श्री मनोजकुमार रमेशचंद जी कोठारी, जलगाँव, रमेशचन्द जी सुपुत्र श्री अमरचन्द जी कोठारी जलगाँव के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में उनके पुत्र द्वारा भेंट।

500/- डॉ. प्रभावती जी चौधरी, जोधपुर, द्वारा सप्रेम भेंट।

500/- श्री देवेन्द्रनाथ जी, श्रीमती कमला जी मोदी, जोधपुर, अपनी सुपौत्री कुमारी लोरी पुत्री श्री लोकेन्द्रनाथ-रीतु जी मोदी के प्रथम जन्म दिवस पर भेंट।

500/- श्री नवनीत लाल जी पतीरा, कोटा, स्व. श्रीमती इन्दुमती जी धर्मपत्नी श्री नवनीतलाल जी पतीरा का स्वर्गवास होने पर पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री अजितकुमार जी अशोक कुमार जी बंब, टोंक हॉल जयपुर, श्रीमती चन्द्रादेवी धर्मपत्नी श्री गम्भीरमल जी बंब की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री विरदराज जी सुराणा, श्री निलेश जी सुराणा, जयपुर, अपनी सुपौत्री सुश्री निकिता सुराणा पुत्री श्री निलेश जी सुराणा के सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल हेतु साभार

9200/- श्री सुरेन्द्र जी, नरेन्द्र जी भंडारी, बेंगलौरु पूज्य पिताश्री स्व. श्री राजेन्द्र जी भण्डारी की पुण्यस्मृति में सप्रेम भेंट।

2500/- श्रीमती बिमला जी कांतीलाल जी चौधरी, धुलिया, अध्यात्म चेतना वर्ष में पीपाड़सिटी में विराजित पूज्य आचार्य भगवन्त श्री, उपाध्याय भगवन्त श्री प्रभृति सन्त-सतीवृन्द के पावन दर्शन लाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती शांतिबाई जी जैन, जयपुर, सप्रेम भेंट।

500/- श्री पारसमल जी हेमन्त कुमार जी ओस्तवाल, बैंगलोर सप्रेम भेंट।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार

8000/- श्रीमती लाड़कंवर जी कोठारी धर्मपत्नी स्व. श्री मांगीलाल जी कोठारी एवं सुपुत्र श्री

प्रकाशचन्द जी कोठारी, चेन्नई, पुस्तक प्रकाशन में सहयोग हेतु भेंट।

3100/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मेड़तासिटी, द्वारा सप्रेम भेंट।

1100/- श्री गौतमचन्द जी, ज्ञानचन्द जी बरड़िया, चेन्नई, आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

31000/- सौ. विजया राजेन्द्र जी मल्हारा, जलगाँव, आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी 'अध्यात्म-चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में भेंट।

10000/- श्री कल्याणमल जी प्रकाशमल जी चोरडिया ट्रस्ट, चेन्नई, के स्तम्भ सदस्यता हेतु।

5000/- श्री धनराज जी, महेन्द्रकुमार जी डोसी, जलगाँव, स्वाध्याय शिविर हेतु भेंट।

3100/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मेड़तासिटी, सहयोग हेतु भेंट।

2551/- श्री कुशलचन्द जी बाफना, लक्ष्मीनगर, जोधपुर, भोपालगढ़ में मुमक्षु भाई श्री सुभाष जी डागा के दीक्षा प्रसंग पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से सजोड़े शीलव्रत ग्रहण करने पर भेंट।

2100/- श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव, सप्रेम भेंट।

2100/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, विकरोली, मुम्बई, पर्युषण सहयोग हेतु भेंट।

2100/- श्री रमेशकुमार जी, विशाल कुमार जी लुणिया, पल्लीपट, चेन्नई, सहयोग हेतु भेंट।

1100/- श्री जैन सभा संघ, बलरामपुर, पर्युषण पर्व सहयोग हेतु भेंट।

1000/- श्री प्रकाशचन्द जी, सुभाषचन्द जी, अशोककुमार जी, अभयकुमार जी हुण्डीवाल, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल का संथारापूर्वक स्वर्गगमन होने की पुण्य स्मृति में भेंट।

1000/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बागली, जिला-देवास (म.प्र.), पर्युषण पर्व सहयोग हेतु भेंट।

1000/- श्री दौलतमल जी, दीपक जी चोरडिया, चेन्नई, श्री गौतममुनि जी म.सा. के द्वारा पीपाड़ शहर से 2001 में शुरु की गई तपस्या की लड़ी में इस वर्ष 15 की पूर्ति एवं दिवाली पर आचार्य प्रवर के पाली चातुर्मास में दर्शन वंदन का लाभ लेने पर भेंट।

501/- श्री दौलतचन्द जी, योगेन्द्र कुमार जी जैन, मानसरोवर-जयपुर, अपने सुपुत्र चि. सचिन का शुभविवाह सौ. गरिमा सुपुत्री श्री सोमप्रकाश जी जैन (आवासन-मंडल), सवाईमाधोपुर के संग दिनांक 02/12/10 को सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री दशरथमल, दौलतमल, धनपतमल, गौतमचंद एवं रंगरूपमल जी चोरडिया, चेन्नई, स्व. श्री कल्याणमल जी चोरडिया के पूरे परिवार का सर्वप्रथम स्नेह मिलन दिनाँक 26 सितम्बर, 2010 को मद्रास में आनन्दपूर्वक सम्पन्न होने पर भेंट।

500/- श्री राजेन्द्रजी चौधरी,जोधपुर,अपने सुपुत्र श्री अजय कुमार का शुभविवाह 13 जनवरी, 2011 को सौ.कां.कविता सुपुत्री श्री हरकचन्दजी जैन के साथ सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

स्वाध्याय संघ शाखा-बजरिया को साभार प्राप्त

751/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, श्योपुर (म.प्र.) पर्युषण पर्व सहयोग हेतु भेंट।

501/- श्री जम्बूकुमार जी प्रवीणकुमार जी जैन, आलनपुर-सवाईमाधोपुर, अपने सुपुत्र श्री

नवीन कुमार जैन का शुभ विवाह सानन्द सम्पन्न होन के उपलक्ष्य में सादर भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

1,32,000/-	श्री केवलमल जी लोढ़ा, जयपुर (राज.)
1,00,000/-	श्री सुराणा एण्ड सुराणा इण्टरनेशनल एटोर्निज, चेन्नई (तमिलनाडु)
48,000/-	श्री सुरेन्द्र जी मेहता, श्रीमती सान्या जी मेहता, मुम्बई (महा.)
12,000/-	श्री दिनेश जी सुराणा
12,000/-	श्री नितीन प्रकाश जी कांकरिया (हुण्डीवाल), जलगाँव (महा.)
12,000/-	श्रीमती निर्मला बाई जी श्री घेवरचन्द जी पारख, नाशिक (महा.)
12,000/-	श्री करणराज जी मेहा, जोधपुर (राज.)
12,000/-	श्री शान्तिलाल जी छाजेड़, नीमच (मध्यप्रदेश)
12,000/-	श्री पारसमल जी हेमन्तकुमार जी, खिंवराज जी ओस्तवाल, बैंगलोर
12,000/-	श्री शान्तिलाल जी जे. मेहता, मुम्बई (महा.)
12,000/-	श्रीमती मधुबाला जी जैन (राजस्थान)
12,000/-	श्रीमती जया जी मुणोत, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
12,000/-	श्रीमती लाड़कंवरजी कोठारी धर्मपत्नी स्व. श्री मांगीलालजी कोठारी, जोधपुर (राज.)
12,000/-	श्रीमती चन्द्रलेखा जी मेहता, भोपाल (मध्यप्रदेश), स्व. श्री नरेन्द्र कुमार जी मेहता की याद में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़,* 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

माघ शुक्ला 14	गुरुवार	17.02.2011	चतुर्दशी, पक्खी
फाल्गुन कृष्णा 8	शुक्रवार	25.02.2011	अष्टमी
फाल्गुन कृष्णा 14	गुरुवार	03.03.2011	चतुर्दशी
फाल्गुन कृष्णा 30	शुक्रवार	04.03.2011	पक्खी
फाल्गुन शुक्ला 8	रविवार	13.03.2011	अष्टमी
फाल्गुन शुक्ला 14	शुक्रवार	18.03.2011	चतुर्दशी
फाल्गुन शुक्ला 15	शनिवार	19.03.2011	चातुर्मासिक पक्खी

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

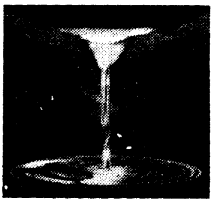
Electric Arc Furnace

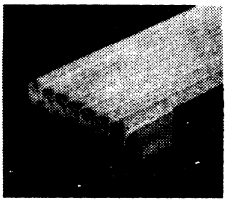
Billets

Rolling Mill

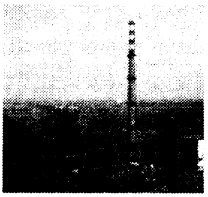
Captive Power Plant

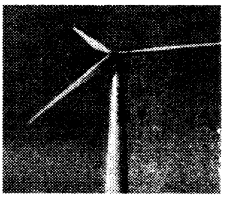
Windmill

With best wishes from

ISO 9001:2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

❖❖❖

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

N0. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेघावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

ज्ञान का दीया जलाईये
सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बंधुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रू. 12000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक / डापट (Donation to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए **निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें –**

1.	अशोक कवाड़, चैन्नई	(9381041097)
2.	सुमतिचन्द मेहता पीपाड़	(9414462729)
3.	महेन्द्र सुराणा, जोधपुर	(9414921164)
4.	बुधमल बोहरा,चैन्नई	(9444235065)
5.	राजकुमार गोलेच्छा,पाली	(9829020742)
6.	मनोज कांकरिया, जोधपुर	(9414563597)
7.	कुशलचन्द जैन, सवाई माधौपुर	(9460441570)
8.	प्रवीण कर्णावट, मुम्बई	(9821055932)
9.	जितेन्द्र डागा, जयपुर	(9829011589)
10.	महेन्द्र बाफना,जलगांव	(9422773411)
11	हरीश कवाड़,चैन्नई	(9500114455)

सहयोग राशि भेजने,योजना संबंधी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें–

B.Budhmal Bohra
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 02 ★ मूल्य : 10 रु.
10 फरवरी, 2011 ★ माघ, 2067

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU
GARDENS

Offering 2 BHK and E3 Homes apartment with state-of-the-art amenities include a clubhouse with a well equipped gymnasium, swimming pool, squash and badminton court, landscaped gardens, a children's play area and multi-level car parking.

Other Projects:
• Kalpataru Aura - Ghatkopar (W) • Kalpataru Towers, Kandivali (E)
• Kalpataru Riverside, Panvel • Kalpataru Hills, Thane (E) • Srishti, Mira Road

KALPA-TARU®

Site: Kalpataru Gardens, Off Ashok Chakravarty Road, Near Jain Temple, Kandivali (East), Mumbai - 400 101. **Tel.: 022-2887 2914**
H.O.: Kalpataru Limited, 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055. **Tel.: 022-3064 3065 / 3064 5000** or Fax: 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com or visit www.kalpataru.com

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।